|| श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराय नमः ||

चतुर्विंशति
निर्वाण भक्ति
स्तवन

:: आशीर्वाद एवं प्रेरणा ::

अध्यात्म योगी, ८४ लाख मंत्र लेखन कर्ता

परमपूज्य आचार्य श्री १०८ वासुपूज्य सागरजी महाराज

:: लेखिका ::

परम पूज्य आर्यिका श्री १०५ श्रेयमती माताजी

:: निमित्त ::

बाल ब्रह्मचारिणी नेहल बहन

:: कवर कम्पोजिंग ::

बाल ब्रह्मचारी सुगन्ध कुमार जैन

प्रथम संस्करण
1000 प्रतियाँ

:: प्राप्ति स्थान ::
आचार्य श्री १०८ वासुपूज्य सागर जी महाराज

:: मूल्य ::
स्वाध्याय

:: समय सहयोग ::
श्री मोहन लाल जैन (बाराबंकी)

:: प्रकाशक ::
दिगम्बर जैन समाज, रामपुर (उ.प्र.)

:: मुद्रक ::
बंसल प्रिन्टर्स, रामनाथ कालोनी, रामपुर, फोन : २३५१६०९

❖ निर्वाण भक्ति ❖

विषय सूची	पृष्ठ संख्या

१. श्री भगवान आदिनाथ जी की भक्ति १
आदिनाथ जी की पूजा वंदना

२. श्री भगवान अजितनाथ जी की भक्ति १८
अजितनाथ की पूजा वंदना

३. श्री भगवान संभवनाथ जी की भक्ति ३४
संभवनाथ जी की पूजा वंदना

४. श्री भगवान अभिनंदननाथ की भक्ति ५०
अभिनंदननाथ जी की पूजा वंदना

५. श्री भगवान सुमतिनाथ जी की भक्ति ६७
सुमतिनाथ जी की पूजा वंदना

६. श्री भगवान पदम प्रभु जी की भक्ति ८३
पदम प्रभु जी की पूजा वंदना

७. श्री भगवान सुपार्श्वनाथ जी की भक्ति ९९
सुपार्श्वनाथ जी की पूजा वंदना

८. श्री भगवान चन्द्र प्रभु जी की भक्ति ११५
चन्द्र प्रभु जी की पूजा वंदना

९. श्री भगवान पुष्पदंत जी की भक्ति १३१
पुष्पदंत जी की पूजा वंदना

१०. श्री भगवान शीतलनाथ जी की भक्ति १४७
शीतलनाथ जी की पूजा वंदना

११. श्री भगवान श्रेयांसनाथ जी की भक्ति १६३
श्रेयांसनाथ जी की पूजा वंदना

१२. श्री भगवान वासुपूज्य जी की भक्ति १७९
वासुपूज्य जी की पूजा वंदना

१३. श्री भगवान विमलनाथ जी की भक्ति १९४
विमलनाथ जी की पूजा वंदना

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
१४. श्री भगवान अनंतनाथ जी की भक्ति अनंतनाथ जी की पूजा वंदना	२१०
१५. श्री भगवान धर्मनाथ जी की भक्ति धर्मनाथ जी की पूजा वंदना	२२५
१६. श्री भगवान शांतिनाथ जी की भक्ति शांतिनाथ जी की पूजा वंदना	२४०
१७. श्री भगवान कुन्थुनाथ जी की भक्ति कुन्थुनाथ जी की पूजा वंदना	२५६
१८. श्री भगवान अरहनाथ जी की भक्ति अरहनाथ जी की पूजा वंदना	२७२
१९. श्री भगवान मल्लिनाथ जी की भक्ति मल्लिनाथ जी की पूजा वंदना	२८७
२०. श्री भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी की भक्ति मुनिसुव्रतनाथ जी की पूजा वंदना	३०४
२१. श्री भगवान नमिनाथ जी की भक्ति नमिनाथ जी की पूजा वंदना	३१९
२२. श्री भगवान नेमिनाथ जी की भक्ति नेमिनाथ जी की पूजा वंदना	३३५
२३. श्री भगवान पार्श्वनाथ जी की भक्ति पार्श्वनाथ जी की पूजा वंदना	३५०
२४. श्री भगवान महावीर स्वामी जी की भक्ति महावीर स्वामी जी की पूजा वंदना	३६६
२५. निर्वाण काण्ड	३८४
२६. निर्वाण क्षेत्र पूजा	३८६
२७. चौबीस तीर्थंकरों का पूर्ण परिचय वर्णन एवं भरत चक्रवती के सोलह स्वप्न	३९२

❖ भागलपुर बिहार ❖

प्रिय मोक्षमार्गी सज्जनों सन् १९९८ की बात है कि जब भगवान श्री १००८ पार्श्वनाथ जी का निर्वाण कल्याणक दिन आया निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। फिर निर्वाण क्रिया करना है तो भगवान महावीर की पार्श्वनाथ के नाम पर त्यागीगण भक्ति पढ़ रहे थे तब बाल ब्र० नेहल जी भाग्या ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ जी का निर्वाण दिवस और भक्ति भगवान महावीर की यह सुनकर मन में खेद हुआ कि देखो काम किसी का और नाम किसी का तिथि पक्ष महिना वर्ष महावीर का और केवल नाम पार्श्वनाथ जी का ठीक कोई बात नहीं ब्र० नेहल जी भाग्या के सुझावानुसार दोपहर में स्वाध्याय के समय आर्यिका श्रेयमति जी से कहाकि आप आचार्य श्री पूज्यपाद जी कृत (अपरनाम देव नन्दि जी कृत) निर्वाण भक्ति के अनुसार शेष २३ तीर्थंकरों की निर्वाण भक्तियाँ तैयार कर लो तब उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर क्रमशः भागलपुर चार्तुमास में भक्तियाँ तैयार कर लीं और भण्डार में जमा रहीं फिर बहराइच में सुलभ बहन ने निःस्वार्थ भावों से अपने क्षयोपशमानुसार संस्कृत श्लोकों का संशोधन किया। अतः ये आशिर्वाद की पात्र हैं तथा हिन्दी अर्थ का मैंने संशोधन किया, फिर भी दृष्टि दोष से या असावधानी से भूल रह जाना सम्भव है अतः ज्ञानीजन सुधार कर पढ़ें तथा हमको शुद्धिपत्र भेजकर सम्बोधन करें। इस पुस्तक के कम्पोजिंग कार्यकर्ता जो युवा निष्कपट, निस्वार्थी हैं ऐसे मोहन जी जैन स्वतंत्र एवं अन्य सभी सहयोगीजन धर्म प्रेमी बन्धु भी मनसः पूर्ण आशिर्वाद के पात्र हैं तथा ये भी हमारे जैसे बनकर स्वपर कल्याण करें यही मंगलाशीर्वाद है।

अब यह पंचकल्याणक भक्ति पूजा और टोंक वंदना पुस्तक आप लोगों के सामने आने वाली है आप लोग इसका योग उपयोग यथावसर कार्य रूप में परिणत करें यही संदेश है। यही इसका मूल्य है।

आ० श्री १०८ विमलसागर जी के प्रथम शिष्य आ० श्री पार्श्वसागर जी, इनके प्रथम शिष्य

आ० वासुपूज्यसागर

आ० वासुपूज्य सागर "महाराज"

❖ असीम वात्सल्य ❖

पंच परमेष्ठि के चरणों में वंदन करते हुए अपनी भावनाओं को लिखने की कोशिश कर रही हूँ सर्व प्रथम तो भावनाओं की कोई सीमा नहीं होती जबकि शब्द सीमित होते हैं और इन्हीं सीमित शब्दों में आपको यह पंचकल्याणक भक्ति नामक पुस्तक के विषय में जानकारी देना चाहती हूँ जब आचार्य श्री ने मुझे इस कृति को लिखने के लिए कहा तो गुरूआज्ञा को मैंने स्वीकार कर लिया लेकिन जब मैंने लिखने के लिए कलम उठाई तो हाथों में कंपन शुरू हो गई मन कहता है क्या लिखूं कहां से शुरू करूं कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्योंकि लिखना भी ऐसे महापुरुषों के सम्बन्ध में है जो हमारी आंखों से ओझल रह कर भी प्रत्यक्ष हों। मन को दृढ़कर संकल्प किया कुछ भी हो गुरू आज्ञा है गुरू का आशीर्वाद है यह कार्य मुझे करना है जब इंसान संकल्प कर लेता है तो इसके लिए कठिन कार्य भी सुलभ हो जाता है संकल्प लेते ही लेखन कार्य की गति शुरू हुई, लेकिन फिर कलम रूक गई तो पहुंच गई मैं गुरू के पास पूछा आचार्य श्री मैंने कभी कोई कृति लिखी नहीं है अतः आप ही बताईये कैसे लिखूं। तब आचार्य श्री ने कहा कि आचार्य पूज्य पाद कृत महावीर निर्वाण को देखकर लिखो। मैंने कहा आचार्य श्री ने मुझे बहुत अच्छा मार्गदर्शन दिया भले ही वह भगवान महावीर की निर्वाण भक्ति है लेकिन उसी के सहारे से शेष तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति बन सकती है जैसे एक गुलाब को देखकर अन्य गुलाब पुष्पों का वर्णन कर सकते हैं वैसे ही भगवान महावीर की निर्वाण भक्ति एवं अन्य ग्रन्थों का सहारा लेकर गुरू के आशीष से शेष २३ तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति बनाने में सरलता मिली यह पंच कल्याणक भक्ति कठिन मालूम पड़ती थी और सरल भी। कठिन इसलिए लगती थी क्योंकि इसके श्लोक संस्कृत में थे और सरल इसलिए लगती थी

कि गुरू का आशीर्वाद था। कार्य पूर्ण हुआ उसके बाद संस्कृत श्लोक संशोधन होना था आचार्य श्री से मैंने कहा आचार्य श्री आपकी संस्कृत बहुत ही अच्छी है आपही संशोधन करें। आचार्य श्री ने कहा मैंने संशोधन कर दिया है लेकिन फिर भी किसी और से संशोधन करवाना होगा अपने से कोई नजर की चूक हो सकती है। अतः आचार्य श्री ने बहुत कोशिश की लेकिन भक्ति को देखकर संस्कृत टीचर भी भाग जाते, कहते ये कार्य हम नहीं कर सकते। ऐसे करते हुए करीब पाँच-छ वर्ष बीत गये। मैंने आचार्य श्री से कहा आचार्य श्री यह कार्य होना नहीं है न ये कृति छप सकती है अब हम इसे ऐसे छोड़ देंगे। आचार्य श्री ने आश्वासन दिया और कहा कि घबराओ नहीं धीरज का फल मीठा होता है कोई न कोई अवश्य मिलेगा। फिर आये बहराइच यहाँ पर सुलभ बहन हैं जिन्होंने संस्कृत से पी०एच०डी० की है उन्होंने अपने अथक परिश्रम से संशोधन का कार्य किया। संघस्थ बाल ब्र० सुगन्ध (सौरभ) एवं बाल ब्र० नेहल जी भाग्या ने अर्थ व्यवस्था में सहयोग दिया।

अतः अब यह कार्य २००६ में पूर्ण हुआ यह कृति आपके समक्ष लाने में समय काफी लग गया खैर कोई बात नहीं अच्छी वस्तु को प्रकाश में लाने के लिए समय का इन्तजार करना पड़ता है। अब इन्तजार की घड़ियां पूर्ण हो चुकी हैं अतः यह कृति आपके समक्ष है। यह कृति हमारे गुरूजनों एवं साधर्मी श्रावक श्राविकाओं के उपयोग की हो अतः आप इस कृति को पढ़ते हुए गल्तियां अवगत कराते हुए कर्मों की निर्जरा करें इन्हीं भावनाओं के साथ कलम को विराम देती हूँ।

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री वासुपूज्य सागर महाराज जी
की संघस्था

आ॰ श्रेयमती

आर्यिका १०५ श्रेयमती माता जी

❖ नयी ज्योति ❖

काम किसी का नाम किसी का, कभी न शोभा पाता है।
काम जिसी का नाम उसी का, भक्ति में रंग लाता है।।
निर्वाण हुआ चौबीसों का, पढ़ने में आता बस एक का।
श्रेयमती ने पंचकल्याणक लिखी, अब चौबीसों की।।

परम पूज्य आर्यिका श्री १०५ श्रेयमती माता जी ने अपने अथक परिश्रम से चौबीसों तीर्थंकरों की पंचकल्याणक स्तुति लिखी जो वास्तव में प्रशंसनीय है क्योंकि कहा है कि......

" कभी न किया काम किसी ने, माता वो कर दिखलायीं
वासुपूज्य का आशीष पा निर्वाण भक्ति लिख हर्षायीं"

अतः गुरूवर का आशीष पाकर आपकी लेखनी इसी प्रकार आध्यात्मिक ग्रन्थों को लिखती रहें।

पूज्य माता जी के चरणों में

शत् शत् नमन

संघस्थ

बा० ब्र० सुगन्ध कुमार जैन

बा०ब्र० सुगन्ध कुमार (सौरभ) जैन
बाराबंकी

❖ सहज संकेत ❖

पंचम काल में मोक्षमार्ग पर चलने के लिए और मोक्षमार्ग को प्राप्त करने के लिए एक मात्र प्रशस्त साधन है तो वह है भक्ति। बिना भक्ति के सारे स्वर और सारे लय बेजान है। एकान्त वादियों के यहाँ तो व्यक्ति विशेष की भक्ति की जाती है किन्तु स्याद्वादियों के यहाँ एक मात्र सम्यक् आप्त की ही भक्ति होती है और वे आप्त हैं वीतराग सर्वज्ञ और हितोपदेशी लक्षण से युक्त अपने २४ तीर्थंकर। वैसे तो भक्ति नित प्रतिदिन करनी चाहिए किन्तु विशेष दिन में विशेष भक्ति होती है जैसे कि निर्वाण दिन और उस दिन निर्वाण भक्ति करनी चाहिए। किन्तु सवाल यह है कि प्रत्येक तीर्थंकर के कल्याणक नाम आदि भिन्न-भिन्न हैं और निवार्ण भक्ति है सिर्फ महावीर स्वामी की। जिससे निर्वाण भक्ति पढ़ते समय मायाचारी जैसा प्रसंग उपस्थित होता है किसी तीर्थंकर का निर्वाण दिवस और निर्वाण भक्ति सिर्फ महावीर स्वामी की करो। जिससे दिल में कुछ चुभन सी महसूस होती थी कि हमें भी ऐसा छल क्यों करना पड़े ? यही प्रश्न आचार्य श्री से मैंने पूछा कि क्या धर्म के नाम पर भक्ति के नाम पर अपन लोग ढ़ोंग करते हैं ? जिसका निर्वाण दिवस है उसके लिए न पढ़कर सिर्फ महावीर स्वामी की ही भक्ति पढ़ते हैं तो आचार्य श्री ने समाधान किया कि जिस प्रकार आचार्य श्री कुन्दकुन्द के ८४ पाहुड में से प्रायः कर अधिक पाहुड लुप्त हो चुके हैं उसी प्रकार संभवतः ही २३ तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति भी इस भूमण्डल में गुम हो गयी हैं लेकिन इसमें निराश होने की भी आवश्यकता नहीं और न मन में खेद करनें की जरूरत है। पुरुषार्थ से सारे कार्य सफल हो सकते हैं और हो जाते हैं। उसी समय आचार्य श्री ने प०पू० १०५ आर्यिका श्री श्रेयमती

माता जी को प्रोत्साहित किया और कहा कि प०पू० आ. प्रवर श्री पूज्य पाद जी कृत महावीर स्वामी की निर्वाण भक्ति को आधार बनाकर अन्य २३ तीर्थंकर की निर्वाण भक्ति बनाओ। पूज्य माता श्री के अथक प्रयास से तथा पूज्य आचार्य श्री के प्रोत्साहन से संस्कृत में निर्वाण भक्ति बनाने का कठिन कार्य आसानी से सम्पन्न हुआ। उसे देखकर और पढ़कर मेरा मन मयूर नाच उठा भले ही संस्कृत के विषय में अंगूठा छाप हूँ लेकिन मन में इस बात का हर्ष हुआ कि अब झूठा दिखावा नहीं करना पड़ेगा। वैसे तो यदि सिर्फ निर्वाण भक्ति को ही छपवाते तो एक मात्र त्यागी व्रती गण को ही लाभदायी होती किन्तु आचार्य श्री के विशाल सागर दिल में विचार आया कि इसका लाभ गृहस्थगण श्रावकजन को भी मिल जाये इसलिए इसमें प्रत्येक निर्वाण भक्ति के साथ प्रत्येक तीर्थंकर की पूजा तथा टोंक पूजन का अर्घ दिया है। इसका विस्तृत लाभ अगर विद्वान वर्ग प्रतिष्ठाचार्य आदि भी लेना चाहेंगे तो उनके लिए अमूल्य निधी स्वरूप ही है। मेरी तो हार्दिक इच्छा यही है कि इस प्रकार की नई-नई कृतियां पूज्य माता जी द्वारा रचित हमें प्राप्त होती रहें जिससे हमारे मन में उठी हुई कमियों की आंधी धीरे धीरे शांत होती जाये।

-: अस्तु :-

अंत में मन वचन काय से से पूज्य आचार्य श्री एवं पूज्य माता श्री के चरणों में

शत् शत् नमन

प०पू० १०८ आचार्य श्री
वासुपूज्य सागर महाराज जी
की संघस्था
Bhagya Jain (Nehal Jain)
ब्र०भाग्या जैन (नेहल जैन)

वासुपूज्याय नमः

❋ श्री आदिनाथ निर्वाण भक्ति ❋

विबुधपति खगपति नरपति धन दोरगभूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परमगुरुम्।
भव्यजन तुष्टिजननैर्दुरवापैः आदि जिनं भक्त्या॥२॥

अन्वयार्थ - जो (हि) यथार्थ में (विबुधपति खगपति-नरपति-धनद- उरग-भूत- यक्षपति- महितम्) देवेंद्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमलं-निरुपम शिवम्) निर्मल हैं उपमा रहित हैं कल्याण स्वरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) जो तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं ऐसे (संप्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या) भक्ति से उन भगवान (आदिजिनं) आदिनाथ को नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पञ्चभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संतोष्ये) मैं उन आदिनाथ भगवान की स्तुति करूँगी ।

आषाढः द्वितीयायां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं, भुक्त्वा सर्वार्थाधीशः॥३॥
नाभिराय नृपतितनयो भारतवास्ये साकेत पुरनगरे।
देव्यां मरुजनन्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ - (सर्वार्थ-आधीशः) सर्वार्थसिद्धि विमान का स्वामी (विभुः) भगवान आदिनाथ का जीव (आषाढः द्वितीयायां)

आषाढ कृष्ण द्वितीया के दिन (शशिनि) जब चन्द्रमाँ (हस्तोत्तर-मध्यमाश्रिते) हस्तोत्तर नक्षत्र पर था तब (स्वर्ग सुखं भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारत वर्ष में (साकेतपुरनगरे) कौशल क्षेत्र के साकेतपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (मरुजनन्यां) माता मरुदेवी और (नाभिराय नृपति-तनयो) नाभिराज राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

सोलह स्वप्न - १. सफेद हाथी, २. सुंदर सफेद बैल, ३. सिंह, ४. हाथियों के द्वारा कलशाभिषेक को प्राप्त होती हुई लक्ष्मी को देखा, ५. दो मालाएं, ६. सूर्य विमान, ७. चंद्र विमान, ८. मीन युगल, ९. कनक कलश, १०. कमलयुक्त सरोवर ११. लहरों युक्त सागर, १२. सिंहासन, १३. देव विमान, १४. धरणेन्द्र विमान, १५. रत्नों की राशि, १६. निर्धूम अग्नि।

चैत्र पक्षाभिजिते शशांकयोगे दिने नवमी तिथ्याम्।
जज्ञेस्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
अभिजिताश्रिते शशांके चैत्र कृष्णे खलु नवम्यांदिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चकुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ - (चैत्रपक्षाभिजिते शशांकयोगे नवमीतिथ्याम्) चैत्रकृष्ण नवमी के दिन जब अभिजित नामक चंद्रयोग था (सोम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषुजज्ञे) शुभग्रह अपने अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभलग्ने) शुभ लग्न था। (शशांके अभिजिताश्रिते) चंद्रमा अभिजित नक्षत्र पर स्थित था (चैत्र कृष्णे) चैत्र कृष्ण (नवमी दिवसे) नवमी को आदिनाथ का

जन्म हुआ था और (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमयकलशों से उन आदिजिन का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले अनेक लक्ष पूर्वाऽनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् नीलाभिनिबोधितोत्वरितः॥७॥
नानाविध रूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितांमणि विभूषाम्।
सुदर्शनाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः॥८॥
चैत्र कृष्णनवम्यां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज ॥९॥

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशि स्वरूप वे आदिनाथ (कुमार काले) कुमार काल में (अनेक लक्षपूर्व) २० लाख पूर्व काल तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (नीलाभिनिबोधितः) अचानक नीलांजना की मृत्यु को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविधरूपचितां) नाना चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (सुदर्शनाख्य शिविकाम्-आरूह्य) सुदर्शननामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) अयोध्या नगर के बाहर निकल गये। (चैत्रकृष्ण नवम्यां हस्तोत्तर-मध्यमाश्रिते सोमे) चैत्र कृष्ण नवमी के दिन जब चंद्रमा हस्तनक्षत्र के मध्य में था तब उन्होंने (षष्ठेनत्वपराण्हे जिनः प्रवव्राज) छः मासके उपवास का नियम ले कर दोपहर में जैनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण

कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः सहस्र वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य भगवान आदि नाथ ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (सहस्र-वर्षाणि) एक हजार वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट- कर्वट-मटम्ब-घोषाकरान्) ग्राम, पुर, खेट, कर्वट, मटम्ब, घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

ग्राम - जो स्थान कंटीली बाडी से वेष्टित होता है, उसे ग्राम कहते हैं

खेट - जो स्थान नदी व पर्वतों से युक्त हो उसे खेट कहते हैं।
कर्वट - जो स्थान पर्वत से युक्त हो उसे कर्वट कहते हैं।
घोष - अहीरों की बस्ती को घोष कहते हैं।
आकर - सोना, चांदी, रत्न आदि की खानि को आकर कहते हैं (यहाँ उपलक्षण से द्रोण-पत्तन-संवाहन आदि का भी ग्रहण होता हैं)
पुर - चार गोपुरों से शोभा को प्राप्त तथा कोट से वेष्टित हो उसे पुर कहते हैं।
द्रोण - दो पर्वतों के बीच बसा नगर द्रोण कहलाता है।
पत्तन- समुद्र तट पर बसा नगर पत्तन कहलाता है।
संवाहन - पर्वत पर बसा नगर संवाहन कहलाता है।
मटंब - जो पाँच सौ ग्रामों से सम्बद्ध हो उसे मटम्ब कहते हैं।

पुरिमतालपुरोद्यानेन्यग्रोधे संश्रिते शिलापट्टे

पूर्वाण्हे अष्टेनस्थितस्य खलु पुरिमतालपुरे॥११॥

अन्वयार्थ - (पुरिमतालपुरोद्याने) पुरिमताल नाम के उद्यान

में (खलु पुरिमतालपुरे) पुरिमताल ग्राम के समीप (न्यग्रोधे) वटवृक्ष के नीचे (संश्रिते शिलापट्टे) स्थित शिलापट्ट पर (पूर्वाण्हे-अष्टेनस्थितस्य) प्रातः काल तीन दिन का उपवास लेकर विराजमान हुए।

फाल्गुन एकादश्यां हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ - (फाल्गुन एकादश्यां) फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन जब (हस्तोत्तर मध्यमाश्रितेचंद्रे) चंद्रमा हस्तोत्तर नक्षत्र पर स्थित था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक क्षेणी पर आरूढ उन आदिनाथ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ - वहाँ बारह योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभि) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चमर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं लक्षैक पूर्वाण्यथ जिनेंद्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेन्द्रः) भगवान आदिनाथ स्वामी ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्म का तथा (एकादशधाउत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप

श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (लक्षैकपूर्वाणि) एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व काल तक (व्यवहरत्) विशेष विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं कैलाशपर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्यसुसंघस्तत्राभूद् श्री वृषभप्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् (भगवान) श्री भगवान आदिनाथ (दिव्यरम्यं कैलाशपर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे कैलाश पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (वृषभ प्रभृति) वृषभसेन आदि गणधर को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुम खण्ड मंडिते रम्ये।
कैलाशगिरौ शिखरे पद्मासनेन स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनिः) वे केवलज्ञानी भगवान आदिनाथ (पद्मवन दीर्घिका-कुल-विविध-द्रुम-खंड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्ष समूह से शोभायमान (कैलाशगिरौ शिखरे) कैलाश पर्वत पर (पद्मासनेन स्थितः) पद्मासन से स्थित हो गये।

माघ कृष्ण चतुर्दश्यां उत्तराषाढे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा श्री आदिनाथ जी ने (माघ कृष्ण चतुर्दश्यां) माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन (उत्तराषाढे) उत्तराषाढ नक्षत्र के प्रातः काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम् अमरम्,

अक्षयम् सौख्यम्) जरामरण से रहित अक्षय, अविनाशी, शाश्वत सुख को (संप्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहय्थासु चागम्य।

देवतरु रक्तचंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वन भवने॥१९॥

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) आदि जिनेन्द्र को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इन्द्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु -रक्त- चंदन - कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु लाल चन्दन कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चन्दनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नी कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि, सुगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेन्द्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) वैमानिक देव स्वर्ग को ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तरदेव वनको तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति श्री आदीश चंद्रे।
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परमसुखं नृदेवलोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति ॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति श्री आदीश चंद्रे) श्री आदिनाथ से सम्बन्धित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो

(द्वयोःहि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देव लोक में (परमसुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी, शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाणभूमिरिह भारत वर्षजानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ - (इह) इस जम्बूद्वीप के (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारत देश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियाँ हैं। (संस्तोतुम्-उद्यतमतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया वचोभिः) शुद्ध मन से काय से वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः)

चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवंतों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ – (दमित अरिपक्षाः पण्डोःसुताः) शत्रुनाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम् अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संगरहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से (जितरिपुः सुर्वणभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलना नदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि

(प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धकूट-सिद्धवर कूट से (ऋषि-अद्रिके) सोनागिर से (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल व बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं-प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके,
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थनानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रस पृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इह जगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांता,

दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।२७।।

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन, और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्त भयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त महामुनिराज (मे) मेरे लिये (आशु) शीघ्र ही (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों।

-: क्षेपक श्लोक :-

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशराजाः।।१।।

अन्वयार्थ - (शान्ति कुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुब्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में तथा भगवान महावीर नाथ वंश में पैदा हुए हैं।

-: अंचलिका :-

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि अवसप्पिणीए तदिये समयस्य पच्छिमे भाए आउट्ठमासहीणे तदिये समयम्मि सेसकालम्मि केलासे पव्वए माह मासम्मि चउदसीए उत्तराषाढ णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो आदिजिणो सिद्धिंगदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण, दिव्वेणगंधेण, दिव्वेण अक्खेण,

दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेणदीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेणवासेण णिच्चकालं अंचंति, पूजंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति । अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन् ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधि कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूं। (इमम्मि अवसप्पिणीए तदिय समयस्य पच्छिमे भाए) इस अवसर्पिणी संबंधि तृतीय काल के पिछले भाग में अर्थात् अंतिम भाग में (आउट्ठमासहीणे वास तदियम्मि सेसकालम्मि) तीन वर्ष साढे आठमाह काल शेष रहने पर (केलासे पव्वए माहमासस्स चउदसीए दिवसे उत्तराषाढे णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो आदिजिणो सिद्धिं गदो) कैलाश पर्वत से माघ मास की चौदस के दिन उत्तराषाढ नक्षत्र के रहते हुए प्रातः काल में आदिनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए। (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउहिब्बहा देवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेणदीवेण, दिव्वेण, धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्यअक्षत, दिव्यपुष्प दिव्यनैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्य धूप, दिव्य फलों, के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं नमस्कार

करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण की पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि, णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्य अर्चा करती हूं पूजा करती हूं वंदना करती हूं नमस्कार करती हूं (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

आदिनाथ भगवान की पूजा

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन,
आदिनाथ स्वामी महराज।
सर्वार्थसिद्धि तैं आप पधारे,
मध्यलोक मांही जिनराज॥
इन्द्र देव सब मिलकर आये,
जन्म-महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिल कर के,
अपने कर पूजों प्रभु पांय॥

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले,श्रीजिनवरपद पूजन जाय।
जन्म-जरा-दुःख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पांय॥

श्री आदिनाथजी के चरण-कमल पर,बलि-बलि जाऊँ मनवचकाय ।
हो करुणानिधि भव-दुःख मेटो, यातै मैं पूजौं प्रभु पांय।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० स्वाहा।
मलयागिरि चंदन दाहनिकंदन, कंचन झारीमें भर ल्याय ।
श्रीजी के चरण चढ़ाओ भविजन,भवआतापतुरत मिटजाय।। श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।
शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय ।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन,अक्षयपदको तुरतउपाय।।श्री०।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
कमल केतकी बेल चमेली,श्री गुलाब के पुष्प मंगाय।
श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाणतुरत नसिजाय।।श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिन्नेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपा० स्वाहा।
नेवज लीना षट् रस भीना,श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, ल्याऊँ प्रभु के मंगल गाय।।श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।
जगमग-जगमग होत दशोंदिशि, ज्योति रही मन्दिर में छाय।
श्रीजी के सम्मुख करत आरती, मोहतिमिर नासै दुखदाय।।श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।
अगर कपूर सुगंध मनोहर, चन्दन तगर सुद्रव्य मिलाय।
श्रीजी के सम्मुख खेय धुपायन,कर्मजरे चहुँगति मिटि जाय।।श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ठकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।।७।
श्रीफल और बदाम सुपारी,केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्षफल पावन कारण, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पांय।।श्री०।।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।।८।।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत,पुष्प चरू ले मन हर्षाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर,नाचत ताल मृदङ बजाय।।श्री०।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति०।

पंचकल्याणक

सर्वार्थसिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पांय।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत वदी नौमी दिना, जन्म्या श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति कर्या, मैं पूजौं धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृणवत् ऋद्धि सब छोड़िके, तप धार्यो वन जाय।
नौमी चैत्र असेत की, जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आयपूजा करि, मैं पूजौं इह थान।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशी कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान ।
भवि जीवों को बोधि के, पहुँचे शिवपुर थान।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला

आदीश्वर महराज मैं विनती तुमसों करूँ ।
चारों गति के माँहि मैं दुःख पायो सो सुनो।।
अष्टकरम मैं एकलो, ये दुष्ट महादुःख देत हो ।
कबहूँ इतर निगोद में मोकूँ पटकत करत अचेत हो ।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।
प्रभु कबहुंक पटक्यों नरक में, जठै जीव महादुःख पाय हो।
नित उठि निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।
प्रभू नरकतणा दुःख अब कहूँ,जठे करै परस्पर घात हो;
कोइयक बांध्यो खंभसों, पापी दे मुद्गर की मार हो।
कोइयक काटे करोतसों, पापी अङ्गतणी दोय फाड़ हो।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।
प्रभु इहविधिदुःख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिर्यञ्च हो;
हिरणा बकरा बाछड़ा पशु दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में पापी काट-काट तन खाय हो।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।
प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, ज्यापे लादियो भार अपार हो।
नहिं चाल्यों जठै गिरपर्‍यो पापी दे सोटन की मार हो।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।
प्रभु कोइयक पुण्य संजोगसूं, मैं तो पायो स्वर्गनिवास हो।
देवांगना संग रमि रह्यो, कर-कर अति अनुराग हो।
कबहुँक नन्दन-वन विषैं प्रभु, कबहुँक वन-गृह मांहि हो।।म्हारी०

प्रभु इह विधि काल गमायकै, फिर माला गई मुरझाय हो;
देव तिथी सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करत तन खिर पड़्यो, फिर उपज्यों गर्भ में जाय हो।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।

प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूँ, जठै सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन-चलन नहिं कर सक्यो, जठै सघन कीच घनघोर हो।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।

माता खावै चरपरौ, फिर लागै तन सन्ताप हो।
प्रभु जो जननी तातो भखै, फिर उपजै तन सन्ताप हो ।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।

औंधे मुख झूल्यों रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो ।
कठिन-कठिन कर नीसर्‌यो, जैसे निसरैं जंत्री में तार हो ।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।

प्रभु निकसत ही धरत्यां पड़्यो, फिर लागी भूख अपार हो।
रोय-रोय बिलख्यो घणो, दुखवेदन को नहि पार हो।। म्हारी०।।
प्रभु दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूं तिहारे पांय हो।
सेवक अरज करै प्रभों ! मोकूँ भवोदधि पार उतार हो।।
म्हारी दीनतनी सुन विनती।।

दोहा - श्रीजी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हूं, कौन करे विस्तार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन ल्याय।
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चैशिवपुर जाय।।
इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपामि।

आदिनाथ भगवान की टोंक ।।दोहा।।

रिषभदेव जिन सिद्ध भए, गिरि कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर नमूं पद दोय।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि दश सहस्त्र मुनि कैलाश गिरेः मोक्षं गतः तान् चरणान् अहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्याय नमः

"श्री अजितनाथ निर्वाण भक्ति"

विबुधपति-खगपतिनरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुलसुख विमलनिरुपमशिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजन तुष्टिजननैर्दुरवापैः अजितजिनं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ - जो यथार्थ में (विबुधपति - खगपति-नरपति - धनद-उरग -भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल सुख रूप हैं (विमल-निरुपमशिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं जो मंगलरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ परम गुरु हैं (संप्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या) भक्ति से (अजितजिनं नत्वा) उन भगवान अजितनाथ को नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संतोष्ये) मैं उन

ज्येष्ठः मासामावस्या रोहिणी भा मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वावैजयंताधीशः॥३॥
जितरिपुराज्ञः तनयो भारतवास्ये खलु अयोध्यानगरे।
देव्यां विजयसेनायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ - (वैजयंत आधीशः) वैजयंत विमान का स्वामी (विभुः) भगवान अजितनाथ का जीव (ज्येष्ठ मासामावस्या) ज्येष्ठ वदी अमावस्या के दिन (शशिनि) चंद्रमा (रोहिणी भा मध्यमाश्रिते) रोहिणी नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्गसुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (खलु अयोध्यानगरे) कौशल क्षेत्र के अयोध्या नगर में (सु स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (विजयसेनायांजनन्यां) माता विजयसेना (देव्यां) देवी (जितरिपुः) और जितरिपु (राज्ञः तनयो) राजा का पुत्र हुआ

पौष शुक्ल रोहिण्या शशांकयोगेशुभ दिनेदशम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
रोहिण्याश्रिते शशिनिपौष ज्योत्सनेदशम्यां दिवसे।
पूर्वाण्हेरत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ - (पौष-शुक्ल-पक्ष-रोहिण्या शशांक योगे-दशम्यां दिने) पौष मास शुक्ल पक्ष दशमी के दिन जब रोहिणी नामक चंद्रयोग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (रोहिण्याश्रिते शशिनि) चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र पर स्थित था, तथा (पौष ज्योत्सने) पौष मास के शुक्ल पक्ष की शुभ बेला में अजितनाथ

का जन्म हुआ था (दशमी दिवसे) दशमी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से उन अजित जिन का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले अष्टादशबहु लक्षपूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् उल्कापातबोधितो त्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितांमणि विभूषाम्।
सुप्रभाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
पौषशुक्ला नवमी रोहिणी मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ – जो (अनंतगुणराशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप थे वे अजितनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (अष्टादश बहुलक्ष पूर्वाः) अठारह लाख वर्ष पूर्व काल तक (अमर-उपनीत-भोगान् भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (उल्कापात-अभिनिबोधितः) उल्कापात को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरुपचितां) नाना प्रकार के रुपों से युक्त (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँची विशाल (मणि विभूषाम्) मणियों से विभूषित, सुशोभित ऐसी (सुप्रभा शिविकाम् आरूह्य) सुप्रभा नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्कांतः) नगर से बाहर निकल गये। (पौष शुक्ल नवमी रोहिणी मध्यमाश्रिते सोमे) पौष माह की शुक्ल पक्ष की नवमी के शुभ दिन जब चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र पर स्थित था उन्होंने (षष्ठेन त्वपराण्हे जिनः प्रवव्राज) सायंकाल दो दिन के उपवास का नियम लेकर जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानै र्द्वादश वर्षाण्यमरपूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ – (अमरैः-पूज्यः) देवों से पूजित भगवान अजितनाथ (उग्रैः तपोविद्यानैः) उग्रतपों के विधान से (द्वादश वर्षाणि) बारह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटम्ब-घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्यमध्ये सप्तपर्ण संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनास्थितस्य खलु अयोध्याग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (अयोध्याग्रामे) अयोध्या नगर के पास (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वन के मध्य में (सप्तपर्ण संश्रिते शिलापट्टे) सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे स्थित शिलपट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेनास्थितस्य) अपराह्न काल में दो उपवास का नियम ग्रहण कर स्थित हो गये।

पौषसित एकादश्यां रोहिण्यांमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ – (पौषसित एकादश्यां) पौष शुक्ल एकादशी के दिन (रोहिण्यां मध्यमाश्रितेचंद्रे) जब चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन अजितनाथ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभि कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डलदिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ – वहाँ साढ़े ग्यारह योजन प्रमाण विशाल समवशरण में) छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य

ध्वनि (सिंहासन दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि अन्यानि च) उत्तम चँवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दसविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलुलक्ष पूर्वाप्यथ जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ - (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेन्द्रः) भगवान अजितनाथ (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (पूर्वांगद्वादशवर्षाण्यूनलक्ष) एक पूर्वांग बारह वर्ष कम एक लाख पूर्व काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद्-दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत् सिंहगण प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ - (अथ) धर्मोपदेश के समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) भगवान अजितनाथ (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में सुसंघः (सिंह गण प्रभृति) सिंहसेन स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

सम्मेदवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सिद्धवरकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थित स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनि) वे केवलज्ञानी अजितनाथ भगवान

(सम्मेदवन दीर्घिकाकुल विविध-द्रुम-खंड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (सिद्धवरकूटोद्याने) सिद्धवर कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग में स्थित हो गये।

चैत्रशुक्ल पंचम्यां रोहिणीऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा अजितनाथ (चैत्र शुक्ल पंचम्यां) चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन (रोहिणीऋक्षे) रोहिणी नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) संपूर्ण अघातिया कर्मों को क्षय करके (व्यजरम् अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) जन्म जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को मोक्ष को (संप्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रंज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदनकालागरु सुरभिगोशीर्षै।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गता दिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ- (अथ हि) पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) भगवान अजितनाथ को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरु-रक्त-चंदन-कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चदंनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि, सुगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेन्द्र देव के शरीर की

(अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) वैमानिकदेव स्वर्ग को ज्योतिषी द्रेव आकाश को, व्यन्तरदेव वनको तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये ।

इत्येवं भगवति श्री अजितजिनं चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि।
सोऽनन्तं परम सुखं नृदेवलोके,
भुक्त्वान्ते शिव पदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति श्री अजितजिनं चंद्रे) श्री अजितनाथ से संबंधित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्त शिवपदं) अविनाशी, शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है ।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम् ।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।२१।।

अन्वयार्थ - (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की, तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियाँ हैं (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-

क्रियया वचोभिः) शुद्ध मन से काय से और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूं।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में गृहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येमं) भगवंतों की निर्वाण भूमियाँ हैं उनकी आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिंमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,

स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्।।२५।।

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट के (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल व बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्)प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।२६।।

अन्वयार्थ - (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षो र्विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः)

आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं ।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥३२॥

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्तभयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों ।

क्षेपक श्लोकानि

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥५॥

अन्वयार्थ - (शान्ति कुंथुअर-कौरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं । (शेषा इक्ष्वाकु

वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं।

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिअवसप्पिणीएचउत्थ समयम्मि समयस्य पुव्वेभाये पण्णास लक्ख कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क पंचमीए पुव्वण्हे रोहिणीये णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो अजियणाहो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय- वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन् ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (इमम्मि अवसप्पिणीए चउत्थ समयस्स पुव्वेभाए) इस अवसर्पिणी काल के पूर्व भाग में (पण्णास लक्खकोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ५० लाख कोटी सागर काल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए चइत मासस्स सुक्क पंचमीए पुव्वण्हे रोहिणीये णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो अजियणाहो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत

से चैत्र मास शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन प्रातः काल रोहिणी नक्षत्र के रहते हुए श्री अजितनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति-चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्रप्ति हो।

श्री अजितनाथ पूजा

छंद

त्यागवैजयन्त सार सारधर्मके आधार, जन्मधार धीर नम्र सुष्टुकोशलापुरी।
अष्टदुष्टनष्टकार मातु वैजयाकुमार, आयु लक्षपूर्व दक्ष है बहत्तरैपुरी॥
ते जिनेश श्री महेश शत्रुके निकंदनेश, अत्र हेरियेसुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी।

आय तिष्ट इष्टदेव मैंकरोंपदाब्जसेव, परमशर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन आत्रावतरावतर संवोषट् आह्वानम्

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥१॥

अष्टक

छंद त्रिभंगी अनुप्रासक।

गंगाहृदपानी निर्मल आनी, सौरभसानी सीतानी ।
तसु धारत धारा तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी ॥
श्री अजित जिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं ।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अजित जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा॥

शुचि चंदन बावन ताप मिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो।
तुम भवतपभंजन हो शिवरंजन, पूजनरंजन मैं आयो।श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अजित जिनेन्द्रय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा॥

सितखंडविवर्जित निशिपति तर्जित, पुंज विधर्ज्जित तंदुलको।
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित, आनँदभजित दंदलको। श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा॥

मनमथमदमंथन धीरजग्रंथन, ग्रंथनिग्रंथन ग्रंथपति।
तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती॥श्री४॥

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा॥

आकुलकुलवारन थिरताकारण, छुधाविदारन चरु लायो ।
षटरसकर भीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुखपायो श्री०॥५

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा॥

दीपक मनिमाला जोतउजाला, भरि कनथाला हाथलिया।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी केवलधारी पूज किया।।श्री।।६

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।

अगरादिक चूरन परिमलपूरन खेवत क्रूरन कर्म जरै।
दशहूंदिश धावत हर्षबढ़ावत अलि गुणगावत नृत्यकरै।।श्री०।।७।।

ॐ ह्रीं अजितजिनेनद्राय अष्टकर्मदहनाथ धूपं नि० स्वाहा।।

बादाम नारंगी श्रीफल पुंगी और अभंगीसौं अरचौं।
सब विघनविनाशै सुखपरकाशै आतम भासै भौ विरचौं।।श्री०।।८

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।

जलफल सब सज्जे बाजत बज्जे गुनगनरज्जे मनमज्जे।
तुअपदजुगमज्जे सज्जन जज्जेते भवभज्जे निजकज्जे।।श्री०।९।।

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा

पंचकल्याणक

छन्द द्रु तमध्यकंर्क १६ मात्रा।

जेठ असेत अमावशि सोहै। गर्भदिना नँद सो मनमोहै।
इंद फनिंद जजे मनलाई। हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई।।१।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री अजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

माघसुदी दशमी दिन जाये। त्रिभुवन में अति हरष बढ़ाये।।
इन्दफनिंद जजैं तित आई। हम पद सेवत हैं हुलशाई।।२।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

माघसुदी दशमी तप धारा। भव तन भोग अनित्य विचारा।।
इन्द फनिंद जजैं तित आई। हम पद सेवत हैं सिरनाई।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री अजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो। त्रिभुवनभानु सु केवल जायो।।
इन्द फनिंद जजैं तित आई। हम पद पूजत प्रीति लगाई।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल एकादशी दिने ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

पंचमि चैतसुदी निरबाना। निजगुनराज लियो भगवाना।।
इन्द फनिंद जजैं तित आई। हम पद पूजत है गुनगाई।।५।।

ॐ ह्रीं चैतशुक्लपंचमीदिने निर्वाणमंगलप्राप्ताय श्री अजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

जयमाला

दोहा- अष्ट दुष्टको नष्ट करि इष्टमिष्ट निज पाय।
शिष्ट धर्म भाख्यों हमें पुष्ट करो जिनराय।।१।।

छन्द पद्धरी १६ मात्रा।

जय अजित देव तुअ गुन अपार, पै कहुँ कछुक लघु बुद्धि धार।।
दश जनमत-अतिशय बल अनन्त, शुभलच्छन मघुरवचन भनंत।।२।।
संहनन प्रथम मलरहित देह, तनसौरभ शोषित स्वेत जेह।।
वपु स्वेदबिना महरूप धार, समचतुर धरें संठान चार।।३।।
दस केवल गमन आकाशदेव, सुरभिच्छ रहै योजन सतेव।।
उपसर्गरहित जिनतन सु होय, तब जीव रहित बाधा सु जोय।। ४।।
मुख चारि सरवविद्याअधीश कवलाआहार वर्जित गरीश।।
छायाबिनु नख कच बढै नाहिं, उन्मेष टमक नहिं भ्रकुटि माहिं।। ५।।
सुरकृत दशचार करौं बखान, सब जीवमित्रता भावजान।।
कंटकविन दर्पणवत सुभूम, सब धान वृच्छ फल रहे झूम।।६।।

षटरितुके फूल फले निहार, दिशि निर्मल जिय आनन्दधार॥
जंह शीतल मंद सुगन्ध बाय, पदपंकजतल पंकज रचाय ॥७॥
मलरहित गगन सुरजय उचार, वरषा गन्धोदक होत सार॥
वर धर्मचक्र आगें चलाय, वसुमंगलजुत यह सुर रचाय॥ ८॥
सिंहासन छत्र चमर सुहात, भामंडल छवि बरनी न जात।
तरु उच्च अशोक रु सुमनवृष्टि धुनि दिव्य और दुन्दुभी मिष्ट॥९॥
दृग ज्ञान शर्म वीरज अनन्त, गुण छियालीस इम तुम लहन्त॥
इन आदि अनन्ते सुगुनधार, वरनत गनपति नहिं लहत पार॥१०॥
तब समवशरनमँह इन्द्र आय, पद पूजत वसुविधि दरब लाय॥ अति
भगति सहित नाटक रचाय, ताथेइ थेइ थेइ धुनि रही छाय॥११॥
जय नूपुर जननन जननाय, तननननन तननन तान गाय॥
धननन नन नन घण्टा घनाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय॥१२॥
दृम दृम दृम दृम दृम मुरज ध्वान, संसाग्रदि सरंगीसुर भरत तान॥
झट झट झट अटपट नटत नाट, इत्यादि रच्यो अद्‌भुत सुठाट॥१३॥
पुनि बन्दि इन्द थुति नुति करंत, तुम हो जगमें जयवन्त सन्त॥
फिर तुम बिहार करि धर्मवृष्टि, सब जोग निरोध्यो परम इष्ट॥१४
सम्मेदथकी लिय मुकति थान, जय सिद्धशिरोमन गुननिधान॥
वृन्दावन वन्दत बारबार। भवसागरते मोहि तार तार।१५॥

छन्द घत्तानन्द।

जय अजित कृपाला गुनमणिमाला, संजयशाला बोधपती।
वर सुजसउजाला हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती॥१६॥
ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द मदावलिप्तकपोल।

जो जन अजित जिनेश जजैं है, मनवचकाई।

ताकों होय आनन्द ज्ञान सम्पत्ति सुखदाई।।
पुत्र मित्र धन्यधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै।
सकल शत्रु छ्य जाय अनुक्रमसों शिव पावै।।१७।।

इत्याशीर्वादः।

।।दोहा।।

अजितनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि अर्बुदं अशीति कोटिः चतुपञ्चाशत् लक्ष मुनिः सिद्धवर कूटतः मोक्षं गतः तान् चरणान् योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्धं निर्वपामीति स्वाहा ।।२३।।

वासुपूज्याय नमः

श्री संभवनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति, धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम, शिवमचलमनामयंहि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः संभवजिनं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ – जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्)

तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं ऐसे (संप्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त उन (भक्त्या संभवजिनं) संभवनाथ भगवान को (नत्वा) नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) ऐसे गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं स्तुति करूँगी

फाल्गुनवदि अष्टम्यां मृगशीर्ष भा मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः॥३॥
जितारिराज तनयो भारतवास्ये श्रावस्तीनगरे।
देव्यां प्रियसुषेणायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ - (ग्रैवेयकाधीशः) ग्रैवेयक विमान का स्वामी (विभुः) भगवान संभवनाथ का जीव (फाल्गुनवदि अष्टम्यां) फाल्गुन कृष्ण अष्टमी के दिन (शशिनि) चंद्रमा के (मृगशीर्ष भा मध्यम्-आश्रिते) मृगशिरा नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (ग्रैवेयक-सुखं-भुक्त्वा) ग्रैवेयक के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (श्रावस्ती-नगरे) श्रावस्ती नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (देव्यां) देवी (सुषेणायां) सुषेणा और (जितारि नृपति-तनयः) जितारि नामक राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

मार्गशुक्ल ज्येष्ठायां शशांकयोग दिने पूर्णिमायाम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥५॥
ज्येष्ठाश्रिते शशांके मार्गज्योत्सने पूर्णिमा दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (मार्ग शुक्ल ज्येष्ठायां शशांकयोगे पूर्णिमा दिने) मार्ग शीर्ष पूर्णिमा के दिन जब ज्येष्ठा नामक चंद्रयोग था

(सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जझे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके ज्येष्ठाश्रिते) चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र पर था (मार्ग ज्योत्सने) अगहन् शुक्ल पक्ष पूर्णिमा की शुभ बेला में संभवनाथ का जन्म हुआ था (पूर्णिमा दिवसे) पूर्णिमा के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन संभवनाथ जिन का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशः बोधितोत्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सिद्धप्रभाख्याशिविकामारुह्यपुराद्विनिः क्रान्तः ॥८॥
मार्गशिर शुक्ल स्यान्तेज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ – जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशिस्वरूप वे संभवनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (पंचदश बहु लक्ष पूर्व) १५ लाख पूर्वकाल तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोग कर (मेघनाश अभिनिबोधितः) मेघनाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों में (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणिविभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (सिद्धप्रभाख्य शिविकाम्- आरूह्य) सिद्धार्थ नामकी पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) श्रावस्ती नगर से बाहर निकल गये (मार्गशिर-शुक्ल -स्यान्ते

ज्येष्ठ भा मध्यमाश्रिते सोमे) मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के शुभ दिन जब चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र पर था उन्होंने (अष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) तेला का उपवास ले अपराह्न में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः नाना वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य संभवनाथ जी ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (नाना वर्षाणि) चौदह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्यतीरे शाल्मलिद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु श्रावस्ती नगरे॥११॥

अन्वयार्थ - (सहेतुकवनस्यतीरे) सहेतुक वन के पास (खलु श्रावस्तीग्रामे) श्रावस्ती नामक ग्राम में (शाल्मलिद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शालमलि वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो दिन का उपवास ग्रहण कर विराजमान हो गये।

कार्तिककृष्ण चतुर्दश्यां ज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ -(कार्तिक कृष्ण-चतुर्दश्यां) कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन (ज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानं) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन संभवनाथ मुनिराज को केवल ज्ञान

उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ - वहाँ ११ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेंद्रः।।१४।।

अन्वयार्थ - (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान संभवनाथ स्वामी ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (खलु लक्ष पूर्वाणि) ४ पूर्वांग और १४ वर्ष कम एक लाख पूर्व (व्यवहरत्) काल तक विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद चारुदत्तप्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ - (अथ) धर्म सभा की समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) संभवनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (चारुदत्त प्रभृतिः) चारुदत्त स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका,

श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।

धवलकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान संभवनाथ (पद्मवनदीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) कमलवन के समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (धवल कूटोद्याने) सम्मेद शिखर के धवलकूट उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

चैत्रशुक्ल षष्ठ्याम् मृगशिरात्रृक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - (चैत्र शुक्ल षष्ठ्यां) चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन (मृगशिरात्रृक्षे) मृगशिर नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों को क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (संप्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।

देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपिगता दिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) संभवनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु,

लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) वे सभी देव यथास्थान वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषीदेव आकाश को, व्यंतर देव वन और भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति संभवजिनं चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति संभव चंद्रे) श्री संभवजिन (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ - (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पत्र (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्ध्या,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥

द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ – (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल और बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः)

उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ – (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्राकर (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ – (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्तभयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ – (शान्ति कुंथुअर-कौरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरुवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं । (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए असीदि लक्ख कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क छट्टीए रत्तीए जेट्ठणक्खत्ते पच्चूसे भयवदो संभवजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय- वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंचेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि–मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य में (असीदि लक्खकोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ८० लाख कोटी सागर काल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क छट्टीए रत्तीए जेट्ठे णक्खत्ते भयवदो संभवजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से चैत्र मास शुक्ल पक्ष की षष्टी के दिन रात्रि में ज्येष्ठा नक्षत्र के रहते हुए श्री संभवनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति-चउव्हिहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दिवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो,

कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्रप्ति हो।

श्रीसंभवनाथ पूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

जय संभव जिनचन्द सदा हरिगन चकोरनुत।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारिसुत।।
तजि ग्रीवक लिए जन्मनगर श्रावस्ती आई।
सो भवभंजनहेत भगतपर होहु सहाई।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर। संषौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

छन्द चौबोला तथा अनेक रागों में गाया जाता है।

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरी में धारा।
जनमजरामृतु नाशकरनकों, तुमपदतर ढारों धारा।।
संभवजिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निराबाध भविजन पावे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।।

तपतदाहकों कन्दन चंदन मलयागिरिको घसि लायो।
जगवंदन भौफंदनखंदन समरथ लखि शरनै आयौ।। सं०।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।

देवजीर सुखदाय कमलवासित, सित सुन्दर अनियारे।

पुंज धरों इन चरनन आगें, लहों अखयपदकों प्यारे॥सं०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।

कमल केतकी बेल चमेली, चंपा जूही सुमन वरा।

तासों पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबानविध्वंसकरा॥सं०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना।

तातें पदश्रीपतिको पूजत, क्षुधारोग ततकाल हना॥सं०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।

घटपटपरकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों।

केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों॥सं०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशाय दीपं नि० स्वाहा।।

अगर तगर कृष्नागर श्रीखंडादिक चूर हुतासनमें।

खेवत हों तुम चरनजलजढिग, कर्मछार जरि ह्वैछिनमें॥सं०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं।

लै फल प्राशुक पूजों तुमपद देहु अखयपद नाथ हमैं॥सं०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।

तुमको अरपों भाव भगतिधर, जै जै जै शिवरमनिपिया॥सं०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।।

पंच कल्याणक

छन्द हंसी मात्रा १५

मातागर्भविषै जिन आय, फागुनसित आठैं सुखदाय॥

सेयो सुरतिय छप्पन वृन्द, नानाविधि मैं जजौं जिनन्द॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसंभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

कार्तिक सित पूनम तिथि जान, तीनज्ञानजुत जनम प्रमाण।
धरि गिरिराज जजे सुरराज, तिन्हें जजों मैं निजहितकाज।।२।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीसंभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

मगसिर सित पून्यों तप धार। सकल संग तजि जिन अनगार।।
ध्यानादिक बल जीते कर्म। चर्चों चरन देहु शिवशर्म।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

कार्तिक कलि तिथि चौथ महान। घाति घात लिय केवलज्ञान।।
समवशरनमहँ तिष्ठे देव। तुरिय चिन्ह चर्चों वसुभेव।।४।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण चतुर्थी दिने ज्ञानकल्याणकमंगलप्राप्ताय श्रीसंभवजिनेन्द्राय अर्घं० नि० स्वाहा।।

चैतशुक्ल तिथि षष्ठी चोख। गिरसम्मेदतैं लीनों मोख।
चार शतक धनु अवगाहना। जजों तासपद थुतिकर घना।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल षष्ठीदिने निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

जयमाला

दोहा- श्रीसंभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज।
मैं वशभक्ति सु धीठ ह्वै, विनवों निजहित काज।।१।।

छन्द मोतियदाम

जिनेश महेश गुणेश गरिष्ट, सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट।।
धरे वृषचक्र करे अघ चूर, अतत्व छपातम मद्दर्न सूर।।२।।

सुतत्वप्रकाशन शासन शुद्ध, विवेक विराग वढ़ावन बुद्ध ॥
दयातरुतर्पनमेघ महान, कुनयगिरिगंजन वज्र समान ॥३॥
सुगर्भरु जन्ममहोत्सवमांहि, जगज्जन आनन्दकन्द लहाहिं ॥
सुपूरब साठहि लच्छ जु आय, कुमार चतुर्थम अंश रमाय ॥४॥
चवालिस लाख सुपूरब एव, निकंटक राज कियो जिनदेव ॥
तजे कछु कारन पाय सु राज, धरे व्रत संजम आतमकाज ॥५॥
सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान, धरे बनमें निज आतम ध्यान ॥
किया चवघातिय कर्म विनाश लयो तब केवलज्ञान प्रकाश ॥६॥
भई समवसृत ठाट अपार, खिरै धुनि झेलहिं श्रीगनधार ॥
मने षटद्रव्यतने विसतार, चहुँ अनुयोग अनेक प्रकार ॥७॥
कहें पुनि त्रेपन भावविशेष, उभै विधि हैं उपशम्य भेष ॥
सुसम्यकचारित भेष-स्वरूप भये इमिछायक नौ सुअनूप ॥८॥
दृगौ बुधि सम्यक चारितदान, सुलाभ रु भोगोपभोग प्रमाण ॥
सुबीरज संजुत ए नव जान, अठार छयोपशमं इम प्रमान ॥९॥
मति श्रुत अवधि उभैविधि जान, मनःपरजै चखु और प्रमाण ॥
अचक्खु तथाविधि दान रु लाभ, सुभोगुपभोग रु वीरजसाभ ॥१०॥
व्रताव्रत संजम और सुधार, धरे गुन सम्यक चारित भार ॥
भए बसु एक समापत येह, इकीश उदीक सुनो अब जेह ॥११॥
चहुँ गति चारि कषाय तिवेद, छहलेश्या और अज्ञानविभेद ।
असंजम भाव लखो इसमाहिं, असिद्धित और अतत्त कहाहिं ॥१२॥
भये इकबीस सुनो अब और सुभेदत्रियं पारिनामिक ठौर ॥
सुजीवित भव्यत और अभव्व, तरेपन एम भने जिन सव्व ॥१३॥
तिन्हों मँह केतक त्यागनजोग, कितेक गहेंतैं मिटैं भवरोग ॥
कहो इन आदि लहो फिर मोख, अनन्तगुनातम्मंडित चोख ॥१४॥

जजों तुमपाय जपौं गुनसार, प्रभू हमको भवसागर तार ॥
गही शरनागत दीनदयाल। विलम्ब करो मति हे गुनमाल ॥१५॥

घत्ता- जै जै भव भंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा।
वृन्दावनवंदत मन आनन्दित, दीजै आतमज्ञानवरा॥१६॥

ॐ ह्रीं संभवजिनेन्द्राय महार्घ नि० स्वाहा।।

छन्दअडिल्ल- जो बांचै यह पाठ सरस संभवतनों ।
सो पावैं धनधान्य सरस सम्पति घनों ॥
सकलपाप छै जाय सुजस जगमें बढ़ै ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़ै ॥१७।

इत्याशीर्वादः

धवल कूट

॥ दोहा ॥

सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट हे जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि नव कोटा कोटी द्वादश लक्ष द्वीचत्त्वारिंशत् सहस्र पंचाशत मुनिः धवल कूटात् मोक्षं गतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्र्यर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

वासुपूज्याय नमः

श्री अभिनंदन निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः अभिनंदनं भक्त्या॥२॥

अन्वयार्थ – जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं ऐसे (संप्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त उन (भक्त्या अभिनंदनं) अभिनन्दननाथ भगवान को (नत्वा) नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) ऐसे गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं स्तुति करूँगी

वैशाखसुसित षष्ठ्यां पुनर्वसु भा मध्यमाश्रितेशशिनि

आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा वैजयंताधीशः॥३॥

संवर राज्ञः तनयो भारतवास्ये कौशल अयोध्यानगरे।

देव्यां सिद्धार्थायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ – (वैजयंत-आधीशः) वैजयंत विमान का स्वामी (विभुः) भगवान अभिनंदन का जीव (वैशाख-सुसित-षष्ठ्यां) वैशाख शुक्ल पष्ठी के दिन (शशिनि) चंद्रमा के (पुनर्वसु-मध्यम्-आश्रिते) पुनर्वसु नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग-सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कौशल अयोध्या नगरे) कौशल क्षेत्र के अयोध्या नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (सिद्धार्थायां) सिद्धार्था (देव्यां) देवी और (संवर

राज्ञः-तनयः) संवरनामक राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

पौष शुक्ला पुनर्वसु आदित्ययोगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।५।।
पुनर्वस्वाश्रिते-रवि पौष ज्योत्सने द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (पौष-सित-पक्ष पुनर्वसु आदित्य योगे द्वादश्याम् दिने) पौष मास शुक्ल पक्ष बारस के दिन जब पुनर्वसु नक्षत्र के साथ आदित्य योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके पुनर्वस्वाश्रिते) चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र पर था (पौष ज्योत्सने) पौष मास के शुक्ल पक्ष द्वादशी की शुभ बेला में अभिनंदन का जन्म हुआ था (द्वादशी दिवसे) बारस के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेक चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन अभिनंदन जिन का अभिषेकं किया।

भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् नगरनाशः बोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
हस्तचित्राख्याशिविकामारूह्यपुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
पौष शुक्ल द्वादश्यां पुनर्वसु मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशिस्वरूप वे अभिनंदन (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (बहुलक्षपूर्वाणि) साढ़े बारह लाख पूर्वकाल तक (अमर-उपनीत)

(भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोग कर (नगरनाश अभिनिबोधितः) गंधर्वनगर के नाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों में (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणिविभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (हस्तचित्राख्य शिविकाम्- आरूह्य) हस्तचित्रा नामकी पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) अयोध्या नगर से बाहर निकल गये (पौष-शुक्ल -द्वादश्यां-पुनर्वसु मध्यमाश्रिते सोमे) पौष मास में शुक्ल पक्ष की बारस के दिन जब चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र पर था उन्होंने (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) दो उपवास का नियम ले अपराह्न में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः नाना वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य अभिनंदन जी ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (नाना वर्षाणि) अठारह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्यमध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु साकेत नगरे॥११॥

अन्वयार्थ - (सहेतुकवनस्यमध्ये) सहेतुक उद्यान के मध्य में (खलु साकेतनगरे) अयोध्या नगर के पास (शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शाल वृक्ष के नीचे स्थित्त शिलापट्ट पर

(अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो उपवास का नियम ग्रहण कर विराजमान हो गये।

पौषशुक्ल चतुर्दश्यां पुनर्वसु मध्यमाश्रिते चंद्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ -(पौषशुक्ल-चतुर्दश्यां) पौष शुक्ल चतुर्दशी के दिन (पुनर्वसु मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानं) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन अभिनंदन मुनिराज को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ - वहाँ साढ़े दस योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेंद्रः॥१४॥

अन्वयार्थ - केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान अभिनंदन स्वामी ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (खलु लक्ष पूर्वाणि) ८ पूर्वांग १८ वर्ष कम एक लाख पूर्व

(व्यवहरत्) काल तक विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रनाभिप्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ - (अथ) धर्मोपदेश समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) अभिनंदननाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (वज्रनाभि प्रभृतिः) वज्रनाभि स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
आनंदकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान अभिनंदन (पद्मवनदीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (आनंदकूटोद्याने) सम्मेद शिखर के आनंदकूट उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

वैशाखशुक्ल षष्ठ्यां पुनर्वसुऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा (वैशाख शुक्ल षष्ठ्यां) वैशाख शुक्ल षष्ठी के दिन (पुनर्वसुऋक्षे) पुनर्वसु नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों को क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (संप्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहृयथासु चागम्य।

देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगता दिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) अभिनंदन भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप व उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) वे सभी देव यथास्थान स्वर्ग को, आकाश को, वन और भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति अभिनंदन चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति अभिनंदन चंद्रे) श्री अभिनंदन भगवान से संबंधित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में

(अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ - (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः

परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि

(विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल और बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ - (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्राकर (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥३२॥

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां)

तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्तभयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ – (शान्ति कुंथुअर-कोरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरुवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं। (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णवदि लक्ख कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख मासस्स सुक्क छट्टीए पुव्वण्हे पुण्णवसुणक्खत्ते पच्चूसे भयवदो अहिणंदणजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय- वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण,

दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंचेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्य आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य में (णवदि लक्खकोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९० लाख कोटी सागर काल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए वैसाख मासस्स सुक्क छट्टीए पुव्वण्हेपुण्णवसुणक्खत्ते भयवदो अहिणंदणजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से वैसाख मास शुक्ल पक्ष की षष्टी के दिन प्रातःकाल में पुनर्वसु नक्षत्र के रहते हुए श्री अभिनंदननाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति-चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण

पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्रप्ति हो।

श्री अभिनन्दनजिन पूजा

छन्द- अभिनन्दन आनन्दन कंद, सिद्धारथनन्दन।
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहिं आवत बन्दन।।
नगर अयोध्या जनम इन्द, नागिंद जु ध्यावैं।
तिन्हें जजनके हेतु थापि, हम मंगल गावैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् सन्निधिकरणम् इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं।

अष्टक

छन्द- गीता, हरिगीता तथा रूपमाला।
पदमद्रहगत गंगचंग, अभंग धार सुधार है।
कनकमणिगनजड़ित झारी, द्वार धार निकार है।।
कलुषतापनिकंद श्रीअभिनन्द, अनुपम चन्द है।
पदवंद वृन्द जजे प्रभू, भवदंदफंद निकंद है।।१।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।।

शीतचन्दन कदलिनन्दन, सुजलसंग घसायकैं।
होय सुगंध दशोंदिशामें, भ्रमैं मधुकर आयकैं।।क०।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।

हीरहिमशशिफेन मुक्ता, सरिस तंदुल सेत हैं।
तासको ढिग पुञ्ज धारों, अक्षयपदके हेत हैं।।क०।।३।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।

समरसुभटनिघटन कारन, सुमन सुमनसमान हैं।
सुरभितैं जापैं करै झंकार, मधुकर आन हैं।।क०।।४।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।

सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी।
छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरचेयजी।।क०।।५।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।

अततममदन किरनवर, बोधभानुविकाश है।
तुम चरनढिग दीपक धरों, मोहि होहु स्वपर प्रकाश है।।क०।।६।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगिनि जराय है।
सब करमकाष्ठ सुकाष्ठमैं मिस, धूमधूम उड़ाय है।।क०।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।

आम निंबु सदा फलादिक, पक्व पावन आनजी।
मोक्षफलके हेतु पूजों, जोरिकै जुगपान जी।।क०।।८।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही।।क०।।९।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

छन्द हरिपद

शुकलछट्ट वैशाखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव।
सिद्धारथमाताके उरमें करै सची शुचि सेव।।
रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेक प्रकार।
ऐसे गुननिधिको मैं पूजौं, ध्यावों बारम्बार।।१।।

ॐ ह्रीं श्री वैशाखशुक्ल षष्ठी दिने गर्भमंगल प्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोक हितकार।
अभिनन्दन आनन्दकंद तुम, लीन्हों जगअवतार।।
एक महूरत नरकमांहि हू, पायों सब जिय चैन।
कनकबरन कपि चिन्हधरनपद, जजों तुमैं दिनरैन ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

साढे छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग।
कछु कारन लखि माघ शुकल, द्वादशिको धार्‍यो जोग।।
षष्टम नियम समापत करि लिय, इंद्रदत्तघर छीर।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर।।३।।

ॐ ह्रीं श्री माघशुक्लद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।।

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरम दुखदाय।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय।।
समवसरन लहि बोधिधरम कह, भव्यजीव सुखकन्द।

मोकों भवसागरतैं तारों, जय जय जय अभिनन्द॥४॥

ॐ ह्रीं श्री पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा॥

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरसमेदतैं मोख।
मासकल सुखरास कहे, वैशाखशुकल छठचोख॥
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगत भाव उमगाय।
हम पूजत इत अरघ लेय जिमि, विघ्नसघन मिट जाय॥५॥

ॐ ह्रीं श्री वैशाखशुक्लपष्ठीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा॥

जयमाला

दोहा- तुङ्ग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम।
कनकवरन अवलौकिकैं, पुनि पुनि करूं प्रणाम॥१॥

छन्द लक्ष्मीधरा

सच्चिदानन्द सद्ज्ञान सद्दर्शनी, सत्यस्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी॥
सर्वआनन्दकंदा महादेवता, जास पादाब्ज सेवैं सबैं देवता॥
गर्भ और जन्मनि:कर्मकल्यानमें, सत्वको शर्म पूरे सवै थानमें॥
वंशइक्ष्वाकुमें आप ऐसे भये, ज्यों निशाशर्दमें इन्दु स्वेच्छे ठये॥३॥

॥ लक्ष्मीवती छन्द॥

होत वैराग लौकांतसुर बोधियो, फेरि शिविकासु चढ़ि गहन निज सोधियो॥
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो, समवसरनादि धनदेव तब निरमयो॥४॥
एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी, गोल साड़ेदशै जोजने रत्नकी॥
चारदिश पैड़िका बीस हज्जार है, रत्नके चूरका कोट निरधार है॥५॥
कोट चहुंओर चहुंद्वार तोरन खँचे, तास आगे चहुं मानथंभा रचे॥
मान मानी तजैं जास ढिग जायकैं, नम्रता धार सेवें तुम्हैं आयकैं॥६॥

।।छन्द लक्ष्मीधरा।।

बिंब सिंहासनोंपै जहां सोहहीं, इन्द्रनागेंद्र केते मनै मोहहीं।
वापिका वारिसों जत्र सोहै भरीं, जासमें न्हात ही पाप जावै टरी।।७।।
तास आगें भरी खातिका वारिसों, हंस सुआदि पंखी रमैं प्यारसों।।
पुष्पकी वाटिका बागवृक्षें जहां, फूल और श्रीफलें सर्वही है तहां।।८।।
कोट सौवर्णका तास आगें खड़ा, चारदर्वाज चौओर रत्नों जड़ा।।
चार उद्यान चारों दिशामें गना, है धुजापंक्ति और नाट्यशाला बना।।९।।
तासु आगे त्रितीकोट रूपामयी, तूप नौ जास चारों दिशामें ठयी।।
धाम सिद्धान्तधारीनके है जहां, औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहां।।१०।।
तास आगें रची गन्धकूटी महा, तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा।।
एकपैं तौ निधैं ही धरी ख्यात हैं, भव्यप्रानी तहां लौं सबैं जात हैं।।११।।
दूसरी पीठपै चक्रधारी गमै, तीसरे प्रातिहारज लशै भागमें।।
तासपैं वेदिका चार थंभानकी, है बनी सर्वकल्यानके खानकी।।१२।।
तासुपै हैं सुसिंघासनं भासनं जासुपैं पद्य प्राफुल्ल है आसनं।।
तासुपै अन्तरीक्षं विराजै सही, तीनछत्रे फिरें शीसरत्ने यही।।१३।।
वृक्ष शोकापहारी अशोकं लसै, दुन्दुभी नाद और पुष्प खंते खसै।।
देहकी ज्योतिसे मण्डलाकार है, सात सौ भव्य तामें लखै सार है।।१४।।
दिव्यवानी खिरै सर्वशंका हरै, श्रीगनाधीश झेलैं सुशक्ती धरै।।
धर्मचक्री तुही कर्मचक्री हने, सर्वशक्री नमें मौदधारे घने।।१५।।
भव्यकौ बोधि सम्मेदतैं शिव गये, तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तीमये।।
हे कृपासिंधु मोपै कृपा धारिये, घोरसंसारसों शीघ्र मो तारिये।।१६।।
छन्द - जय जय अभिनन्दा आनंदकंदा, भवसमुद्रवर पोत इवा।
भ्रमतमशतखंडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जगरैनदिवा।।१७।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द कवित्त

श्रीअभिनन्दन पापनिकन्दन तिनपद जो भवि जजै सुधार।
ताके पुन्य भानु वर उग्गे दुरिततिमिर फाटै दुखकार।।
पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह विकसै सुखद जगतहित प्यार।
कछुक कालमें सौ शिव पावै, पढ़ै सुने जिन जजै निहार।।१८।।

इत्याशीर्वादः।

आनन्द कूट ।। दोहा ।।

अभिनन्दन जिनराज का, आनन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोटा कोटी सप्तति कोटि सप्तति लक्ष द्वीचत्वारिंशत् सहस्र सप्तशत मुनिः आनन्दकूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानूअहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्धं निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

वासुपूज्याय नमः

श्री सुमतिनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति, धनदोरगभूतयक्षपति महितम्।
अतुलसुखविमलनिरूपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री सुमति जिनं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ – जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितमू) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलमू) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं)

अतुल्य सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं (संप्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (श्री सुमति जिनं) सुमतिनाथ भगवान को (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (नत्वा) नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन सुमतिनाथ भगवान की मैं स्तुति करूँगी।

श्रावण शुक्ल द्वितीयायां मघा ऋक्षे मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः।।३।।
मेघरथः नृपति तनयो भारतवास्ये विनीतानगरे।
देव्यां प्रियमंगलायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ - (ग्रैवेयक-आधीशः) अन्तिम ग्रैवेयक विमान का स्वामी (विभुः) भगवान सुमति नाथ का जीव (श्रावण शुक्ल द्वितीयायां) श्रावण शुक्ला द्वितीया के दिन (शशिनि) चंद्रमा (मघा ऋक्षे - मध्यमाश्रिते) मघा नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग-सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कौशल विनीता नगरे) कौशल क्षेत्र के विनीतापुर नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियमंगलायां) प्रिय मंगला (देव्यां) देवी और (मेघरथः नृपति तनयो) मेघरथ राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

वैशाखमघा ऋक्षे पितृयोगे शुभ दिने दशम्यां।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।५।।
मघाश्रिते पितृयोगे वैशाख कृष्ण दशमी दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (वैशाख कृष्ण मघात्रक्षे पितृ योगे दशम्यां शुभ दिने) वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी के दिन जब मघा नक्षत्र तथा पितृयोग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके मघाश्रिते) चंद्रमा मघा नक्षत्र पर था (वैशाख कृष्णे) वैशाख कृष्ण दशमी की शुभ बेला में सुमतिनाथ का जन्म हुआ था (दशमी दिवसे) दशमी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन सुमतिनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमारकाले दशलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः॥७॥
नानाविधरुपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
अभयनामाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः॥८॥
वैशाख शुक्ल नवम्यां मघा भानि मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेनतु पूर्वाण्हे च भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशिस्वरूप वे सुमतिनाथ प्रभु (कुमार काले दश लक्ष पूर्वः) कुमार काल अवस्था में १० लाख पूर्व (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोग कर (जातिस्मरण बोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (अभयनामाख्या

शिविकां-आरूह्य) अभयकारि नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) विनीतापुर नगर से बाहर निकल गये (वैशाख-शुक्ल -नवम्यां मघा भानि मध्यमाश्रिते सोमे) वैशाख शुक्ल नवमी के दिन जब चंद्रमा मघा नक्षत्र पर था उन्होंने (अष्टेनतु पूर्वाण्हे) तेला का उपवास कर पूर्वाह्न काल में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः विंशति वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य सुमतिनाथ मुनिराज ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (विंशति वर्षाणि) बीस वर्ष तक (ग्राम- पुर- खेट- कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्यमध्ये प्रयंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु अयोध्या ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ - (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक अटवी के बीच में (खलु अयोध्या ग्रामे) अयोध्या नामक ग्राम के पास (प्रयंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) प्रियंगु वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो दिन का उपवास लेकर विराजमान हो गये।

चैत्रशुक्लैकादश्यां मघा भानि मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ -(चैत्र शुक्ल-एकदश्यां) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन (मघाभानि मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा मघा नक्षत्र

पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानं) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन सुमतिनाथ मुनिराज को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ - वहाँ दस योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं लक्षोनपूर्वाण्यथजिनेंद्रः।।१४।।

अन्वयार्थ - (अथ) केवल ज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान सुमतिनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (लक्षोन पूर्वाणि) १२ पूर्वांग २० वर्ष कम एक लाख पूर्व काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रनामरप्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ - (अथ) धर्म सभा के विघटन के पश्चात् (भगवान्) सुमतिनाथ प्रभु (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे

(तत्र) वहाँ साथ में (वज्रनामर प्रभृतिः) वज्रनामर स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।

अविचल कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ – (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान सुमतिनाथ (पद्मवनदीर्धिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (अविचल कूटोद्याने) अविचल कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

चैत्रशुक्लैकादश्यां मघानक्षत्रे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ – वे सकल परमात्मा सुमतिनाथ (चैत्र शुक्लैकादश्याम्) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन (मघा नक्षत्रे) मघा नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।

देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ – (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) सुमतिनाथ को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि

चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) सभी देव यथास्थान वैमानिक देव स्वर्ग को ज्योतिषीदेव, आकाश को, व्यंतर देव वन और भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति सुमतिजिन चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति सुमति जिन चंद्रे) श्री सुमतिनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्षजानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,

संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ – (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ – (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,

नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह से रहित बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः)

उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ - (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्राकर (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-(अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजा:।।१।।

अन्वयार्थ - (शान्ति कुंथुअर-कोरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथवंश में पैदा हुए हैं। (शेषा इक्ष्वाकु वंशजा:) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क एकादसीए मघा णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुमतिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ – (भंते) हे भगवन् ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य में (णव णवदिलक्ख कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी सागर काल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए चैत मासस्स सुक्क एकादसीय मघाणक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुमदिजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से चैत्र मास के शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन रात्रि में मघा नक्षत्र के रहते हुए श्री सुमतिनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति–चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण–धूवेण दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण–महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं)

मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

श्री सुमतिनाथ पूजा

संजमरतनविभूषन भूषित, दूषन वर्जित श्रीजिनचन्द।
सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयंत तजि मेरुनरिंद।।
मातुमंगला सकलमंगला, नगर विनीता जये अमंद।
सोप्रभुदयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदंद।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर। संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् सन्निधिकरणम् इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

अष्टक

पंचम उदधितनों सम उज्वल, जल लीनों वरगंध मिलाय।
कनककटोरीमाहिं धारिकरि, धारदेहु सुचि मनवचकाय।।
हरिहरवंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।।

मलयागर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर मिलाय।
भवतपहरन चरन पर वारों, जनमजरामृततताप पलाय।।हरि।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।

शशिसमउज्ज्वल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास।

सौ लै अखयसंपदाकारन, पुञ्ज धरों, तुमचरनन पास॥हरि०॥३

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा

कमलकेतुकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय

सौ लै समरशूलछ्यकारन, जजों चरनअति प्रीति लगाय॥हरि०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा॥

नव्य गव्य पकवान बनाऊँ, सुरस देखि दृगमन ललचाय।

सौ लै क्षुधारोग छयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय॥हरि०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा॥

रतन जड़ित अथवा घृतपूरित, वा करपूरमय जोति जगाय।

दीप धरों तुम चरनन आगैं जातें केवलज्ञान लहाय॥हरि०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० स्वाहा॥

अगर तगर कृष्णागरु चंदन, चूरि अगिनिमें देत जराय।

अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उड़ाय॥ह०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा॥

श्रीफल मातुलिंग वर दाड़िम, आम निंबु फल प्राशुक लाय।

मोक्ष महाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय॥ह०॥८

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु दीप धूप फल सकल मिलाय।

नाचि राचि शिरनाय समरचों,जयजय जय जय जिनराय॥ह०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा॥

पंचकल्याणक

संजयंत तजि गरभ पधारे। सावनसेत दुतिय सुखकारे॥

रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया। जजों चरन जय २ जिनराया॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि०॥१॥

चैत सुकलग्यारस कहँ जानों। जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानों।।
मानों धर्‍यो धरम अवतारा। जजों चरनजुग अष्टप्रकारा।।२।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।२।।
चैतसुकलग्यारस तिथि भाखा। ता दिन तपधरि निजरस चाखा।।
पारन पद्मसद्म पय कीनों। जजत चरन हम समता भीनों।।३।।
ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लैकादश्यां तपमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।३।।
सुकल चैतएकादशि हाने। घाति सकल जे जगुपति जाने।।
समवसरनमँह कहि वृषसारं। जजहुँ अनंतचतुष्टयधारा।।।४।।
ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।
चैत सुकल ग्यारस निरवानं। गिरिसमेदतैं त्रिभुवन मानं।।
गुन अनन्त निज निरमलधारी। जजों देव सुधिलेहु हमारी।।५।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।

जयमाला

सुमति तीनसौ छत्तीसो, सुमति भेद दरसाय।
सुमति देहु विनती करों, सुमति विलम्ब कराय।।१।।
दयाबेलि तहँ सुगुननिधि, भविक मोद गण चन्द।
सुमतिसतीपति सुमति कों, ध्यावों धरि आनन्द।।२।।
पंच परावरतन हरन, पंचसुमति सित देन।।
पंच लब्धिदातार के, गुन गाऊँ दिनरैन।।३।।

छन्द भुजंगप्रयात

पिता मेघराजा सबै सिद्ध काजा, जपें नाम जाको सबै दुःखभाजा।।
महासूर इक्ष्वाकुवंशी विराजे, गुणग्राम जाकौ सबै ठौर छाजै।।४।।
तिन्होंके महापुण्यसों आप जाये, तिहुँलोकमें जीव आनन्द पाये।।
सुनासीर ताही धरी मेरु धायो, क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथा यों।।५।।

बहुरि तातकों सोंपि संगीत कीनों नमें हाथ जोरी भलीभक्ति भीनों।।
बिताई दशै लाख ही पूर्व बाले, प्रजा उन्तीस ही पूर्व पालै।।६।।
कछु हेततैं भावना बार भाये, तहाँ ब्रह्मलौकान्त देव आये।।
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो, धरे पालकीमें सु उद्यान ल्यायो।।७।।
नमः सिद्ध कहि केशलोंचे सबै ही, धर्‌यो ध्यान शुद्धं जु घाती हने ही।।
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं, गणाधीश जु एकसौ सोल राजं।।८।।
खिरै शब्द तामें छहों द्रव्यधारे, गुनौपर्जउत्पादव्यय ध्रौव्य सारे।।
तथा कर्म आठों तनी थिति गाज, मिले जासुके नाशतें मोच्छराजं।।९।।
धरैं मोहिनी सत्तरं कोड़कोड़ी, सरित्पत्प्रमाणं थिति दीर्घ जोड़ी ।।
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अन्तरायं, धरें तीस कोड़ाकुड़ि सिन्धुकायं।।१०।।
तथा नाम गोतं कुड़ाकोड़ि बीसं, समुद्र प्रमाणं धरें सत्तईसं।।
सु तेंतीसअब्धि धरें आयु अब्धि, कहें सर्व कर्मों तनी वृद्धलब्धिं।।११।।
जघन्य प्रकारे धरे भेद ये ही, मुहूर्तं बसू नामगोतं गने ही।।
तथाज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं, सुअन्तर्मुहूर्तं धरें थित्ति गायं।।१२।।
तथा वेदिनी बारहें ही मुहूर्तं, धरैं थित्ति ऐसे भन्यो न्यायजुत्तं।।
इन्हें आदि तत्वार्थ भाख्यो अशेसा, लह्यो फेरि निर्वाण मांही प्रवेसा।।१३।।
अनन्तं महन्तं सुरंतं सुतंतं, अनन्दं अमन्दं अनन्तं अभन्तं।।
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं, अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं।।१४।।
अवर्णं सुवर्णं अमर्णं अकर्णं अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं।।
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं, अखण्डं सुमण्डं प्रचण्डं सदेकं।।१५।।
सुपर्मं सधर्मं सुशर्मं अकर्मं, अनन्तं गुनाराम जयवन्त धर्मं।।
नमैं दास वृन्दावनं शर्न आई, सबै दुःखतैं मोहि लीजे छुड़ाई।।१६।।
तुम सुगुन अनन्ता ध्यावत सन्ता, भ्रमजम भंजन मार्तंडा।
सतमजकरचंडा भवि कजमंडा, कुमतिकुबल भन गन हंडा।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

छन्द रोड़क

सुमतिचरन जो जजैं, भविक जन मनवचकाई।
तासु सकलदुखदंद फंद ततछिन छय जाई।।
पुत्रमित्र धनधान्य, शर्म अनुपम सो पावै।।
'वृन्दावन' निर्वाण, लहे जो निहचै ध्यावै।।१८।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अविचल कूट ।।दोहा ।।

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि एकः कोटाकोटी चतुरशीति कोटि द्वासप्तति लक्ष एकाशीति सहस्र सप्तशतैकाशीति मुनिः अविचल कूटतः मोक्षं गतः योगैः तान् चरणान् अहं पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

वासुपूज्याय नमः

श्री पद्मप्रभु निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपतिधनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्।
अतुलसुखविमलनिरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः पद्मप्रभुं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ - जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं)

अतुल्य सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं (संप्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (श्री पद्मप्रभुं) श्री पद्मप्रभु भगवान को (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (नत्वा) नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं उन पद्मप्रभु भगवान की स्तुति करूँगी।

माघमासासित षष्ठ्यां चित्राभानि मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा वैजयंताधीशः॥३॥
श्रीधरण नृपति तनयो भारतवास्ये कौशाम्बीनगरे।
देव्यां प्रियसुसीमायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ - (वैजयंत-आधीशः) वैजयंत विमान का स्वामी (विभुः) भगवान पद्मप्रभु का जीव (माघ कृष्ण षष्ठ्यां) माघ कृष्ण षष्ठी के दिन (शशिनि) चंद्रमा के (चित्राभानि-मध्यमाश्रिते) चित्रा नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (वैजयंत-सुखं-भुक्त्वा) वैजयंत विमान के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कौशाम्बीपुरे) कौशाम्बी नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियसुसीमायां) प्रिय सुसीमा (देव्यां) देवी और (धरण नृपति तनयः) धरण राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

कार्तिक वदि चित्रायां पितृयोगे शुभ दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने॥५॥
चित्राश्रिते शशांके कार्तिक कृष्णे त्रयोदशी दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (कार्तिक वदि चित्रायां पितृ योगे त्रयोदशी शुभ दिने) कार्तिक कृष्ण तेरस के दिन जब चित्रा नक्षत्र तथा पितृयोग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके चित्राश्रिते) चंद्रमा चित्रा नक्षत्र पर था उस समय पद्मप्रभु का जन्म हुआ (त्रयोदशी दिवसे) तेरस के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन पद्मप्रभु का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
निर्वृत्तिकाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
मार्ग कृष्ण दशम्यां चित्रा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेनत्वपराण्हे च भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशिस्वरूप वे पद्मप्रभु (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (बहु लक्ष पूर्णाणि) साढ़े सात लाख पूर्व (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोग कर (जातिस्मरण अभिनिबोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी

(निर्वृत्तिकाख्याशिविकाम् - आरूह्य) निर्वृत्ति नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) कोशाम्बी नगर से बाहर निकल गये (मार्ग कृष्ण दशम्यां चित्रा मध्यमाश्रिते सोमे) अगहन माह के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन जब चंद्रमा चित्रा नक्षत्र पर था उन्होंने (अष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिन प्रवव्राज) तेला का नियम लेकर दोपहर में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः खलु षण्मासान्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य पद्मप्रभु मुनिराज जी ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (षण्मासेन) छह माह तक (ग्राम- पुर- खेट- कर्वट- मटंब- घोषा- करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

मनोहरवनस्यमध्ये प्रियंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु कोशाम्बी ग्रामे ॥११॥

अन्वयार्थ - (मनोहर वनस्यमध्ये) मनोहर वन के बीच में (खलु कोशाम्बी ग्रामे) कोशाम्बी ग्राम के पास (प्रयंगुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) प्रियंगु वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो दिन का उपवास लेकर विराजमान हो गये।

चैत्रसित पूर्णिमायां चित्रा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ -(चैत्रसित पूर्णिमायां) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन

(चित्रा नक्षत्र मध्यमाश्रिते शशिनि) जब चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानं) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन पद्मप्रभु मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ - साढ़े नौ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं खलु लक्ष पूर्वाण्यथजिनेंद्रः॥१४॥

अन्वयार्थ - (अथ) केवल ज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान पद्मप्रभु ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (ऊनलक्षपूर्वाणि) १६ पूर्वांग ६ मास कम १ लाख पूर्वकाल तक विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रगणप्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ - (अथ) धर्मोपदेश के समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) पद्मप्रभु (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्)

विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (वज्रगण प्रभृतिः) वज्रगण स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
मोहन कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान (पद्मवन दीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खण्ड-मंडिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (मोहन कूटोद्याने) मोहन कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

फाल्गुनकृष्ण चतुर्थ्यां चित्राऽऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा (फाल्गुन कृष्ण चतुर्थ्यां) फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के दिन (चित्राऽऋक्षे) चित्रानक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) पद्मप्रभु को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि

चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर- माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने गता) सभी देव यथास्थान स्वर्ग को, आकाश को, वन और भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति पद्मप्रभु चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति पद्मप्रभु चंद्रे) श्री पद्मप्रभु से संबंधित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,

संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ – (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ – (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संग रहितो बलभद्रनामा,

नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये

साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रस पृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ – (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ – (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्तभयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख

से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हों।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजा:।।१।।

अन्वयार्थ – (शान्ति कुंथुअर–कोरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं। (शेषा इक्ष्वाकु वंशजा:) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडी णवदि सहस्स कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण किण्ह चउत्थीए पुव्वण्हे चित्ताए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो पम्मजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवणवासिय- वाणविंतर, जोयसिय क्प्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण–चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेणवासेण, णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करेंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो

सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य में (णव णवदिलक्ख कोडि णवदि सहस्स कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी ९० हजार कोटी व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए फागुण किण्ह चउत्थीए पुव्वण्हे चित्ताए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो पम्मजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से फागुण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन प्रातः काल चित्रा नक्षत्र के रहते हुए श्री पद्मप्रभु भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति -चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण- महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, वन्दना करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णंमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ,

वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

पदमप्रभु जिन पूजा

छन्द- पदमरागमनिवरन धरन, तनतुङ्ग अढाई।
शतक दंड अघखंड, सकल सुर सेवत आई।।
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वंदन।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। इतिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

अष्टक

पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार पूजों भावसों ।।टेक।।
गंगाजल अतिप्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय।।
मनवचतन त्रयधार देत ही जनम जरामृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार पूजों भावसों।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०।।

मलयागर कपूर चन्दन घँसि, केशर रंग मिलाय।
भवतपहरन चरनपर वारौं, मिथ्याताप मिटाय।।पू०।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति०।।

तंदुल उज्ज्वल गंधअनीजुत, कनक थार भर लाय।
पुंज धरों तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपद दाय।।पू०।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि०।।

पारिजात मंदार कलपतरुजनित, सुमन शुचि लाय।
समरशूल निरमूलकरनको, तुम पद पद्म चढ़ाय।।पू०।।४।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०।।

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्यसजे शुचि भाय।
छुधारोगनिर्वाशन कारन, जजों हरष उरलाय।।पू०।।५।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम।।पू०।।६।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।

कृष्णागर मलयागिर चंदन, चूर सुगंध बनाय।
अगिनिमाहिं जारों तुम आगें अष्टकरम जरिजाय।।पू०।।७।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।

सुरस वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार।।पू०।।८।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर आवागमन मिटाय।।पू०।।९।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।।

पंच कल्याणक

असित माघ सु छट्ठि बखानिये, गरभमंगल तादिन मानिये।
उरध ग्रीवक सौं चय राजजी, जजत इन्द्र जजैं हम आजजी।।१।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि०
स्वाहा।।

सुक्लकार्तिक तेरसकों जये, त्रिजगजीव सु आनन्दकों लये।।
नगर स्वर्ग समान कुसंबिका, जजतु हैं हरिसंजुत अंबिका।।२।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल त्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं०

सुकल तेरसकार्तिक भावनी, तप धरयौ वनषष्ठम पावनी।।
करत आतमध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबै हरो।।३।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल त्रयोदश्यां निःक्रमणकल्याणक प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय
अर्घं०

शुकलपूनमचैत सुहावनी, परमकेवल ता दिन पावनी।।
सुरसुरेश नरेश जजैं तहां, हम जजैं पदपंकजको इहां ।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि०
स्वाहा।।

असित फागुन चौथि सुजानियो, सकलकर्ममहारिपु हानियो।
गिरिसमेदथकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविषैंलये।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दिने मोक्षमंगल मण्डिताय श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय
अर्घं नि० स्वाहा।।

जयमाला

छन्द- जय पद्मजिनेशा शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा।
जयभवतमभंजन मुनिमनकंजन, रंजनको दिव साधेशा।।१।।

जय जय जिन भविजनहितकारी, जय जय जिन भवसागरतारी।
जय जय समवसरन धनधारी, जय जय वीतराग हितकारी ।।२।।
जय तुम साततत्व विधि भाख्यो, जय जय नव पदार्थ लखि आख्यो ।।
जय षट द्रव्य पंच युत काया, जय सब भेद सहित दरशाया ।।३।।

जय गुनथान जीव परमानो, जय पहले अनन्त जिन जानो ॥
जय दूजे सासादनमाही, बावन कोटि जीवथित आँहीं ॥४॥
जय तीजे मिश्रित गुणथाने, जीव दोबावन कोटि प्रमाने ॥
जय चौथे अविरति गुन जीवा , सप्तशतक हैं कोटि सदीवा ॥५॥
जय जय देशवरतमें शेषा, तेरहसों कोडी थिति वेशा ॥
जय प्रमत्त षट शून्य दोय वसु, नव तीन नव पांच जीव लसु ॥६॥
जय जय अपरमत्तदुइ करोरं, लच्छ छानवै सहस बहोरं ।
निन्यानवे एकशत तीना, ऐते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥७॥
जय जय अष्टममें दुह धारा, ग्यारहसो छियानवे सारा ॥
उपशममें दुइसो निन्यानों, छपकमाहिं तसु दूने जानों ॥८॥
जय इतने इतने हितकारी, नवें दशें जुग श्रेणी धारी ॥
जय ग्यारें उपशममगगामी, दुइसौं निन्यानों अध गामी ॥९॥
जय जय छीनमोह गुन थानों, तेईसों बानवे मुनि तुम जानो॥
जय जय तेरहमें अरहन्ता, जुग नभ पन बसु नव बसु तंता ॥१०॥
एते राजतु हैं चतुरानन, हम बंदे पद थुतिकरि आनन ॥
हैं अजोग गुनमें जे देवा, पनसो ठानों करों सुसेवा ॥११॥
तितित तिथि अ इ उ ऋ लृ भाषत, करि तिथि फिर शिवआनन्द चाखत।
ये उतकृष्ट सकलगुन थानी, तथा जघन मध्यम जे प्रानी ॥१२॥
तीनों लोकसदनके वासी, निज गुनपरजभेदमय राशी ॥
तथा और द्रव्यनके जेते, गुन परजाय भेद हैं तेते ॥१३॥
तीनों कालतने जु अनन्ता, सो तुम जानत जुगपत सन्ता ॥
सोई दिव्यवचनके द्वारे, दे उपदेश भविक उद्धारे ॥१४॥
फेरि अचलथलबासा कीनों, गुन अनन्त निज आनन्दभीनों ॥
चरमदेहतें किंचित् ऊनो, नर आकृति तित हैं नित गूनो ॥१५॥
जय जय सिद्धदेव हितकारी, बार बार यह अरज हमारी ॥

मोकों दुख सागरतें काढ़ो, वृन्दावन जाँचतु है ठाढ़ो ।।१६।।

घत्ता -जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परम सुमतिपद्माधारी।
जय जनहितकारी दयाविचारी, जय जय जिनवर अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घ नि० स्वाहा।।

छन्द रोड़क - जजत पद्मपदपद्मसद्म ताके सुपद्म अत।।
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनन्दकंद शत।।
लहत स्वर्गपदराज तहांतें चय इत आई।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई।।८।।
इत्या०।।

इतिश्रीपद्मप्रभजिन पूजा समाप्त।

मोहन कूट ।। दोहा ।।

पद्मप्रभु जिनराज का, मोहन कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि नवनवति कोटि सप्ताशीति लक्ष त्रिचावारिंशत् सहस्र सप्तशत सप्तपंचाशत् मुनिः मोहन कूटतः मोक्षं गतः योगैः तान् चरणान् अहं पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

वासुपूज्याय नमः

श्री सुपार्श्वनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोकपरमगुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री सुपार्श्वजिनं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ - जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-

धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (संप्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं ऐसे (भक्त्या सुपार्श्व जिनं नत्वा) भगवान सुपार्श्वनाथ को नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं उन सुपार्श्वनाथ भगवान की स्तुति करूँगी।

भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठ्यां विशाखा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा ग्रैवेयकाधीशः॥३॥
सुप्रतिष्ठ नृपति तनयो भारतवास्ये वाराणसीनगरे।
देव्यां प्रियपृथ्व्यां तु सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ - (ग्रैवेयक-आधीशः) मध्यम ग्रैवेयक विमान का स्वामी (विभुः) भगवान सुपार्श्वनाथ का जीव (भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठ्यां) भाद्र शुक्लपक्ष षष्ठी के दिन (शशिनि) चंद्रमा के (विशाखा भा मध्यमाश्रिते) विशाखा नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग-सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (काशी वाराणसी नगरे) काशी क्षेत्र के वाराणसी नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियपृथ्व्यां) प्रिय पृथ्वीसेना (देव्यां) देवी और (सुप्रतिष्ठ नृपति तनयः) सुप्रतिष्ठ राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

ज्येष्ठसित विशाखायां अनिलायोगे द्वादश्यां दिवसे।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।५।।
विशाखाश्रिते शशांके ज्येष्ठाज्योत्स्ने द्वादश्यां दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (ज्येष्ठसित विशाखायां-अनिलायोगे द्वादश्याम् दिवसे) ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष बारस के दिन विशाखा नामक नक्षत्र के साथ अनिला योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके विशाखाश्रिते) चंद्रमा विशाखा नक्षत्र पर था (ज्येष्ठ ज्योत्सने) ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष की शुभ बेला में सुपार्श्वनाथ का जन्म हुआ था (द्वादशी दिवसे) बारस के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन सुपार्श्वनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले पंचलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरणबोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सुमनोज्ञाख्या शिविकामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
ज्येष्ठसित द्वादश्यां विशाखा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशि स्वरूप वे सुपार्श्वनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (पंच लक्ष पूर्वाणि) ५ लाख पूर्व वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोग कर

(जातिस्मरण अभिनिबोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (सुमनोज्ञाख्य शिविकां-आरूह्य) सुमनोज्ञ नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) वाराणसी नगर के बाहर निकल गये (ज्येष्ठसित द्वादशी-विशाखाऋक्षे मघ्यमाश्रिते सोमे) ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की बारस के शुभ दिन जब चंद्रमा विशाखा नक्षत्र पर था उन्होंने (अष्टेनतु पूर्वाण्हे) तेला का उपवास कर पूर्वाह्न काल में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः च नव वर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य सुपार्श्वनाथ जी ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (नव-वर्षाणि) नव वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्यमध्ये शिरीषद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु वाराणसी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ - (सहेतुक वनस्यमघ्ये) सहेतुक वन के मध्य (वाराणसी ग्रामे) बनारस नामक ग्राम के पास (शिरीषद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शिरीष वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो दिन का

उपवास लेकर विराजमान हो गये।

फाल्गुन कृष्ण षष्ठ्यां विशाखा भा मध्यमाश्रिते चंद्रे ।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ -(फाल्गुन कृष्ण षष्ठ्यां) फाल्गुन कृष्ण षष्ठी के दिन (विशाखाभा मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवल ज्ञान) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन सुपार्श्वनाथ भगवान को (केवलज्ञानम्) केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ - वहाँ ९ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चमर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षोन पूर्वाण्यथजिनेंद्रः।।१४।।

अन्वयार्थ - (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान सुपार्श्वनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (ऊनलक्ष पूर्वाणि) २० पूर्वांग ९ वर्ष कम एक लाख पूर्व काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् वज्रनाभिप्रभृति॥१३॥

अन्वयार्थ - (अथ) धर्मोपदेश के समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) सुपार्श्वनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् रम्यम्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (वज्रनाभि प्रभृति) वज्रनाभि स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिकाकुल विविध द्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
प्रभास कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान सुपार्श्वनाथ (पद्मवनदीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (प्रभास कूटोद्याने) प्रभास कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

फाल्गुन कृष्णे सप्तम्यां अनुराधाऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा सुपार्श्वनाथ (फाल्गुन कृष्ण -सप्तम्यां) फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन (अनुराधाऋक्षे) अनुराधा नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।

देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवनेगता) सभी देव यथास्थान स्वर्ग को, आकाश को, वन और भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति सुपार्श्वजिन चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति सुपार्श्वजिन चंद्रे) श्री सुपार्श्वनाथ से संबंधित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं)

अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ - (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्धगति की प्राप्ति की

प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पथुसारयष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्मशत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) उत्कृष्ट सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल और बलाहक पर्वत

(विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ - (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्राकर (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति

भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे सप्तभयों को जीतने वाले तीर्थंकर जिन और शान्त अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हो।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ – (शान्ति कुंथुअर-कोरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं । (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि सागरोवम तिण्णि कोडि छत्तीस लक्ख पुव्व वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण मासस्स किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे अणुराहाए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुपासजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय- वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण,

दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन् ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदिलक्ख कोडी णव णवदि सहस्स कोडि सागरोवम तिण्णिकोडि छत्तीस लक्ख पुव्व वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी ९९ हजार कोटी सागर तीन कोटि ३६ लाख पूर्व वर्ष व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए फागुण काल मासस्स किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे अणुराहाए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सुपासजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से फागुण मास कृष्ण पक्ष सप्तमी के दिन प्रातः काल अनुराधा नक्षत्र के रहते हुए श्री सुपार्श्वनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइसिय कप्पवासियत्ति-चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप

दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचेंति पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

सुपार्श्वनाथजिन पूजा

छन्द हरिगीता तथा गीता

जय जय जिनिंद गनिंद इन्द, नरिंद गुन चिंतन करै।
तन हरिहर मनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरै।
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ठ शिष्ट पृथी प्रिया।
तिन नन्दके पद वन्द वृन्द, अमंद थापत जुतक्रिया।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् अह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

चाल द्यानतरायजीकृत सोलहकारण भाषाष्टककी।

तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय।।

दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।
उज्जवल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकरलाय।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।१।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।।
मलयागरचंदन घसि सार, लीनो भवतप भंजनहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।२।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।
देवजीर सुखदास अखंड । उज्ज्वल जलछालित सितमंड।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०।।३।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।
प्रासुक सुमन सुगंधित सार, गुंजत अलि मकरध्वजहार।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।४।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणाविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।
छुधाहरण नेवज वर लाय। हरों वेदनी तुम्हें चढ़ाय।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।५।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।
ज्वलित दीप भरकरि नवनीत । तुमढिग धारतु हों जगमीत।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।६।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।
दशविधि गन्ध हुताशनमाहिं । खेवत क्रूर करम जरि जाहिं।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।। तुम०।।७।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।
श्रीफल केला आदि अनूप । लै तुम अग्र धरो शिवभूप।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०८।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।

आठों दरबसाजि गुनगाय । नाचत राचत भगति बढ़ाय।।

दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०९।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी (वर्ण १२)

सुकल भादवछट्ठ सुजानिये, गरभमंगल तादिन मानिये।

करत सेव सची रचि मातकी, अरघ लेय जजों वसुभांत की ॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठिदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।।१।।

सुकल जेठदुवादशि जन्मये, सकल जीव सु आनन्द तन्मये ॥

त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी, हमजजैं पद मंगलसाजजी ।।२।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जनमके तिथि श्रीधरने धरी, तप समस्त प्रमादनकों हरी।।

नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों, हम जजैं इत श्रीपद चावसों।।३।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।

भ्रमरफाल्गुनछट्ठ सुहावनों, परमकेवलज्ञान लहावनों ।।

समवसर्नविषैं वृष भाखिओ, हम जजैं पद आनन्द चाखियो।।४।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठिदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ अर्घं०

असितफागुनसातय पावनों सकलकर्म कियो छय भावनो।।

गिरिसमेदथकी शिव जातु हैं, जजत ही सब विघ्न विलातु हैं।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तमीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ अर्घं०

जयमाला

दोहा - तुंग अंग धनु दोयसौ, शोभा सागरचन्द

मिथ्यातपहर सुगुनकर, जयसुपास सुखकंद।।१।।

जयति जिनराज शिवराज हितहेत हो, परामवैराग आनन्द भरि देत हो ।।

गर्भके पूर्व षट्मास धनदेवने, नगर निरमापि वाराणसी सेवमें ॥२॥
गगनसों रतनकी धार बहु वरष ही, कोड़ि त्रैअर्द्ध त्रैवार सब हरषहीं ॥
तातके सदन गुनवदन रचना रची, मातुकी सर्वविधि करत सेवा शची ॥३॥
भयोजब जन्म तब इन्द्रआसन चल्यो, होय चकित तब तुरित अवधितैंलखि भल्यो॥
सप्त पग जाय शिर नाय वंदन करी, चलन उमग्यो तबैमानि धनि धनि घरी ॥४॥
सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै, गन्धरव नृत्यकारी सबै साज लै।
गलितमदगण्ड ऐरावती साजियो, लच्छजोजन सु तन वदन सत राजियो॥५॥
वदन वसुदन्त प्रतिदन्त सरवर भरे, तासुमधि शतकपनबीस कमलिनि खरे।
कमलिनी मध्य पनवीस फूले कमल, कमलप्रति कमलमँह एकसौ आठदल ॥६॥
सर्वदल कोड़शतवीस परमान जू, तासुपर अपछरा नचहिं जुतमान जू॥
तततता तततता विततता ताथई, धृगतता धृगतता धृगतता मैं लई ॥७॥
धरत पग सनन नन सनन नन गगनमें, नूपुरेंझनन नन झनन नन पगन में॥
नाचत इत्यादि कई भाँतियोंमगन में, केई तित बजत बाजे मधुर पगनमें॥८॥
केई दृम दृम सुदृमदृम मृदंगनि धुनै, केइ झल्लरि झनन झंझनन झंझनै ॥
केई संसाग्रते सारंगि संसाग्र सुर, केइ बीनापटह बंसि बाजै मधुर ॥९॥
केइ तननन तनन तनन तानें पुरै शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरैं ॥
केईझुकि झुकि फिरैंचक्रसी भामनी, धृगगतां धृगगतां पर्म शोभा बनी ॥१०॥
केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु, धरत वैक्रियकपरभावसोंतन सुभगु।
केइ करताल करतालतलमेंधुनै, तत वितत धन सुषिरि जात बाजै मुनै॥११॥
इंद्र आदिक सकल साज संग धारिके, आय पुर तीन फेरी करी प्यार तें॥
सचिय तब जाय परसूतथल मोदमें, मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें॥१२॥
आनगिरवान नाथहिं दियो हाथमें, छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें॥
चढ़ेगजराज जिनराज गुन जापियो, जायगिरिराजपांडुकशिला थापियो॥१३॥
लेय पंचमउदधि उदक कर कर सुरनि, सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि॥

सहस अरु आठ शिर कलश ढरेजबै, अघघ घघ घघघघघ भभभ भभ भैतबै।।१४।।
धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है, भव्यजनहंसके हरस उद्योत है।।
भयो इमि न्हौन तब सकल गुन रंगमें, पोंछि श्रृंगार कीनों सची अंगमें।।१५।।
आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो, बालवय तरून लहि राजसुख भोगयो।।
भोग तज जोग गहि चार अरिकों हने, धारि केवल परम धरम दुइविधि भने।।१६।।
नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये, ज्ञानदृगशर्मवीरजअनन्ते लये।।
दीनजनकी करूण वानि सुन लीजिये, धरमके नन्दको पार अब कीजिये।।

घत्ता -जय करुनाधारी, शिवहितकारी तारनतरनजिहाजा हो।
सेवत नित वन्दे मनआनंदे, भवभयमेटनकाजा हो ।।१८।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

दोहा- श्रीपार्श्व पदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ।
अनुमोदै सौ चतुर नर, पावें आनन्द ठाठ ।।१९।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं छिपेत् !

प्रभास कूट

।। दोहा ।।

सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नव चत्वारिंशत् कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्वासप्तति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशत द्विचत्वारिंशत् प्रभास कूटतः मोक्षं गतः तान् चरणान् अहं पुनः पुनः वंदामि नमस्करोमि जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

वासुपूज्याय नमः

चन्द्रप्रभु निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्।
अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।

कल्याणै: संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापै: श्री चंद्रप्रभु जिनं भक्त्या॥२॥

अन्वयार्थ – जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं ऐसे (संप्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (श्री चंद्रप्रभु जिनं) चंद्रप्रभु भगवान को (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (नत्वा) नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि-जननै:) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापै:) अत्यंत दुर्लभ (पंचभि: कल्याणै:) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं उन चंद्रप्रभु भगवान की स्तुति करूँगी।

चैत्रकृष्ण पंचम्यां ज्येष्ठा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयात: स्वर्ग सुखं भुक्त्वा वैजयंताधीश:॥३॥
महासेन नृपति तनयो भारतवास्ये चंद्रपुरी नगरे।
देव्यां प्रियलक्ष्मणायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभु:॥४॥

अन्वयार्थ – (वैजयंताधीश:) वैजयंत विमान का स्वामी (विभु:) भगवान चंद्रप्रभु का जीव (चैत्र कृष्ण पंचम्यां) चैत्र कृष्ण पंचमी के दिन (शशिनि) चंद्रमा (ज्येष्ठा भा - मध्यमाश्रिते) ज्येष्ठा नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग-सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (चंद्रपुरी नगरे) वाराणसी क्षेत्र के चंद्रपुरी नगर में (सुस्वप्नान्

संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियलक्ष्मणायां) प्रिय लक्ष्मणा (देव्यां) देवी और (महासेन नृपति तनयः) महासेन राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

पौषवदिः अनुराधायां अनिलायोगे दिने एकादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।५।।
अनुराधाया शशांके पौषकृष्ण एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (पौषकृष्ण-अनुराधायां अनिलायोगे दिने एकादश्याम्) पौष वदी एकादशी के दिन अनुराधा नक्षत्र के साथ अनिला योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (शशांके अनुराधाश्रिते) चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र पर था (पौष कृष्णा एकादशी दिवसे) पौष कृष्ण एकादशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्न कलशों से चंद्रप्रभु का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले बहुलक्ष पूर्वानंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् वज्रनाशबोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विमलाख्या शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
पौष कृष्ण द्वादश्यां अनुराधा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेनत्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशि स्वरूप वे चंद्रप्रभु (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (द्व्यर्द्ध बहु लक्ष पूर्वाणि) ढाई लाख पूर्व काल तक

(अमर-उपनीत) देवों के द्वारा लाये गये (भोगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोग कर (वज्रनाशः अभिनिबोधितः) वज्रनाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (विमलाख्या शिविकां-आरूह्य) विमला नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्तः) चंद्रपुरी नगर से बाहर निकल गये (पौष कृष्णा द्वादश्यां-अनुराधा मध्यमाश्रिते चंद्रे) पौषवदी द्वादशी के दिन जब चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र पर था उन्होंने (षष्ठेन भक्तेन तुअपराण्हे जिनः प्रवव्राज) बेला का नियम लेकर अपराह्न काल में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै च नवति दिनान्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरैः पूज्यः) देवों के द्वारा पूज्य चंद्रप्रभु जी ने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्रतपों के विधान से (नवति दिनानि) तीन माह तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सर्वार्थारण्यमध्ये नागद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु चंद्रपुरी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ - (सर्वार्थारण्यमध्ये) सर्वार्थ वन के मध्य (खलु चंद्रपुरी ग्रामे) चंद्रपुरी नामक ग्राम के पास (नागद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) नाग वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे

षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न में बेला का नियम लेकर विराजमान हो गये।

फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां अनुराधा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ -(फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां) फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन (अनुराधा मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा अनुराधा नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन चंद्रप्रभु मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ - वहाँ साढे आठ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दश विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु पूर्वाण्यथ जिनेंद्रः।।१४।।

अन्वयार्थ - (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान चंद्रप्रभु ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (त्रिमासून लक्ष पूर्वाणि) २४ पूर्वांग ३ महीना कम एक लाख पूर्व काल

तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य्य सुसंघस्तत्राभूद् वैदर्भ प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ - (अथ) ज्ञानदान समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) चंद्रप्रभु भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (वैदर्भ प्रभृति) वैदर्भ स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

वनौषधि दीर्घिकाकुल विविधद्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
ललित कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे चन्द्रप्रभु (वनौषधिदीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) औषधि समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (ललित कूटोद्याने) ललित कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

फाल्गुन कृष्ण सप्तमयां ज्येष्ठाऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा (फाल्गुन कृष्ण-सप्तम्यां) फाल्गुन कृष्ण सप्तमी (ज्येष्ठाऋक्षे) ज्येष्ठा नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) जरा-मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ - (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) चंद्रप्रभु को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वनभवने) सभी देव यथास्थान स्वर्ग को, आकाश को, वन और भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति चंद्रप्रभु जिनं चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ - (इति एवं) इस प्रकार (भगवति चंद्रप्रभु जिनं चंद्रे) श्री चंद्रप्रभु (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्राहतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,

निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ - (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय और वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ - (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।

तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत पर (ये

साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ - (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं ।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्यम्॥२७॥

अन्वयार्थ - (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शान्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्यम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्षगति को प्राप्त कराने वाले हो॥

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजा:॥१॥

अन्वयार्थ – (शान्ति कुंथुअर-कौरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं । (शेषा इक्ष्वाकु वंशजा:) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसद कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण मासस्य किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे ज़ेट्ठे णक्खत्ते भयवदो चंदजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय- वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्च्वकालं अंच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्च्वकालं, अंच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ – (भंते) हे भगवन ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति

काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्य आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदिलक्ख कोडी णव णवदि सहस्स कोडी णव सद कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटि ९९ हजार कोटि ९०० कोटी सागरोपम काल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए फागुण मासस्स किण्ह सत्तमीए पुव्वण्हे जेट्ठे णक्खत्ते भयवदो चंदजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से फागुण वदी सप्तमी की प्रातः काल में ज्येष्ठा नक्षत्र के रहते हुए श्री चंद्रप्रभु निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति- चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का

क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा

चारुचरन आचरन, चरन चितहरन चिन्ह चर।
चन्द चन्द तनचरित, चन्दथल चहत चतुर नर॥
चतुक चण्ड चकचूरि, चारि चिद्‌चक्र गुनाकर।
चंचल चलित सुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर॥
चरअचर हितू तारन तरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि।
जिनचन्द चरन चरच्यो चहत, चितचकार नचि रच्चि रुचि॥१॥

दोहा- धनुष डेढसौ तुङ्ग तन, महासेन नृपनन्द।
मातु लछमना उर जये, थापौं चन्दजिनन्द॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

अष्टक

(बाल द्यानतरायकृत नन्दीश्वराष्टक की अष्टपदी तथा गरवा आदि अनेक चालो में)

गंगाह्नद निरमल नीर, हाटकभृंगभरा।
तुम चरन जजौं वरवीर, मेटो जनम जरा॥
श्रीचन्द्रनाथदुति चन्द, चरनन चन्द लसै।
मन वच तन जजत अमन्द, आतम जोति जगे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।।१।।

श्रीखण्ड कपूर सुचंग केशर रंग भरी।
घँसि प्रासुकजलके संग भवआताप हरी ॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्रायं भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।।२।।

तंदुल सित सोम समान, सम लय अनयारे।
दिये पुंज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे॥ श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा ।।३।।

सुर द्रुमके सुमन सुरंग, गन्धित अलि आवे।
ता सों पद पूजत चंग, कामविथा जावे ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।।४।।

नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी।
सो लै पद पूजों सार, आकुलता हारी ॥ श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।।५।।

तम भंजन दीप सँवार, तुमढिग धारतु हौं।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण याचतु हौं॥ श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।।६।।

दसगन्ध हुतासन माहिं हे प्रभु खेवतु हौं।
मम करम दुष्ट जरि जांहि, या तैं सेवत हौं॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।।७।।

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुणगावतु हौं।
पूजौं तनमन हरषाय, विघन नशावतु हौं॥श्री०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।।८।।

सजि आठों दरब पुनीत आठों अंग नमौ।
पूजौं अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमौ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि०।।९।।

पंच कल्याणक

छन्द तोटक (वर्ण १२)

कलि पंचमचैत सुहात अली , गरभागम मंगल मोद भली।।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्मसिता।।१।।
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णापंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।१।।
कलि पौष एकादशि जन्म लयो, तब लोकविषै सुख थोक भयो।
सुरईश जजैं गिरिशीश तबै, हम पूजत हैं नुत शीश अबै।।२।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं०।।
तप दुद्धर श्रीधर आप धरा , कलिपौष ग्यारसि पर्व वरा।।
निजध्यानविषै लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये।।३।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं०।
वर केवलभानु उद्योत कियो, तिहुँ लोकतणों भ्रम मेट दियो।।
कलिफाल्गुनसप्तमि इन्द्र जजे, हम पूजहिं सर्व कलंक भजें।।४।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं।।
सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये। गुणवन्त अनन्त अबाध भये।।
हरि आय जजें तित मोदधरे। हम पूजत ही सब पाप हरे।।५।।
ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं।।

जयमाला

दोहा- हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधरसे नहिं पार लहि, तौ को वरनत सार।।१।।
पै तुम भगति ममहिये, प्रेरे अति उमगाय।
तातैं गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय।।२।।

छन्द पद्धरि (१६ मात्रा)

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान, भवकानन हानन दवप्रमान ।।

जय गरभ जनम मंगल दिनन्द, भवि जीव विकाशन शर्म कन्द॥३॥
दशलक्षपूर्वकी आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय ॥
लखि कारण हैं जगतैं उदास, चिंत्यों अनुप्रेक्षा सुख निवास ॥४॥
तित लौकान्तिक बोध्यो नियोग, हरि शिविका सजि धरियो अभोग ॥
तापै तुम चढ़ि जिनचन्दराय, ताछिन की शोभा को कहाय ॥५॥
जिन अंग सेत सित चमर ढार, सित छत्र शीस गल गुलक हार ॥
सित रतनजड़ित भूषण विचित्र, सित चन्द्र चरण चरचें पवित्र ॥६॥
सित तनद्युति नाकाधीश आप, सित शिविका कांधे धरि सुचाप ॥
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चित में चिन्तत जात पर्व ॥७॥
सित चन्द नगरतें निकसि नाथ, सित बनमें पहुंचे सकल साथ ॥
सितशिलाशिरोमणि स्वच्छ छाँह, सित तप तित धार्यो तुम जिनाह ॥८॥
सित पय को पारण परमसार, सित चन्द्रदत्त दीनों उदार, सित कर में
सो पय धार देत, मानों बांधत भवसिन्धु सेत ॥९॥
मानों सुपुण्य धारा प्रतच्छ, तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ॥
फिर जाय गहन सित तप करन्त, सित केवल ज्योति जग्यो अनन्त ॥१०॥
लहिं समवसरण रचना महान, जाके देखत सब पाप हान ॥
जहँ तरु अशोक शौभे उतंग, सब शोक तनो चूरै प्रसंग ॥११॥
सुर सुमन वृष्टि नभ तें सुहात, मनु मन्मथ तज हथियार जात ॥
बानी जिन मुख सों खिरत सार, मनु तत्व प्रकाशन मुकुर धार ॥१२॥
जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरन्त, मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत ॥
सिंहासन है जहँ कमल जुक्त, मनु शिव सरवर को कमल शुक्त ॥१३॥
दुन्दुभि जित बाजत मधुर सार, मनु करम जीत को है नगार ॥
शिर छत्र फिरै त्रय श्वेत वर्ण, मनु रतन तीन त्रय ताप हर्ण ॥१४॥
तन प्रभा तनो मण्डल सुहात, भवि देखत निज भव सात सात ॥
मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय, भविजन भव मुख देखत सु आय॥१५॥

इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीसत महिमा महान ।।
ता को वरणत नहिं लहत पार, तो अन्तरंग कौ कहै सार ।।१६।।
अनअन्त गुणनिजुत करि विहार, धरमोपदेश दे भव्य तार ।।
फिर जोगनिरोधि अघाति हान, सम्मेदथकी लिय मुकतिथान।।१७।।
वृन्दावन वंदन शीश नाय, तुम जानत हो मम उरजु भाय ।।
ता तें का कहौं सु बार बार, मनवांछित कारज सार सार ।।१८।।

छन्द- जय चन्द्रजिनंदा आनन्दकन्दा भवभयभंजन राजै हैं।
रागादिक द्वन्दा, हरि सब फन्दा, मुकति मांहि थिति साजै है।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।।

चौबोला- आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजें।।
ता के भव भवके अघ भाजें, मुक्तसार सुख ताहि सजें।।२०।।
जम के त्रास मिटें सब ताके, सकल अमंगल दूर भजें।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातें शिवपुरि राज रजें।।२१।।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ललित कूट ।। दोहा ।।

चन्दप्रभु जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि नवचतुरशीति अर्बुदः द्वादश कोटि अशीति लक्ष चतुरशीतिसहस्र पञ्चशत पञ्चानवति ललित कूटतः मोक्षं गतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घं अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

वासुपूज्याय नमः

पुष्पदंत निर्वाण भक्ति

विबुधपति खगपतिनरपति धनदोरगभूतयक्ष पतिमहितम्।

अतुलसुखविमल निरुपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परमगुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः श्री सुविधिजिनं भक्त्या।।२।।

अन्वयार्थ - जो (हि) यथार्थ (विबुधपति, खगपति, नरपति-धनद, उरग-भूत यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेंद्र भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुखरूप हैं (विमल निरुपमशिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनो लोकों के श्रेष्ठ गुरु हैं ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या पुष्पदंतं नत्वा) सुविधिनाथ भगवान को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन तुष्टि- जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यंत दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पाँच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन पुष्पदंत भगवान की मैं स्तुति करूँगी ।

फाल्गुन कृष्ण नवम्यां मूलऋक्षे मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्ग सुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः।।३।।
सुग्रीव नृपति तनयो भारतवास्ये काकंदी नगरे।
देव्यां प्रियरामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ - (अपराजिताधीशः) अपराजिता विमान का स्वामी (विभुः) भगवान पुष्पदंत का जीव (फाल्गुन कृष्ण नवम्यां) फाल्गुन कृष्ण नवमी के दिन (शशिनि) चंद्रमा (मूलऋक्षे-मध्यमाश्रिते) मूल नक्षत्र के मध्य में स्थित था तब (स्वर्ग-सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये)

भारतवर्ष में (कौशल काकंदी नगरे) कौशल देश के काकंदीपुर नगर में (सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियरामायां) प्रिय रामा (देव्यां) देवी और (सुग्रीव नृपति तनयः) सुग्रीव राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

मार्गशीर्षसित मूलेभालैब्रयोगे दिने नवम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सोम्येषु शुभलग्ने।।५।।
मूलसित लैब्रयोगे मार्गशीर्ष नवमी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (मार्ग-शीर्ष-सित-मूलेंभालैब्रयोगे नवमी-दिने) मार्ग शीर्ष मास शुक्ल पक्ष नौमी के दिन मूल नक्षत्र तथा लैब्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे, (शुभलग्ने) शुभ लग्न था (मार्गशीर्षसित) मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (नवमी दिने) नवमी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेक चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्रवर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् उल्कापाताभिनिबोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सूर्यप्रभाख्या शिविकामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
मार्गशीर्षसित नवम्यां अनुराधामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ - जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंतगुणों के राशि स्वरूप वे पुष्पदंत (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (पञ्चाशत्सहस्र) ५० हजार वर्ष तक (अमर-उपनीत) देवों के

द्वारा लाये गये (भोगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोग कर (उल्कापात: अभिनिबोधित:) उल्कापात को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरित:) तुरंत (नानाविध रूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (श्री सूर्यप्रभाख्य शिविकां-आरूह्य) सूर्य प्रभा नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रान्त:) काकंदीपुर से बाहर निकल गये (मार्ग-शीर्ष नवमी अनुराधा मध्यमाश्रिते सोमे) मार्गशीर्ष माह में शुक्ल पक्ष नवमी के दिन जब चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र पर था उन्होंने (षष्ठेन भक्तेन तु अपराण्हे जिन: प्रवव्राज) दो उपवास का नियम लेकर अपराह्न काल में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेट कर्वट मटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै चातुर्वर्षाण्यमरै: पूज्य:॥१०॥

अन्वयार्थ - (अमरै: पूज्य:) देवों के द्वारा पूज्य पुष्पदंत जी ने (उग्रै: तपोविधानै:) उग्रतपों के विधान से (चतु वर्षाणि) चार वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब - घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट, मटंब घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

पुष्पारण्यस्यमध्ये अक्षद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेनस्थितस्य खलु काकंदी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ - (पुष्प-अरण्यस्यमध्ये) पुष्प वन के मध्य में (काकंदी ग्रामे) काकंदी नामक ग्राम के पास (अक्षद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) अक्ष वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे

षष्ठेनस्थितस्य) अपराह्न काल में दो दिन का उपवास लेकर विराजमान हो गये।

कार्तिकसित मूलऋक्षे द्वितीयायां मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ -(कार्तिकसित द्वितीयायां) कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन (मूलऋक्षे मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा मूल नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानं) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन पुष्पदंत मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिकुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ - वहाँ आठ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष, (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुन्दुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगंधित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दश विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षपूर्वाण्यथ जिनेंद्रः॥१४॥

अन्वयार्थ - (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान पुष्पदंत ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए(चतुर्वर्षाण्यून खलु लक्ष पूर्वाणि) २८ पूर्वांग ४ वर्ष कम एक लाख पूर्व काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान् संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् अनगार प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ - (अथ) धर्मोपदेश के समाप्ति के पश्चात् (भगवान्) पुष्पदंत भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतम् सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ साथ में (अनगार प्रभृतिः) अनगार स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

वनौषधिदीर्घिकाकुल विविधद्रुमखण्डमंडिते रम्ये।
सुप्रभकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ - (सः मुनि) वे पुष्पदंत (वनौषधिदीर्घिका-कुल विविध-द्रुम-खंड-मंडिते) औषधि समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (सुप्रभ कूटोद्याने) सुप्रभ कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

भाद्र शुक्ल अष्टम्यां मूलनक्षत्रे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ - वे सकल परमात्मा (भाद्र शुक्ल अष्टम्यां) भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन (मूलनक्षत्रे) मूल नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्, अमरम् अक्षयम्-सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथासु चागम्य।
देवतरु रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवर माल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपिगतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ – (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) पुष्पदंत भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु–आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु, रक्त चंदन कालागरु सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष–चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नीकुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट–अनल–सुरभि–धूपवर–माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नी, सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरान् अपि अभ्यर्च्य) गणधरों की पूजा की इसके बाद (दिवं खं च–वनभवने गता) वैमानिकदेव स्वर्ग को, ज्योतिषीदेव आकाश को, व्यन्तरदेव वन को और भवनवासीदेव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति पुष्पदंत जिनं चंद्रे,
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि
सोऽनंतं परम सुखं नृदेव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ – (इति एवं) इस प्रकार (भगवति पुष्पदंत जिनं चंद्रे) श्री पुष्पदंत (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसन्ध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृदेव लोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं–अनन्तं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारतवर्ष जानाम्।

तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ – (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्ष जानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाण भूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की, गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं (संस्तोतुम् उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्ति पूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योग से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानस करैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ – (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूंथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मनरूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः,
पण्डोः सुताः परमनिर्वृतिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,

नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वततले वर सिद्धकूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रि बलाहके च,
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च॥२४॥
सह्यचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्यभूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ - (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु पक्ष को नष्ट करने वाले पाण्डु पुत्र पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्- अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्रनामा मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलनानदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मेढ्रगिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल और बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षय कर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में

(तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेनलोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयातियद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि॥२६॥

अन्वयार्थ – (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्तगुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्यपुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृत्ति भूमिदेशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ – (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ– इस निर्वाण भक्ति स्तोत्र में (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृत्ति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शान्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्य सौख्यम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख रूप मोक्ष प्राप्त कराने वाले हों।

क्षेपक श्लोक

शान्ति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ - (शान्ति कुंथुअर-कोरव्या) शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरुवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमिसुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीर स्वामी नाथ वंश में पैदा हुए हैं। (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में पैदा हुए हैं

अंचलिका

इच्छामि भंते। परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मिचउत्थ समयस्य मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णव सद णवदि कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए भद्द पद मासस्य सुक्क अष्ट्टमीए पुव्वण्हे मूलाए णक्खत्ते भयवदो पुप्फयंतं जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु, भवण वासिय-वाणविंतर, जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं, अंच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं, समाहि-मरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन ! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्य आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा

करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदिलक्ख कोडी णव णवदि सहस्स कोडी णव सद णवदि कोडी सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी ९९ हजार कोटी ९९० कोटी सागर वर्ष व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए भद्द पद मासस्स सुक्क अट्ठमीए पुव्वण्हे मूलाए णक्खत्ते भयवदो पुप्फयंतंजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन प्रातः काल मूल नक्षत्र के रहते हुए श्री पुष्पदंत भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय, वाणविंतर जोइस्सिय कप्पवासियत्ति-चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेणण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेणअक्खेण, दिव्वेणपुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण दिव्वेणधूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण - महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इहसंतो तत्थसंताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूं पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो समाधि मरण हो (जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेंद्र

देव की गुण रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

श्रीपुष्पदन्त जिन पूजा

छन्द - पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सुजपन्त तन्त गुन।
महिमावन्त महन्त कन्त शिवतियरमन्त मुन ॥
काकन्दीपुर जन्म पिता सुग्रीव रमासुत।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हैं थापों त्रिवार नुत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणाम्

चाल होली- मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी० ॥टेक॥
हिमवनगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय।
करम कलंक निवारनकारन, जजों, तुम्हारे पाय। मेरी०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

बावन चन्दन कदलीनंदन, कुंकुम संग घसाय।
चरचों चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय॥मेरी०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति०।।२।।

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय॥
ताको पुंज धरों चरननढिग, देहु अखय पद राय॥मेरी०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०।।३।।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुंजत अलि गन आय।
ब्रह्म पुत्र मद भंजन कारन, जजों तुम्हारे पाय ॥मेरी०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०।।४।।

घेवर बावर फेनी गूजा, मोदन मोदक लाय।
छुधा वेदनि रोग हरनको, भेंट धरों गुणगाय ॥मेरी०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय।
तिमिर मोह नाशक तुमको लखि, धरो निकट उमगाय।।मेरी०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हौं गुन गाय।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरें सो, धूम सु धूम उड़ाय।।मेरी०७।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट, दाड़िम आम मंगाय।
तासों तुम पदपद्म जजत हों, विघन सघन मिट जाय।।मेरी०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय।।
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय।।मेरी०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहिं थिति देवा जी।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत शची तित सेवा जी।।
रतनन की धारा परम उदारा, परी व्योमतें साराजी।
मैं पूजों ध्यावौं भगति बढ़ावौं, करो मोहि भव पारा जी।।१।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं।।१।।

मगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं जनमे तीरथ नाथा जी।
सब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निज माथा जी।।
सुरगिरनहवाये, मंगल गाये, पूजे प्रीति लगाईजी।
मैं पूजों ध्यावौं भगत बढ़ावौं, निजनिधि हेतु सहाईजी।।२।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं।।२।।

सित मंगसिर मासा तिथि सुखरासा, एकम के दिन धारा जी।

तप आतमज्ञानी आकुलहानी, माह सहित अविकारा जी।।
सुरमित्र सुदानीके घर आनी, गो-पय पारन कीना जी।
तिनको मैं वन्दों पापनिकंदौं, जो समतारस भीना जी।।३।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल प्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं।।३।।
सित कार्तिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचंडा जी।।
केवल परकाशे भ्रम तम नाशे, सकल सार सुख मंडा जी।।
गनराज अठासी आनंदभासी, समवसरण वृषदाता जी !
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजें जगत्राता जी।।४।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं।।
भादव सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाना जी।
गुन अष्ट प्रकारा अनुपम धारा, जय जय कृपा निधाना जी।।
तित इन्द्र सु आयौ, पूज रचायौ चिन्ह तहां करि दीना जी।
मैं पूजत हों गुन ध्यान महीसौं, तुमरे रसमें भीना जी।।५।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०।।५।।

जयमाला

दोहा- लच्छन मगर सुश्वेत तन तुङ्ग धनुष शत एक।
सुरनर वंदित मुकतपति, नमों तुम्हें शिर टेक।।१।।
पुहुपदन्त गुनवदन है, सागरतोय समान।।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान।।२।।

पुष्पदन्त जयवन्त नमस्ते, पुण्यतीर्थंकर सन्त नमस्ते ।।
ज्ञानध्यानअमलान नमस्ते, चिद्विलास सुख ज्ञान नमस्ते ।।३।।
भवभयभंजन देव नमस्ते, मुनिगणकृत पद सेव नमस्ते ।।
मिथ्या निशि दिन इन्द्र नमस्ते, ज्ञानपयोदधि चन्द्र नमस्ते ।।४।।
भवदुख तरु निःकन्द नमस्ते, रागदोष मद हनन नमस्ते ।।

विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्मसुधारसपूर नमस्ते ।।५।।
केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते, सकल चराचरभास नमस्ते ।।
विघ्नमहीधरविज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ।।६।।
जय मकराकृतपाद नमस्ते मकर ध्वज मदवाद नमस्ते।
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते, जय जय अधम उधार नमस्ते ।।७।।
दया धुरंधर धीर नमस्ते, जय जय गुनगम्भीर नमस्ते ।।
मुक्ति रमनि पति वीर नमस्ते, हर्ता भवभय पीर नमस्ते ।।८।।
व्यय उत्पति थितिधार नमस्ते, निजअधार अविकार नमस्ते ।
भव्य भवोदधितार नमस्ते, वृन्दावन निस्तार नमस्ते ।।९।।

घत्ता- जय जय जिनदेवं हरिकृतसेवं, परम धरमधन धारी जी।।
मैं पूजौं ध्यावौं गुनगन गावों, मेटों विथा हमारी जी।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।।

छन्द- पुहुपदंतपद सन्त, जजें जो मनवचकाई।
नाचें गावें भगति करें, शुभ परनति लाई।।
सों पावें सुख सर्व, इन्द्र अहिमिंद्र तनों वर।
अनुक्रमतें निरवान, लहें निहचै प्रमोद धर।।११।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि।

सुप्रभ कूट

।। दोहा ।।

पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि एकः कोटाकोटि नवनवति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशत अशीति सुप्रभकूटतः मोक्षं गतः तान् चरणानुअहं पुनः पुनः योगैः नमस्करोमि जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री शीतलनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः शीतलं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या शीतलं नत्वा) भगवान शीतलनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान शीतलनाथ की मैं स्तुति करूँगी।

चैत्र कृष्ण अष्टम्यां पूर्वाषाढ मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा खलु आरणाधीशः ॥३॥
दृढरथ नृपति तनयो भारतवास्ये भद्रिलपुर नगरे।
देव्यां प्रियनंदायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (आरणाधीशः) आरण स्वर्ग का स्वामी (विभुः) भगवान शीतलनाथ का जीव (चैत्र कृष्ण-अष्टम्यां) चैत्र कृष्ण

अष्टमी के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (पूर्वाषाढ मध्यम्-आश्रिते) पूर्वाषाढ नक्षत्र पर था (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (भद्रिलपुर नगरे) भद्रिलपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियनंदायां) प्रिय सुनंदा (देव्यां) देवी और (दृढरथ-नृपति-तनयः) दृढरथ राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

पौषवदि पूर्वाषाढे लैत्र योगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।
पूर्वाषाढ लैत्र योगे पौषकृष्ण द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (पौषवदि-पूर्वाषाढ-लैत्र योगे-द्वादश्याम्) पौषवदि बारस के दिन पूर्वाषाढ नक्षत्र तथा लैत्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (पौष कृष्ण) पौष कृष्ण (द्वादशी-दिवसे) द्वादशी के दिन जन्म हुआ और (पूर्वाण्हे) प्रातः (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से उन शीतलनाथ का अभिषेक किया था।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् हिमनाशा बोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
शुक्र प्रभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
पौष कृष्ण द्वादश्यां पूर्वाषाढ मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि

स्वरूप वे शीतल नाथ (कुमार काले) कुमारावस्था में (पंचविंशति सहस्राणि वर्षाणि) २५ हजार वर्ष पूर्व काल तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (हिमनाशा अभिनिबोधितः) हिमनाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त(नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (शुक्र प्रभाख्य शिविकाम्-आरूह्य) शुक्रप्रभा नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) भद्दलपुर नगर से बाहर निकल गये (पौष कृष्ण द्वादशी पूर्वाषाढ नक्षत्र मध्यमाश्रिते सोमे) पौष वदि द्वादशी के शुभ दिन जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ नक्षत्र पर था उन्होंने (षष्टेन त्वपराण्हे) बेला के उपवास का नियम ग्रहण कर अपरान्ह काल में (जिनः प्रवव्राज) जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः त्रीवर्षाण्मरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य भगवान शीतलनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (त्री-वर्षाणि) तीन वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु भद्रिल ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में

(खलु भद्रिल ग्रामे) भद्दलपुर ग्राम के पास (शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शाल वृक्ष के नीचे शिलापट्ट पर स्थित (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह में बेला का नियम ले विराजमान हो गये।

पौष कृष्ण चतुर्दश्यां पूर्वाषाढ मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (पौष कृष्ण चतुर्दश्याम्) पौषवदि चौदसके दिन (पूर्वाषाढमध्यमाश्रिते चन्द्रे) जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन शीतलनाथ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ ७ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान शीतलनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए

(पंचविंशत्यूनसहस्राणि वर्षाणि) ३ वर्ष कम २५ हजार वर्ष (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूदनगार प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) धर्म सभा की समाप्ति के पश्चात् विहार करते हुए (भगवान) शीतलनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसेसम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (अनगार प्रभृति) अनगार स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

विद्युतकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे केवलज्ञानी भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (विद्युत कूटोद्याने) विद्युतवरकूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

अश्विन शुक्ल अष्टम्यां पूर्वाषाढे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ- वे परमात्मा(अश्विन शुक्ल अष्टम्यां) अश्विन शुक्ल अष्टमी के दिन (पूर्वाषाढनक्षत्रे) पूर्वाषाढ नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) जरा मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षै:॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यै:।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिवृत्तं ज्ञात्वा) शीतलनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागुरू-सुरभिगोशीर्षै:) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिव खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति शीतल जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति शीतलंजिन चंद्रे) भगवान शीतलनाथ से संबंधित (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम

सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण

भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्ध गति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय नामक श्रेष्ठ पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुड्.गगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म शत्रुओं को जीतने वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए। (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे)

सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरूषैः उषितानि) महापुरूषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र)

यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसदणव णवदि कोडि सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए अस्सिन मासस्स सुक्क अट्ठमीए पुव्वण्हे पुव्वासाढाए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सीयल जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण,

दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ – (इच्छामिभंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णव सदणव णवदि कोडि सागरोवम वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी ९९ हजार कोटी ९९९ कोटी सागरोपम वर्ष व्यतीत हो जाने पर बाद में (सम्मेए पव्वए आसोज मासस्स सुक्क अट्ठमीए पुव्वण्हे पुव्वासाढाए णक्खत्ते भयवदो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन प्रातः काल पूर्वाषाढ नक्षत्र के रहते हुए श्री शीतलनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्हिहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्च्चकालं अंचंति पुज्जंति

वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ, (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

शीतलनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद मत्त मातंग, मत्त गयन्द, मात्रा २३)

शीतलनाथ नमों धरि हाथ, सु माथ जिन्हों भव गाथ मिटाये।
अच्युत तें च्युत मात सुनन्द के, नन्द भये पुर भद्दल आये।।
वंश इक्ष्वाकु किये जिन भूषित, भव्यन को भव पार लगाये।
ऐसे कृपानिधि के पद पंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इति (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अष्टक

(छंद वसंत तिलका)

देवापगा सु वर वारि विशुद्ध लायो,
भृंगार हेम भरि भक्ति हिये बढ़ायो।
रागादिदोष मल मर्दन हेतु येवा,
चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

श्री खंड सार वर कुंकुम गारि लीनों।
कं संग स्वच्छ घिसि भक्ति हिये धरीनों ।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

मुक्ता-समान सित तंदुल सार राजे।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजें ।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

श्री केतकी प्रमुख पुष्प अदोष लायो।
नौरंग जंग करि भृंग सु रंग पायो ।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

नैवेद्य सार चरु चारु संवारि लायो।
जांबूनद-प्रभृति भाजन शीश नायो।।
रागादिदोष मल मर्दन हेतु येवा,
चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोति राजे।
स्नेह प्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजे।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

कृष्णागरु प्रमुख गंध हुताश माहीं।
खेवौं तवाग्र वसुकर्म जरंत जाहीं।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

निम्बाग्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा।
सौवर्ण-गंध फल सार सुपक्व प्यारा।। रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

शुभ श्री-फलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे।।रागा०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली
(छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा)

आठैं वदी चैत सुगर्भ मांही, आये प्रभू मंगलरूप थाहीं।
सेवैं शची मातु अनेक भेवा, चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा।।

ॐ ह्रीं श्रीचैत्र कृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतल०अर्घ्यं नि०।।१।।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जायो, भूलोक में मंगल सार आयो।
शैलेन्द्र पै इन्द्र फनिन्द्र जज्जे, मैं ध्यान धारौं भवदुःख भज्जे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण द्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतल० अर्घ्यं नि०।।२।।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जानो, वैराग्य पायो भवभाव हानो।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा, चर्चौं सदा चर्न निवारि कोहा।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण द्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शीतल०अर्घ्यं नि०।।३।।

चतुर्दशी पौष वदी सुहायो, ताही दिना केवल लब्धि पायो।
शोभै समोसृत्य बखानि धर्म, चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्म।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण चतुर्दश्यां केवल ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशीतल०अर्घ्यं नि०।।४।।

कुंवार की आठैं शुद्ध बुद्धा, भये महा मोक्ष सरूप शुद्धा।
सम्मेद तें श्री शीतलनाथ स्वामी, गुनाकरं तासु पदं नमामी।।

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशीतल० अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला
(छंद लोलतरंग)

आप अनंत गुनाकर राजे, वस्तुविकाशन भानु समाजे।
मैं यह जानि गही शरना है, मोह महारिपु को हरना है।१।

दोहा :- हेम वरन तन तुंग धनु - नव्वै अति अभिराम।
सुर तरू अंक निहारि पद, पुनि-पुनि करौं प्रणाम।२।

छन्द तोटक

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं, भव दाह दवानल मेघझरं।
दुख-भूभृत-भंजन वज्र समं, भव सागर नागर-पोत-पमं।३।
कुह-मान-मयागद-लोभ हरं, अरि विघ्न गयंद मृगिंद वरं।
वृष-वारिधवृष्टन सृष्टिहितू, परदृष्टि विनाशन सुष्टू पितू।४।
समवस्रत संजुत राजतु हो, उपमा अभिराम विराजतु हो।
वर बारह भेद सभा थित को, तित धर्म बखानि किये हित को।५।
पहले महि श्री गणराज रजैं, दुतिये महि कल्पसुरी जु सजैं।
त्रितिये गणनी गुन भूरि धरैं, चवथे तिय जोतिष जोति भरैं।६।
तिय-विंतरनी पन में गनिये, छह में भुवनेसुर तिय भनिये।
भुवनेश दशों थित सत्तम हैं, वसु में वसु-विंतर उत्तम है।।७।।
नव में नभजोतिष पंच भरे, दश में दिविदेव समस्त खरे।
नरवृन्द इकादश में निवसैं, अरू बारह में पशु सर्व लसैं।।८।।
तजि वैर, प्रमोद धरैं सब ही, समता रस मग्न लसैं तब ही।
धुनि दिव्य सुनें तजि मोहमलं, गनराज असी धरि ज्ञानबलं।।९।।
सबके हित तत्व बखान करें, करूना-मन-रंजित शर्म भरें।
वरने षटद्रव्य तनें जितने, वर भेद विराजतु हैं तितने।।१०।।
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना, इक धर्म दुती सुकलं अधुना।

तित धर्म सुध्यान तणों गुनियो, दशभेद लखे भ्रम को हनियो।।११।
पहलो अरि नाश अपाय सही, दुतियो जिन बैन उपाय गही।
त्रिति जीवविषैं निजध्यावन है, चवथो सु अजीव रमावन है।।१२।।
पनमों सु उदै बलटारन है, छहमों अरि-राग-निवारन है।
भव त्यागन चिंतन सप्तम है, वसुमों जितलोभ न आतम है।।१३।।
नवमों जिन की धुनि सीस धरे, दशमों जिनभाषित हेतु करे।
इमि धर्म तणों दश भेद भन्यो, पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो।।१४।।
सुपृथक्त-वितर्क-विचार सही, सुइकत्व-वितर्क-विचार गही।
पुनि सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपात कही, विपरीत-क्रिया-निरवृत्त लही।।१५।।
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो, भवि जीवन को शिव स्वर्ग दियो।
पुनि मोक्षविहार कियो जिनजी, सुखसागर मग्न चिरं गुनजी।।१६।।
अब मैं शरना पकरी तुमरी, सुधि लेहु दयानिधि जी हमरी।
भव व्याधि निवार करो अब ही, मति ढील करो सुख द्यो सब ही।।१७।।

छंद घत्तानंद

शीतल जिन ध्याऊं भगति बढ़ाऊ, ज्यों रतनत्रय निधि पाऊं।
भवदंद नशाऊं शिवथल जाऊं, फेर न भव वन में आऊं।।१८।।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद मालिनी

दिढ़रथ सुत श्रीमान् पंचकल्याणक धारी,
तिन पद जुगपद्म जो जजै भक्तिधारी।
सहजसुख धन धान्य, दीर्घ सौभाग्य पावे,
अनुक्रम अरि दाहे, मोक्ष को सो सिधावै।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

शीतलनाथ जिनराज का, कूट विद्युत वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अष्टादश कोटाकोटी द्विचत्त्वारिंशत्कोटी द्वात्रिंशत् लक्ष द्विचत्त्वारिंशत् सहस्र नवशत पञ्च मुनिः विद्युतवर कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणान् अहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री वासुपूज्याय नमः
श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुरवापैः श्रेयांसजिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ में (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग-भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं(अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ परम गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या श्रेयांसजिनंनत्वा) भगवान श्रेयांसनाथ को नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन श्रेयांसनाथ भगवान की मैं स्तुति करूँगी।

ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठ्यां श्रवणऋक्षेमध्यमाश्रिते सोमे।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा अच्युताधीशः ॥३॥
विष्णुराज नृपति तनयो भारतवास्ये सिंहपुरीनगरे।
देव्यां श्रीनन्दायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (अच्युताधीशः) अच्युतविमान का स्वामी (विभुः) भगवान श्रेयांसनाथ का जीव (ज्येष्ठ कृष्ण-षष्ठ्यां) जेठ वदि षष्टी के दिन (श्रवणऋक्षे मध्यमाश्रिते सोमे) चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था तब (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष के (सिंहपुरी नगरे) सिंहपुरी नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (श्री नंदायां) श्री नन्दा (देव्यां) देवी (विष्णुराज- नृपति-तनयो) और विष्णुराज राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

फाल्गुन वदि श्रवण ऋक्षे लैत्रयोगे एकादश्यां।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
श्रवणाश्रिते शशांके फाल्गुन कृष्ण एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (फाल्गुन कृष्ण श्रवणऋक्षे लैत्र योगे एकादश्यां) फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र और लैत्र योग के साथ था (सोम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके श्रवणाश्रिते) जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था उस समय श्रेयांसनाथ का जन्म हुआ (एकादशी दिवसे) एकादशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इंद्रों ने रत्नमय कलशों से उन

श्रेयांसनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले लक्ष वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् वनलक्ष्मीनाशबोधितो त्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विमल प्रभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
फाल्गुन कृष्णैकादश्यां श्रवण भामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन तु पूर्वाण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे श्रेयांसनाथ (कुमार काले एकोन त्रिंशत् लक्षवर्षाणि) कुमार काल अवस्था में २९ लाख वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (वनलक्ष्मी नाश-अभिनिबोधितः) वनलक्ष्मी के नाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (विमल प्रभाख्य शिविकाम्- आरूह्य) विमलप्रभा पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) सिंहपुरी से बाहर निकल गये (फाल्गुन कृष्ण एकादश्यां-श्रवण भा मध्यमाश्रिते सोमे) फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था (षष्टेन भक्तेन तु पूर्वाण्हे जिनः प्रवव्राज) पूर्वाहन् में तेंदुकी वृक्ष के नीचे बेला का नियम ले निर्ग्रन्थ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः द्विवर्षाण्यमरैः पूज्यः ।।१०।।

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज श्रेयांसनाथ(उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (द्विवर्षाणि) दो वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

मनोहरवनस्य मध्ये पलाशद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु सिंहनादपुरे॥११॥

अन्वयार्थ- (मनोहर वनस्य मध्ये) मनोहर वन के मध्य में (खलु सिंहनादपुरे) सिंहनादपुर नामक ग्राम में (पलाश संश्रिते शिलापट्टे) पलाश वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य) पूर्वाहन् में बेला का नियम ले विराजमान हो गये।

माघ कृष्ण अमावस्यायां श्रवणभा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (माघ-कृष्ण अमावस्यायां) माघ अमावस्या के दिन (श्रवणभा मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन श्रेयांसनाथ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ ७ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल

दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं लक्षवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (जिनेंद्रः) भगवान श्रेयांसनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (नव विंशतिलक्षवर्षाणि) २६ लाख वर्ष तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् कुंथुगण प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) धर्मसभा के विसर्जन के पश्चात् (भगवान) श्रेयांसनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (कुंथुगण प्रभृति) साथ में कुंथु स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये।।

संकुलकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनि) वे केवलज्ञानी भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्ष समूह से शोभायमान (संकुल कूटोद्याने) सुंकुल कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

श्रावणसितपूर्णिमायां श्रवण ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- (श्रावण सित पूर्णिमायां) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन (श्रवण ऋक्षे) श्रवण नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) जरा मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) श्रेयांसनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति श्रेयांस जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।

सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,

भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति श्रेयांसजिन चंद्रे) श्रेयांसनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंत शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,

निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।

तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,

संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।२१।।

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन भूमियों की सम्यक् प्रकार स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,

न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।

पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः,

संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंता:॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों की (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्ध गति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षा:
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेता:।
तुंग्यां 'तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमला: सुगतिं प्रयाता:,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु

तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता वाले मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) पावागिरि के पास चेलना नदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए। (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रवल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरूषैः उषितानि) महापुरूषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां

नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।२७।।

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जित्तभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।१।।

अन्वयार्थ- शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि

णव णवदि सहस्स कोडि णवसदणव णवदि कोडि तेतिस लक्ख तिहत्तर सहस्स णवसद सागरोवम काल वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए सावण मासस्स सुक्क पुण्णिमासीए पुव्वण्हे घणिट्ठा णक्खत्ते भयवदो। सेयांसजिणं सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्वंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसद णव णवदि कोडि तेतीस लक्ख तिहत्तर सहस्स णव सद सागरोवम काल वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेस कालम्मि) ९९ लाख कोटी ९९ हजार कोटी ९९९ कोटी ३३७३९०० वर्षकाल व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए सावण मासस्स सुक्क पुण्णिमासीए पुव्वण्हे घणिट्ठा णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो सेयांस जिणं सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन प्रातः काल

घनिष्ठा नक्षत्र के रहते हुए श्री श्रेयांसनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में जो चार प्रकार के देव हैं, वे दिव्यजल, दिव्य चंदन, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ, (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

श्रेयांसनाथ भगवान की पूजा एवं टोक वन्दना

(छंद रूपमाला तथा गीता)

विमल नृप विमला सुअन, श्रेयांसनाथ जिनन्द।
सिंहपुर जन्मे सकल हरि, पूजि धरि आनन्द।
भव बंध ध्वंसनिहेत लखि मैं शरन आयो येव।

थापौं चरन जुग उरकमल में, जजनकारन देव।१।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम् परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

छंद गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८)

कलधौत वरन उतंग हिमगिरि पदम द्रह तें आवई।
सरित प्रासुक उदक सों भरि भृंग धार चढ़ावई।।
श्रेयासंनाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्दकन्द हैं।
दुखदंद फंद निकंद पूरन चन्द जोतिअमंद हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।१।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीर संग घसौं सही।
भवताप भंजन हेत भवदधि सेत चरन जजौं सही।। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व०।२।

सित शालि शशि दुति शुक्ति सुन्दर मुक्तकी उनहार हैं।
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं।।श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।३।

सद सुमन सुमन समान पावन, मलय ते मधु झंकरें।
पद कमलतर धरतैं तुरित सो मदन को मद खंकरें।। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।४।

यह परम मोदक आदि सरस सँवारि सुन्दर चरु लियो।
तुव वेदनी मदहरन लखि, चरचौं चरन शुचिकर हियो।।श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।५।

संशय विमोह विभरम तम भंजन दिनन्द समान हो।

तातैं चरनढिग दीप जोऊँ देहु अविचल ज्ञान हो।।श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशयनाय दीपं निर्व०।६।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगन्ध भूर बनाइया।
दहि अमर जिह्वविषै चरनढिग करम भरम जराइया।।
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्दकन्द हैं।
दुखदंद फंद निकंद पूरनचन्द जोतिअमंद हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।

सुरलोक अरु नरलोक के फल पक्व मधुर सुहावने।
ले भगति सहित जजौं चरन शिव परम पावन पावने।।श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।

जलमलय तंदुल सुमनचरु अरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चरचौं चरन जुग प्रभु मोहि तार उतावली।श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।६।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली (छन्द आर्या)

पुष्पोत्तर तजि आये, विमलाउर जेठकृष्ण छट्टम को।
सुरनर मंगल गाये, पूजौं मैं नासि कर्म काठनि को।।

ॐ ह्रीं जयेष्ठ कृष्णाषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांस० अर्घ्यं नि०स्वा०।१।

जनमे फागुनकारी, एकादशि तीन ग्यान दृगधारी।
इक्ष्वाकु वंशतारी, मैं पूजौं घोर विघ्न दुख टारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांस०अर्घ्यं नि० स्वाहा।२।

भव तन भोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तप धारा।।
फागुन वदि इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्ट परकारा।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीश्रेयांस०अर्घ्यं नि०।३।

केवलज्ञान सुजानन, माघ बदी पूर्णतित्थ को देवा।

चतुरानन भवभानन, वंदौ ध्यावौं करौं सुपद सेवा॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीश्रेयांस० अर्घ्यं नि० स्वाहा।४।

गिरि समेद तें पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावन को।

कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजौं आप निकट आवन को॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीश्रेयांस०अर्घ्यं नि०स्वा०।५।

जयमाला (छन्द लोल तरंग-वर्ण ११)

शेभित तुंग शरीर सुजानो, चाप असी शुभ लक्षण मानो।

कंचन वर्ण अनूपम सोहे, देखत रूप सुरासुर मोहे।१।

छन्द पद्धरि - मात्रा १५

जय जय श्रेयांस जिन गुणगरिष्ठ, तुम पदजुग दायक इष्टमिष्ट।

जय शिष्ट शिरोमणि जगतपाल, जय भव सरोजगन प्रात:काल।२।

जय पंच महाव्रत गज सवार, लै त्याग भाव दलबल सु लार।

जय धीरज को दलपरि बनाय, सत्ता छितिमहँ रन को मचाय।३।

धरि रतन तीन तिहुँशक्ति हाथ, धरम कवच तपटोप माथ।

जय शुकल ध्यान कर खड्ग धार, ललकारे आठों अरि प्रचार।४।

ता में सबको पति मोह चण्ड, ता को तत छिन करि सहस खण्ड।

फिर ज्ञान दरस प्रत्यूह हान, निजगुन गढ़ लीनों अचल थान।५।

शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार, हुई समवशरण रचना अपार।

तितभाषे तत्व अनेक धार, जा को सुनि भव्य हिये विचार।६।

निजरूप लह्यो आनन्दकार, भ्रम दूर करन को अति उदार।

पुनि नयप्रमान निच्छेप सार, दरसायो करि संशय प्रहार।७।

ता में प्रमान जुगभेद एव, परतच्छ परोछ राजै स्वमेव।

ता में प्रतच्छ के भेद दोय, पहिलो है संविवहार सोय।८।

ता के जुग भेद विराजमान, मति श्रुति सोहें सुन्दर महान।

है परमारथ दुतियो प्रतच्छ, हैं भेद जुगम ता माहिं दच्छ।९।
इक एकदेश इक सर्वदेश, इकदेश उभैविध सहित वेश।
वर अवधि सु मनपरजय विचार, है सकलदेश केवल अपार।१०।
चर अचर लखत जुगपत प्रतच्छ, निरद्वन्द रहित परपंच पच्छ।
पुनि है परोच्छमहँ पंच भेद, समिरति अरू प्रतिभिज्ञान वेद।११।
पुनि तरक और अनुमान मान, आगमजुत पन अब नय बखान।
नैगम संग्रह व्यौहार गूढ़, ऋजुसूत्र शब्द अरू समभिरूढ़।१२।
पुनि एवं भूत सु सप्त एम, नय कहे जिनेसुर गुन जु तेम।
पुनि दरव क्षेत्र अर काल भाव, निच्छेप चार विधि इमि जनाव।१३।
इनको समस्त भाष्यौ विशेष, जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश।
निज ज्ञानहेत ये मूलमन्त्र, तुम भाषे श्री जिनवर सु तन्त्र।१४।
इत्यादि तत्व उपदेश देय, हनि शेषकरम निरवान लेय।
गिरवान जजत वसु दरब ईस, 'वृन्दावन' नितप्रति नमत शीश।१५।

घत्ता-श्रेयांस महेशा सुगुन जिनेशा, वज्रधरेशा ध्यावतु हैं।
हम निशिदिन वन्दें पापनिकंदें, ज्यों सहजानंद पावतु हैं।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा:-जो पूजें मन लाय श्रेयनाथ पद पद्म को।
पावें इष्ट अघाय, अनुक्रम सों शिवतिय वरैं।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मुनिः षण्णवति कोटाकोटी षण्णवति कोटी षण्णवति लक्ष नव सहस्रपञ्चशत द्विचत्त्वारिंशत् संकुलकूटतः मोक्षंगतः तान्

चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री वासुपूज्य निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।

अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।

कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।

भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः वासुपूज्य जिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख स्वरूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, (सम्प्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या वासुपूज्यं जिनं नत्वा) उन वासुपूज्य भगवान को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं उन वासुपूज्य भगवान की स्तुति करुँगी।

आषाढ शुक्ल षष्ठ्यां शतभिषा भा मध्यमाश्रिते शशिनि।

आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा महाशुक्राधीशः।।३।।

वसुपूज्यनृपति तनयो भारतवास्ये चम्पापुर नगरे।

देव्यां प्रियजयावत्यां सुस्वप्नान् संप्रदशर्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (महाशुक्राधीशः) महाशुक्र विमान का स्वामी

(विभुः) वासुपूज्य का जीव (आषाढ शुक्ल षष्ठ्यां) आषाढ शुक्ल षष्ठी के दिन(शशिनि) चन्द्रमा (शतभिषाभामध्यम्-आश्रिते) शतभिषा नक्षत्र पर था तब (स्वर्ग सुखं भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (अंगेचम्पापुरी नगरे) अंग क्षेत्र के चम्पापुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रिय ज्यावत्यां) जयावती (देव्यां) देवी (नृपति वसुपूज्य-तनयः) वसुपूज्य राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

फाल्गुन वदि तारकायां वरूण योगे च दिने चतुर्दश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
तारकाश्रिते शशांके फाल्गुन वदि चतुर्दशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (फाल्गुन वदि-पक्ष-तारका वरूण योगे चतुर्दश्याम् दिने) फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन तारका नामक नक्षत्र और वरूण योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (तारका आश्रिते)तारका नक्षत्र था (फाल्गुन वदि) फाल्गुन वदि में वासुपूज्य का जन्म हुआ था (चतुर्दशी दिवसे) चतुर्दशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले तु लक्षवर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जात्याभिनिबोधितोत्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।

पुष्यभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनि:क्रान्त:।।८।।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्दश्यां भा मध्यमाश्रिते सोमे।

चतुर्बेलायां त्वपराण्हे, भक्तेन जिन: प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशि:) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे वासुपूज्य (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (अष्टादश लक्ष वर्षाणि) १८ लाख वर्ष (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (जात्याभिनिबोधित:) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरित:) तुरन्त(नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (पुष्याभाख्या शिविकाम्-आरूह्य) पुष्यभा नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांत:) चम्पापुर नगर से बाहर निकल गये। (फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी मध्यमाश्रिते सोमे) फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी के दिन जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था (चतुर्बेला-त्वराण्हे) एक उपवास का नियम लेकर अपरान्ह में जिनेश्वरी दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानै: एकवर्षाण्यमरै: पूज्य:।।१०।।

अन्वयार्थ- (अमरै: पूज्य:) देवों से पूज्य मुनिराज वासुपूज्य (उग्रै: तपोविधानै:) उग्र तपों के विधान से (एक-वर्षाणि) एक वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

क्रीडोद्यानस्यमध्ये कदम्बद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

अपराण्हे षष्टेनस्थितस्य चम्पापुरी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (क्रीडोद्यानस्य मध्ये) क्रीडा उद्यान के बीच में (चम्पापुरी ग्रामे) चम्पापुर नामक ग्राम के पास (कदम्बद्रुम संश्रिते शिलापट्टटे) कदम्ब वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह काल में दो दिन का उपवास ग्रहण कर विराजमान हो गये।

माघसित द्वितीयायां विशाखा भा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (माघसित-द्वितीयायां) माघ शुक्ल दूज के दिन (विशाखा भा मध्यम्-आश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ 6½ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान वासुपूज्य

(दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (चउपंचाशतून लक्षवर्षाणि) एक वर्ष कम ५४ लाख वर्ष (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं मंदार पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् सुधर्माप्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण के विसर्जन के पश्चात् (भगवान) वासुपूज्य भगवान (दिव्यं रम्यं मंदार पर्वतं सम्प्रापत्) मंदार गिरि पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (सुधर्मा प्रभृति) साथ में सुधर्म स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
मनोहरकूटोद्याने पद्मासनेन स्थितः सः मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे वासुपूज्य (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (मनोहर उद्याने) मनोहर कूटके उद्यानमें (पद्मासनेन स्थितः) पद्मासन से स्थित हो गये।

भाद्रसित चतुर्दश्यां अश्विनीऋक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामर मक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ- वे सकल परमात्मा(भाद्रसित चतुर्दश्यां) भाद्र शुक्ल चौदस के दिन(अश्विनीऋक्षे) अश्विन नक्षत्र के समय (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) जरा मरण से रहित अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) वासुपूज्य भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गताः भवने)वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव् वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति वासुपूज्य जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति वासुपूज्य जिन चंद्रे) वासुपूज्य (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को

भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्राहतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योग से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं

सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रवल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत से (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले

पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-(अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः

शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।१।।

अन्वयार्थ- शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या)शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णवसदणव णवदि कोडि सगसीदिलक्ख तिहत्तरिणवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि मंदार पव्वए भद्द मासस्स सुक्क चउदसीए अपराण्हे अस्सिनी णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो वासुपूज्यजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि

वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ- (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (णव णवदि लक्ख कोडि णव णवदि सहस्स कोडि णव सदणव णवदि कोडि सगसीदिलक्ख तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) ९९ लाख कोटी ९९ हजार कोठी ९९९ कोडी ८७७३९०० सागरोपम काल के व्यतीत हो जाने पर चौथे काल के शेष रहने पर (मंदारगिरि पव्वए भद्द मासस्स सुक्क चउदसीए अपराण्हे अस्सिनी णक्खत्ते पच्चूसे सिरी वासुपूज्ज भयवदो सिद्धिं गदो) मंदारगिरि पर्वत से भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन प्रातः काल अश्विनी नक्षत्र के रहते हुए श्री वासुपूज्य भगवान मंदार पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्हिहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं,

नमस्कार करते हैं, महाकल्याणक पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

वासुपूज्य भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद : रूप कवित्त)

श्रीमत् वासुपूज्य जिनवर पद, पूजन हेतु हिये उमगाय।
थापौं मन वच तन शुचि करके, जिनकी पाटलदेव्या माय।।
महिष चिन्ह पद लसे मनोहर, लाल वरन तन समतादाय।
सो करूनानिधि कृपादृष्टि करि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ इहं आय।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अष्टक

(छंद - जोगीरासा, आंचलीबंध)

गंगाजल भरि कनक कुंभ में, प्रासुक गंध मिलाई।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई।

वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई।
बाल ब्रह्मचारी लखि जिन को, शिव तिय सनमुख धाई।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

कृष्णागरू मलयागिर चंदन, केशरसंग घिसाई।
भवआताप विनाशन-कारन, पूजौं पद चित लाई।। वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व० स्वाहा।२।

देवजीर सुखदास शुद्ध वर सुवरन थार भराई।
पुंज धरत तुम चरनन आगे, तुरित अखय पद पाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।३।

पारिजात संतान कल्पतरू-जनित सुमन बहु लाई।
मीन केतु मद भंजनकारन, तुम पदपद्म चढ़ाई।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई।
बाल ब्रह्मचारी लखि जिन को, शिव तिय सनमुख धाई।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।४।

नव्य-गव्य आदिक रसपूरित, नेवज तुरत उपाई।
छुधारोग निरवारन कारन, तुम्हें जजौं शिरनाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।५।

दीपक जोत उदोत होत वर, दश-दिश में छवि छाई।
मोह तिमिर नाशक तुमको लखि, जजौं चरन हरषाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व०।६।

दशविध गंध मनोहर लेकर, वात होत्र में ढाई।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूप सु धूम उड़ाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।

सुरस सुपक्क सुपावन फल ले कंचन थार भराई।

मोक्ष महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरौं गुन गाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।

जल फल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरौं यह लाई।।वासु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।६।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

छंद पाईता-मात्रा १४

कलि छट्ट असाढ़ सुहायो, गरभागम मंगल पायो।
दशमें दिवि तें इत आये, शतइन्द्र जजें सिर नाये।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णाषष्ठयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासु० अर्घ्यं निर्व०।१।

कलि चौदस फागुन जानो, जनमो जगदीश महानो।
हरि मेरू जजे तब जाई, हम पूजत हैं चित लाई।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासु० अर्घ्यं निर्व०।२।

तिथि चौदस फागुन श्यामा, धरियो तप श्री अभिरामा।
नृप सुन्दर के पय पायो, हम पूजत अति सुख थायो।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्रीवासु० अर्घ्यं निर्व०।३।

सुदि माघ दोइज सोहे, लहि केवल आतम जोहे।
अनअंत गुनाकर स्वामी, नित वंदौं त्रिभुवन नामी।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञान मण्डिताय श्रीवासु० अर्घ्यं निर्व०।४।

सित भादव चौदस लीनो, निरवान सुथान प्रवीनो।
पुर चंपा थानक सेती, हम पूजत निज हित हेती।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्रीवासु०अर्घ्यं नि०।५।

जयमाला

दोहा :- चंपापुर में पंच वर-कल्याणक तुम पाय।

सत्तर धनु तन शोभनो, जै जै जै जिनराय।१।

छंद मोतियादाम - वर्ण १२

महासुखसागर आगर ज्ञान, अनंत सुखामृत मुक्त महान।
महाबलमंडित खंडितकाम, रमाशिवसंग सदा विसराम।२।
सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद, मुनिंद जजें नित पादारविंद।
प्रभू तुम अंतरभाव विराग, सु बालहि तें व्रतशील सों राग।३
कियो नहिं राज उदास सरूप, सु भावन भावत आतम रूप।
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त, चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त।४
अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय, जहां जिय भोगत कर्म विपाय।
निजातम को परमेसुर शर्न, नहीं इनके बिना आपद हर्न।५
जगत जथा जल बुदबुद येव, सदा जिय एक लहै फलमेव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, भ्रमे भवकानन आन न गेह।६
अपावन सात कुधात भरीय, चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय।
धरे तन सों जब नेह तबेव, सु आवत कर्म तबै वसुभेव।७
जबै तन-भोग-जगत्त-उदास, धरे तब संवर निर्जर आस।
करे जब कर्मकलंक विनाश, लहे तब मोक्ष महासुखराश।८
तथा यह लोक नराकृत नित्त, विलोकियते षट्द्रव्य विचित्त।
सु आतमजानन बोध विहीन, धरे किन तत्व प्रतीत प्रवीन।९
जिनागम ज्ञानरू संजम भाव, सबै निजज्ञान विना विरसाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव सबै जिस तें शिव हाल।१०
लयो सब जोग सु पुन्य वशाय, कहो किमि दीजिय ताहि गँवाय।
विचारत यों लौकान्तिक आय, नमे पदपंकज पुष्प चढ़ाय।११
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार, प्रबोधि सुयेम कियो जु विहार।
तबै सौधर्मतनों हरि आय, रच्यो शिविका चढ़िआय जिनाय।१२

धरे तप पाय सु केवलबोध, दियो उपदेश सुभव्य संबोध।
लियो फिर मोक्ष महासुखराश, नमें नित भक्त सोई सुख आश।१३

नित वासव वंदत, पापनिकंदत, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मपती।
भवसंकलखंडित, आनंदमंडित, जै जै जै जैवंत जती।१४

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - वासुपूजपद सार, जजों दरबविधि भाव सों।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्ति को जो परम।।

इत्याशीर्वादः(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

।। दोहा ।।

वासुपूज्य जिन सिद्ध भए, चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहुँ शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-जिनेंद्रादि चंपापुरात् मंदार गिरेः सहस्र मुनिः मोक्षंगतः तान् चरणान् योगैः अहं नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री विमलनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुंरवापैः विमलजिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत

हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या विमलजिनं नत्वा) भगवान विमलनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान विमलनाथ की मैं स्तुति करूँगी।

ज्येष्ठ कृष्ण दशम्यां उत्तराभाद्र मध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा सहस्त्राराधीशः।।३।।
कृतवर्मानृपति तनयो भारतवास्ये अंगकम्पिलापुरे।
देव्यां आर्यशामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (सहस्राराधीशः) सहस्रार विमान का स्वामी (विभुः) भगवान विमलनाथ का जीव (ज्येष्ठ कृष्ण-दशम्यां) ज्येष्ठ कृष्ण दशमी के दिन(शशिनि) चन्द्रमा (उत्तराभाद्र-मध्यम्-आश्रिते) उत्तराभाद्र नक्षत्र पर था तब (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (अंगकम्पिलापुरे) अंग क्षेत्र के कम्पिलापुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (आर्यशामायां) आर्यशामा (देव्यां) देवी और (कृतवर्मा नृपति-तनयः) कृत वर्मा राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

पौष मास सितोत्तराभाद्रे वरूणयोगे च शुभ चतुर्थ्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।
उत्तराश्रिते शशांके पौष ज्योत्सने चतुर्थी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (पौष सित उत्तराभाद्र पद वरूणयोगे दिने चतुर्थ्याम्) पौष मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी के दिन जब उत्तराभाद्र नामक नक्षत्र और वरूण योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके उत्तराभाद्राश्रिते) चन्द्रमा उत्तराभाद्र पद नक्षत्र पर था (पौषसित ज्योत्सने) पौष शुक्ल की शुभ बेला में विमलनाथ का जन्म हुआ था (चतुर्थी दिवसे) चतुर्थी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से उन विमलनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशाबोधितो त्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
देवदत्ताख्यशिविका मारूह्य पुराद्विनिक्रान्तः॥८॥
पौष शुक्ल चतुर्थ्यां भाद्रोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे विमलनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (पंचविंशति सहस्राणि वर्षाणि) २५ हजार वर्ष पूर्व काल तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (मेघनाशा अभिनिबोधितः) मेघनाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्)

मणियों से विभूषित ऐसी (देवदत्ताख्य शिविकाम्-आरूह्य) देवदत्त नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) कम्पिला नगर के बाहर निकल गये (पौष-शुक्ल-चतुर्थी-भाद्रोत्तर-मध्यमाश्रिते सोमे) पौष मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के दिन जब चन्द्रमा उत्तराभाद्रपद पर था। उन्होंने (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) दो दिनों का उपवास लेकर अपरान्ह में जिनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः खलुत्रिवर्षाण्यमरैः पूज्यः।।१०।।

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज विमलनाथ(उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (त्रि-वर्षाणि) तीन वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये जम्बुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु कम्पिलाग्रामे।।११।।

अन्वयार्थ-(सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में (खलु कम्पिलाग्रामे) कम्पिला ग्राम के पास (जम्बुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) जम्बुवृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह बेला का नियम ग्रहण कर विराजमान हो गए।

माघ शुक्ल षष्ठ्यां तु उत्तराषाढा नक्षत्रे चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ-(माघ शुक्ल षष्ठ्यां) माघ शुक्ल षष्ठी के दिन

(उत्तराषाढ मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा उत्तराषाढ नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ-वहाँ ६ योजन समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- केवलज्ञानी (जिनेंद्रः) भगवान विमलनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मम्) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (पंचदशऊनलक्ष) ३ वर्ष कम १५ लाख वर्ष (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् जयगण प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) धर्मसभा की समाप्ति के पश्चात् (भगवान) भगवान विमलनाथ (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (श्रीजयगण प्रभृति) साथ में श्री जयगण स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्)

मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

सुवीरकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे विमलनाथ (पद्मवन-दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम-खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (सुवीर कूटोद्याने) सुवीरकूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

आषाढवदि अष्टम्यां उत्तराऋक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- वे सकल परमात्मा(अषाढ वदि अष्टम्यां) आषाढ शुक्ल अष्टमी के दिन (उत्तरात्रृक्षे) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधहयथाशु चागम्य।

देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) विमलनाथ जिनेन्द्र को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी ''अग्नीन्द्र'' के (मुकुट-अनल-

सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप तथा उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (गता दिवं खं च-वन भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति विमल जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति विमलजिन चंद्रे) भगवान विमलनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत मोक्ष (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हन्तों की तीर्थंकरों की, गणधरों की, श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः)

उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योग से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।

ये साधवोहतमला: सुगतिं प्रयाता:,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षा: पण्डो: सुता:) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेता:) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहित: बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुड़्.गगिरि से तथा (जितरिपु: सुवर्णभद्र:) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्या: तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रवल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधव:) जो साधु (हतमला:) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाता:) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षो:

विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरूषैः उषितानि) महापुरूषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष को प्राप्त कराने वाले हों।

-क्षेपक श्लोक -

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश

में पैदा हुए हैं।

– अंचलिका –

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडि सागरोवम सत्तरह लक्ख तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए आसाढकिण्ह अट्ठमीए अपराण्हे पुव्व भद्दपदे णक्खत्ते भयवदो विमल जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ – (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी सत्तरह लक्ख तिहत्तरि णवसद सागरोवम) १०० लाख कोटी १७७३९०० सागरोपम वर्ष काल (वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) व्यतीत हो जाने पर शेषकाल रहने पर (सम्मेए पव्वए आसाढ किण्ह अट्ठमीए अपराण्हे पुव्व भद्दे णक्खत्ते भयवदो विमलजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर आषाढ

मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन पूर्व भाद्रपद नक्षत्र के रहते हुए अपरान्ह काल में भगवान विमलनाथ निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

विमलनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद)

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय।
कृतधर्मानृपनन्द, मातु जयसेना धर्मप्रिय।

तीन लोक वर नन्द, विमल जिन विमल विमलकर।
थापौं चरन सरोज, जजन के हेतु भाव धर।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

इति (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अष्टक
(सोरठा)

कंचन झारी धारि, पदमद्रह को नीर ले।
तृषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

मलयागर करपूर देववल्लभा संग घसि।
हरि मिथ्यातमभूर, विमल विमलगुन जजतु हौं।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

वासमती सुखदास, स्वेत निशपति को हँसे।
पूरे वाँछित आस, विमल विमलगुन जजत ही।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

पारिजात मंदार, संतानक सुरतरू जनित।
जजौं सुमन भरि थार, विमल विमलगुन मदनहर।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

नव्य गव्य रसपूर, सुवरण थाल भरायके।
छुधावेदनी चूर, जजौं विमलपद विमलगुन।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

माणिक दीप अखण्ड, गो छाई वर गो दशो।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमति के धनी।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

अगरू तगर घनसार, देवदारू कर चूर वर।
खेवौं वसु अरि जार, विमल विमल पद पद्म ढिग।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने।
जजौं विमलपद सार, विघ्न हरें शिवफल करें।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

आठों दरब संवार, मनसुखदायक पावने।
जजौं अरघ भर थार, विमल विमल शिवतिय रमण।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली
(छंद द्रुतिविलम्बित तथा सुन्दरी-वर्ण १२)

गरभ जेठ बदी दशमी भनो, परम पावन सो दिन शोभनो।
करत सेव सची जननीतणी, हम जजें पद पद्म शिरोमणी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णादशम्यां गर्भमंगल प्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्रायअर्घ्यं १।।

शुक्लमाघ तुरी तिथि जानिये, जनम मंगल तादिन मानिये।
हरि तबै गिरिराज विषै जजे, हम समर्चत आनन्द को सजे।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्री विमल०अर्घ्यं नि०।।२।।

तप धरे सित माघ तुरी भली, निज सुधातम ध्यावत है रली।
हरि फनेश नरेश जजें तहां, हम जजें नित आनन्द सों इहां।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्री विमल० अर्घ्यं नि०।।३।।

विमल माघरसी हनि घातिया, विमलबोध लयो सब भासिया।

विमल अर्घ चढ़ाय जजौं अबै, विमल आनन्द देहु हमें सबै।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठयां केवलज्ञानमंगल प्राप्ताय श्री विमल० अर्घ्यं नि०।।४।।

भ्रमरसाढ़ छटी अति पावनो विमल सिद्ध भये मन भावनो।
गिरसमेद हरी तित पूजिया, हम जजैं इत हर्ष धरैं हिया।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णाषष्ठयां मोक्षमंगल प्राप्ताय श्री विमल०अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

(दोहा)

गहन चहत उड़गन गगन, छिति तिथि के छहूँ जेम।
तुम गुन-वरनन वरननि, मौंहि होय तब केम।१।
साठ धनुष तन तुंग है, हेम वरन अभिराम।
वर वराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करौं प्रनाम।२।

छन्द त्रोटक-वर्ण १२

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी, तुम ध्यावत शेष महेश मुनी।
परमातम पूरन पाप हनी, चितचिंततदायक इष्ट धनी।३।
भव आतपध्वंसन इन्दुकरं, वर सार रसायन शर्मभरं।
सब जन्म जरा मृतु दाहहरं, शरनागत पालन नाथ वरं।४।
नित सन्त तुम्हें इन नामनि तें, चित चिन्तन हैं गुनमाननितैं।
अमलं अचलं अटलं, अतुलं, अरलं अछलं अथलं अकुलं।५।
अजरं अमरं अहरं अडरं, अपरं अभरं अशरं अनरं।
अमलीन अछीन अरीन हने, अमतं अगतं अरतं अघने।६।
अछुधा अतृषा अभयातम हो, अमदा अगदा अवदातम हो।
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना, अतलं असलं अनअन्त गुना।७।
अरसं सरसं अकलं सकलं, अवचं सवचं अमचं सबलं।
इन आदि अनेक प्रकार सही, तुमको जिन सन्त जपें नित ही।८।

अब मैं तुमरी शरना पकरी, दुख दूर करो प्रभुजी हमरी।
हम कष्ट सहे भवकानन में, कुनिगोद तथा थल आनन में।९।
तित जामन मर्न सहे जितने, कहि केम सकें तुम सों तितने।
सुमुहूरत अन्तरमाहिं धरे, छह त्रै त्रय छः छहकाय खरे।१०।
छिति वह्नि वयारिक साधरनं, लघु थूल विभेदनि सों भरनं।
परतेक वनस्पति ग्यार भये, छ हजार दुवादश भेद लये।११।
सब द्वै त्रय भू षट छः सु भया, इक इन्द्रिय की परजाय लया।
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो, तिय इन्द्रिय साठनि में रहियो।१२।
चतुरिंद्रिय चालिस देह धरा, पनइन्द्रिय के चवबीस वरा।
सब ये तन धार तहाँ सहियो, दुखघोर चितारित जात हियो।१३।
अब मो अरदास हिये धरिये, दुखदंद सबै अब ही हरिये।
मनवांछित कारज सिद्ध करो, सुखसार सबै घर रिद्ध भरो।१४।

घत्ता- जय विमलजिनेशा नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा।
भवताप अशेषा, हरन निशेशा, दाता चिन्तित शर्म सदा।१५।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।दोहा।।

श्रीमत विमल जिनेशपद, जो पूजें मनलाय।
पूरें वांछित आश तसु, मैं पूजौं गुनगाय।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

विमलनाथ जिनराज का, कूट सुवीर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः सप्तति कोटाकोटी षष्टीः लक्ष षट्र सहस्त्र सप्तशतद्विचत्त्वारिंशत् सुवीरकूटतः मोक्षंगतः तानहं चरणान् योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री अनंतनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुर्रवापैः अनंतजिनं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या अनंतजिनं नत्वा) भगवान अनंतनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन अनंतनाथ की मैं स्तुति करूँगी।

कार्तिक प्रतिपदायां रेवती भामध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा पुष्पोल्त्तराधीशः ॥३॥
सिंहसेन नृपति तनयो भारतवास्ये साकेतजनपुरे।
देव्यां सर्वयशायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (पुष्पोत्तराधीशः) पुष्पोत्तर विमान का स्वामी (विभुः) भगवान अनंतनाथ का जीव (कार्तिक कृष्ण प्रतिपादायां)

कार्तिक वदि प्रतिपदा के दिन (शशिनि) चन्द्रमा के (रेवती-भा मध्यम्-आश्रिते) रेवती नक्षत्र के मध्य में स्थित होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कौशल साकेतपुरे) कौशल क्षेत्र के साकेतपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (सर्वयशायां) सर्वयशा (देव्यां) देवी (सिंहसेन-नृपति-तनयः) सिंहसेन राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

ज्येष्ठ कृष्ण रेवत्यां पुष्ययोगे दिने द्वादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।
रेवत्याश्रिते ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे द्वादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष रेवती द्वादशी दिवसे) ज्येष्ठ वदि बारस के दिन रेवती नामक नक्षत्र था (पुष्ययोगे दिने द्वादश्याम्) पुष्ययोग और द्वादशी का दिन था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (ज्येष्ठ ज्योत्सने) ज्येष्ठ माह की शुभ बेला में अनंतनाथ का जन्म हुआ था (द्वादशी-दिवसे) बारस के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से अभिषेक किया था।

भुक्त्वा कुमार काले खलु लक्ष वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विधुत्पाता बोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
सागरदत्ताशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश्यां रेवती भा मध्यमाश्रिते सोमे।

अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे अनंत नाथ (कुमार काले) कुमार अवस्था में ७ लाख वर्ष तक (अमर-उपनीत) देवों के द्वारा लाये गये (भोगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोगकर (विद्युत्पातः अभिनिबोधितः) विद्युत्पात को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नाना विधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (सागरदत्ता शिविकाम्-आरूह्य) सागरदत्त पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) साकेतपुर नगर के बाहर निकल गये (ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी-रेवतीभा मध्यम्-आश्रिते सोमे) ज्येष्ठ वदि बारस के दिन जब चन्द्रमा रेवती नक्षत्र पर था उन्होंने (अष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) तेला का नियम लेकर अपरान्ह काल में जिनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानैः द्विवर्षाणिदिनामरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज अनंतनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (द्वि-वर्षाणि दिनानि) दो वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये पिप्पल संश्रिते शिलापट्टे।

अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु अयोध्या ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच (खलु अयोध्या ग्रामे) अयोध्या ग्राम के पास (पिप्पल संश्रिते शिलापट्टे) पीपल वृक्ष के नीचे शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह में बेला का नियम लेकर विराजमान हो गये।

चैत्र कृष्ण अमावस्यां रेवती भामध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (चैत्र कृष्ण अमावस्यां) चैत्र अमावस के दिन (रेवती भा मध्यम्-आश्रिते) जब चन्द्रमा रेवती नक्षत्र पर था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ ५ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं पंचसप्तति बहुलक्षवर्षाणि जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान अनंतनाथ(दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा

रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (पंचसप्तति बहुलक्षवर्षाणि) २ वर्ष कम पचहत्तर लाख वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूदनगार प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) धर्म सभा की समाप्ति के पश्चात् विहार करते हुए (भगवान) अनन्तनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (अनगार प्रभृतिः) साथ में अनगार स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

स्वयंप्रभकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनि॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे अनंतनाथ (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (स्वयंप्रभ कूटोद्याने) स्वयंप्रभ कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

चैत्र मासामावस्या रेवती ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- वे सकल परमात्मा(चैत्र कृष्ण अमावस्या) चैत्र कृष्ण अमावस के दिन (रेवती नक्षत्रे) रेवती नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) अनंतनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति अनंत जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति अनंतजिन चंद्रे) भगवान अनंतनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा)

उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योग से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के तलभाग से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति

अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरूषैः उषितानि) महापुरूषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
तेमे जिना जितभया मुनयश्च शांताः,
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्यार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-(अर्हतां शमवतांचमहामुनीनां) तीर्थंकर जिन, और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शान्ताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शान्त मुनिराज (मे)

मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासुः) निर्दोष सुख से युक्त, उत्तम मोक्ष प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रतनाथ (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी छब्बीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत किण्ह पण्णरसीए पुव्वण्हे रेवती णक्खत्ते भयवदो अणंत जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) अवसर्पिणी काल के चौथे काल के मध्य भाग में (सदलक्ख कोडी छब्बीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम) १०० लाख कोडी २६७३९०० सागरोपम वर्ष काल (वास चउकम्मि सेसकालम्मि) चौथे काल के व्यतीत हो जाने पर (सम्मेए पव्वए चइतमासस्स किण्ह पण्णरसीए पुव्वण्हे) सम्मेद शिखर पर्वत से चैत्र अमावस्या के दिन प्रातः काल (रेवती णक्खते पच्चूसे भयवदो अणंतजिणों सिद्धिं गदो) रेवती नक्षत्र के रहते हुए भगवान अनंतनाथ मुक्ति को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में जो भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिषी, कल्पवासी इस प्रकार चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती

हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ, (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

अनंतनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद कवित्त)

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या जनम लियो सूर्या उर आय,
सिंहसेन नृप के तुम नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय।
गुन अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय,
थापतु हौं त्रय बार उचरि के, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद गीता तथा हरिगीता)

शुचि नीर निरमल संग को ले, कनक भृंग भराइया।
मलकरम धोवन हेत, मन वच काय धार ढराइया।।
जगपूज परम पुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो।
शिव कंत वंत महंत ध्यावौं, भ्रंत वन्त नशावनो।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

हरिचन्द कदलीनंद कुंकुम, दंद ताप निकंद है।

सब पापरूजसंताप भंजन, आपको लखि चंद है। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

कनशाल दुति उजियाल हीर, हिमाल गुलकनि तें घनी।

तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

पुष्कर अमरतर जनित वर, अथवा अवर कर लाइया।

तुम चरन-पुष्करतर धरत, सरशूर सकल नशाइया। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

पकवान नैना घ्रान रसना, को प्रमोद सुदाय हैं।

सो ल्याय चरन चढ़ाय रोग, छुधाय नाश कराय हैं। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

तममोह भानन जानि आनन्द, आनि सरन गही अबै।

वर दीप धारौं वारि तुम ढिग, स्व-पर-ज्ञान जु द्यो सबै। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

यह गंध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्रध्वज में खेय हौं।

वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निज सुधातम वेय हौं। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

रसथक्व पक्व सुभक्व चक्व, सुहावने मृदु पावने।

फलसार वृन्द अमंद ऐसो, ल्याय पूज रचावने। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरू दीवा धरौं।

अरू धूप फल जुत अरघ करि, करजोरजुग विनति करौं। ज०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तयें अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली

(छंद सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित)

असित कार्तिक एकम भावनो, गरभ को दिन सो गिन पावनो।
किये सची तित चर्चन चाव सों, हम जजें इत आनन्द भाव सों।।
ॐ ह्रीं श्रीकार्तिक कृष्णाप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथ०अर्घ्यं नि०।।१।।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकल मंगल लोकविषै लशी।
हरि जजे गिरिराज समाज तें, हम जजें इत आतम काज ते।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण द्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअनंत० अर्घ्यं नि०।।२।।

भव शरीर विनस्वर भाइयो, असित जेठ दुवादशि गाइयो।
सकल इंद्र जजें तित आइके, हम जजें इत मंगल गाइके।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण द्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अनंत०अर्घ्यं नि०।।३।।

असित चैत अमावस को सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही।
लही समोसृत धर्म धुरंधरो, हम समर्चत विघ्न सबै हरो ।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण चतुर्दश्यां केवल ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअनंत०अर्घ्यं नि०।।४।।

असित चैत अमावस गाइयो, अघत घाति हने शिव पाइयो।
गिरि समेद जजें हरि आय के, हम जजें पद प्रीति लगाय के।
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनंत० अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

-दोहा-

तुम गुण वरनन येम जिम, खंविहाय करमान।
तथा मेदिनी पदनिकरि, कीनो चहत प्रमान।।१
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलज वृन्दविहँसाय।
सुमति कोकतिय थोक सुख, वृद्ध किये जिनराय।।२

(छंद नयनमालिनी, चंडी तथा तामरस मात्रा १६)

जै अनन्त गुनवन्त नमस्ते, शुद्ध ध्येय नित सन्त नमस्ते।

लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते।३।
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरि कीर नमस्ते।
चार अनंत महन्त नमस्ते, जय जय शिवतियकंत नमस्ते।४।
पंचाहार विचार नमस्ते, पंच करण मदहार नमस्ते।
पंच पराव्रत-चूर नमस्ते, पंचमगति सुखपूर नमस्ते।।५।
पंचलब्धि-धरनेश नमस्ते, पंच-भाव-सिद्धेश नमस्ते।
छहों दरब गुनजान नमस्ते, छहों काल पहिचान नमस्ते।६।
छहों काय रच्छेश नमस्ते, छह सम्यक उपदेश नमस्ते।
सप्तव्यसनवनवह्नि नमस्ते, जय केवल अपरह्नि नमस्ते।७।
सप्ततत्व गुनभनन नमस्ते, सप्त श्वभ्रगति हनन नमस्ते।
सप्तभंग के ईश नमस्ते, सातों नय कथनीश नमस्ते।८।
अष्टकरम मलदल्ल नमस्ते, अष्टजोग निरशल्ल नमस्ते।
अष्ट धराधिराज नमस्ते, अष्ट गुननि सिरताज नमस्ते।९।
जय नवकेवल प्राप्त-नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते।
दशों धरम धरतार नमस्ते, दशों बंधपरिहार नमस्ते।१०।
विघ्न महीधर विज्जु नमस्ते, जय ऊरधगति रिज्जु नमस्ते।
तन कनकंदुति पूर नमस्ते, इक्ष्वाकु वंश गन सूर नमस्ते।११।
धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते।
सेही अंक निशंक नमस्ते, चितचकोर मृग अंक नमस्ते।१२।
राग दोषमदटार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते।
सुर-सुरेश-गन-वृन्द-नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते।१३।

छंद घत्तानंद

जय जय जिनदेवं सुरकृतसेवं, नित कृतचित्त हुल्लासधरं।
आपद उद्धारं समतागारं, वीतराग विज्ञान भरं।१४।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क

जो जन मन वच काय लाय, जिन जजे नेह धर,
वा अनुमोदन करे करावे पढ़े पाठ वर।
ताके नित नव होय सुमंगल आनन्द दाई,
अनुक्रम तें निरवान लहे सामग्री पाई।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

दोहा

अनंतनाथ जिनराज का, कूट स्वयंभू वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः षण्णवति कोटाकोटिः सप्तति कोटिः सप्तति लक्ष सप्तति सहस्र सप्तशत मुनिः स्वयंभू कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्र्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री धर्मनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुर्रवापैः धर्म जिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत

हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या धर्मं जिनं नत्वा) भगवान धर्मनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान धर्मनाथ की मैं स्तुति करुँगी।

वैशाख त्रयोदश्याम् रेवती भामध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः॥३॥
भानुनृपति तनयो भारतवास्ये रत्नपुरी नगरे।
देव्यां प्रियसुप्रभायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (सर्वार्थाधीशः) सर्वार्थसिद्धि विमान का स्वामी (विभुः) भगवान धर्मनाथ का जीव (बैशाख-त्रयोदश्याम्) बैशाख शुक्ल त्रयोदशी के दिन(शशिनि) चन्द्रमा (रेवती-भामध्यम्-आश्रिते) रेवती नक्षत्र के मध्य स्थित था (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (रत्नपुरी नगरे) रत्नपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रिय सुप्रभायां) सुप्रभा (देव्यां) देवी (भानु नृपति तनयः) भानुकुमार राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

पौष सित पुष्य शशांक योगे दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभ लग्ने॥५॥
पुष्याश्रिते शशांके पौष ज्योत्सने त्रयोदशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (पौष शुक्ल पुष्य शशांके योगे त्रयोदश्याम्

दिने) पौष मास शुक्ल पक्ष तेरस के दिन जब पुष्य नक्षत्र और चंद्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके पुष्याश्रिते) चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र पर था (पौष ज्योत्सने) पौष की शुभ बेला में धर्मनाथ का जन्म हुआ था(त्रयोदशी दिवसे) तेरस के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राःरत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय कलशों से उन धर्मनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विद्युत्पाता बोधितोत्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
नागदत्ताशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः॥८॥
पौष शुक्ल पुष्य भानि मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे धर्मनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में २५० हजार वर्ष तक (अमर-उपनीत) देवों के द्वारा लाये गये (भेगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोगकर (विद्युत्पाता अभिनि बोधितः) विद्युत्पात को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त(नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (नागदत्ताख्य शिविकाम्-आरूह्य) नागदत्ता नामक पालकी पर आरोहरण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) रत्नपुर नगर से बाहर निकल गये

(पौष शुक्ल पुष्यभानि मध्यमाश्रिते सोमे) पौष माह शुक्ल पक्ष की एकम के दिन जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र पर था, उन्होंने (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) दो दिन के उपवास का नियम लेकर अपरान्ह काल में जिनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः एकवर्षाण्यमरैः पूज्यः।।१०।।

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज धर्मनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (एक-वर्षाणि) एक वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे अष्टेन स्थितस्य खलु रत्नपुरी ग्रामे।।११।।

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में (खलु रत्नपुर ग्रामे) रत्नपुर नामक नगर के पास (शालद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शाल वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे अष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह काल में तीन उपवास का नियम लेकर विराजमान हो गये।

पौषसित पूर्णिमायां पुष्य भानिमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ- (पौषसित पूर्णिमायां) पौष शुक्ल पूर्णिमा के दिन (पुष्य भानिमध्यमाश्रिते चन्द्रे) जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र पर था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक श्रेणी

पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ- वहाँ ५ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं खलु लक्षवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान धर्मनाथ(दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (द्वयर्ध ऊन लक्ष वर्षाणि) १ वर्ष कम ढाई लाख वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् सेनगण प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण की समाप्ति के पश्चात् (भगवान) भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (सेनगण प्रभृतिः) साथ में सेनगण स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सुदत्त कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे धर्मनाथ (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (सुदत्तकूटोद्याने) सुदत्तवरकूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थ्यां पुष्य नक्षत्रे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ-(ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थ्यां) ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी (पुष्य नक्षत्रे) पुष्य नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के

द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति श्रीधर्म जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति धर्मजिन चंद्रे) धर्मनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।२१।।

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं

(भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥

द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥

सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,

स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुड्.िगगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः

विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में, महावीरजी नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोपम वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए जेट्ठ मासस्स सुक्क चउत्थीए पुव्वण्हे पुस्स णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो धम्म जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) १०० लाख कोडी ३०७३९०० सागर व्यतीत हो जाने पर तथा चौथे काल के शेष समय रहने पर (सम्मेए पव्वए जेट्ठ मासस्स सुक्क चउत्थीए पुव्वण्हे पुस्स णक्खत्ते भयवदो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से जेठ सुदी चतुर्थी के दिन प्रातः

काल पुष्य नक्षत्र के रहते हुए धर्मनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंस्संति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होऊ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

श्रीधर्मनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

माधवी तथा किरीद छन्द (७ सगण व गुरू)

तजि के सरवारथ सिद्धि विमान, सुभान के आनि आनन्द बढ़ाये।
जगमात सुव्रति के नन्दन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाये।
जिनके गुन नामहिं माहिं प्रकाश है, दासनि को शिवस्वर्ग मँढ़ाये।

तिनके पद पूजन हेत त्रिबार, सुथापतु हौं यह फूल चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

मुनि मन सम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी।
जनमजरामृत ताप हरन को, चरचौं चरन तुम्हारी।।
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी।।
पूजौं पाय गाय गुन सुन्दर नाचौं दे दे तारी।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

केशर चन्दन कदली नन्दन, दाहनिकन्दन लीनो।
जलसंग घस लसिशसिसम शमकर, भव आताप हरीनो ।।परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुंज धंरत आनन्द भरत भव, दंद हरत हरषायो ।।परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

सुमन सुमन सम सुमणि थाल भर, सुमनवृन्द विहंसाई ।
सुमन्मथ-मद-मंथन के कारन, अरचौं चरन चढ़ाई ।।परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

घेवर बावर अर्द्ध चन्द्र सम, छिद्र सहस विराजे ।
सुरस मधुर ता सों पद पूजत, रोग असाता भाजै ।।परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

सुन्दर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगे ।

नेह सहित गाऊँ गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागे ॥परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

अगर तगर कृष्णागर तव दिव हरिचन्दन करपूरं ।

चूर खेय जलजवन मांहि जिमि, करम जरें वसु कूरं ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई ।

सो ले तुम ढिग धरहुँ कृपानिधि, देहु मोच्छ ठुकराई ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई ।

बाजत दृमदृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥परम०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली(राग टप्पा की, चाल-खोयो रे गंवार)

पूजौं हो अबार, धरम जिनेसुर पूजौं ॥ टेक ।

आठैं सित बैशाख की हो, गरभ दिवस अधिकार।

जगजन वांछित पूर को, पूजौं हो अबार ॥ धरम०

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल अष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीधर्म०जि०अर्घ्यं निर्व०।१।

शुकल माघ तेरसि लयो हो, धरम धरम अवतार।

सुरपति सुरगिर पूजियो, पूजौं हो अबार॥धरम०

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल त्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीधर्म०जि०अर्घ्यं निर्व०।२।

माघ शुक्ल तेरस लयो हो, दुर्द्धर तप अविकार।

सुरऋषि सुमनन तें पूजें, पूजौं हो अबार॥धरम०

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल त्रयोदश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीधर्म०जि०अर्घ्यं निर्व०।३।

पौष शुक्ल पूनम हने अरि, केवल लहि भवितार।

गण-सुर-नरपति पूजिया, पूजौं हो अबार॥धरम०

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल पूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीधर्म०जि०अर्घ्यं निर्व०।४।

जेठ शुक्ल तिथि चौथ की हो, शिव समेद तें पाय।

जगतपूज्यपद पूजहूँ, पूजों हो अबार ।। धरम०

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थ्यांमोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्म०जि०अर्घ्यं निर्व०।५।

जयमाला

दोहा- घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत।

लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत।१।

छन्द पद्धरी

जय धरमनाथ जिन गुनमहान, तुम पद को मैं नित धरौं ध्यान।

जय गरभ जनम तप ज्ञानयुक्त, वर मोच्छ सुमंगल शर्म-भुक्त।२।

जय चिदानन्द आनन्दकन्द, गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमन्द।

तुम जीवनि के बिनु हेतु मित्त, तुम ही हो जग में जिन पवित्त।३।

तुम समवसरण में तत्वसार, उपदेश दियो है अति उदार।

ता को जे भवि निजहेत चित्त, धारें ते पावें मोच्छवित्त।४।

मैं तुम मुख देखत आज पर्म, पायो निज आतमरूप धर्म।

मो कों अब भवदधि तें निकार, निरभयपद दीजे परमसार।५।

तुम सम मेरो जग में न कोय, तुमही ते सब विधि काज होय।

तुम दया धुरन्धर धीर वीर, मेटो जगजन की सकल पीर।६।

तुम नीतिनिपुन विन रागरोष, शिवमग दरसावतु हो अदोष।

तुम्हरे ही नामतने प्रभाव, जगजीव लहें शिव-दिव-सुराव।७।

ता तें मैं तुमरी शरण आय, यह अरज करतु हौं शीश नाय।

भवबाधा मेरी मेट मेट, शिवराधा सों करौं भेंट भेंट।८।

जंजाल जगत को चूर चूर, आनन्द अनूपम पूर पूर।

मति देर करो सुनि अरज एव, हे दीनदयाल जिनेश देव।९।

मो कों शरना नहिं और ठौर, यह निहचै जानो सुगुन मौर।
'वृन्दावन' वंदत प्रीति लाय, सब विघन मेट हे धरम-राय।१०।

छन्द घत्तानंद

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं, श्रीजिनधर्मं उपदेशा।
तुम दयाधुरंधर विनतपुरन्दर, कर उरमन्दर परवेशा।११।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजे भव।
ता के दुख सब मिटहिं, लहे आनन्द समाज सब।।
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रम तें शिव जावे।
ता तें 'वृन्दावन' यह जानि, धरम-जिन के गुन ध्यावे।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

धर्मनाथ जिनराज का, कूट सुदत्त वर जेह।
मन वच तन कर पूजहुँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नवविंशति कोटाकोटी एकोनविंशति कोटी नव लक्ष नव सहस्र सप्तशत पण्णवति सुदत्तवर कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री शांतिनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुरवापैः शान्ति जिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती,

कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या शान्तिजिनं नत्वा) भगवान शान्तिनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान शान्तिनाथ की मैं स्तुति करुँगी।

भाद्र कृष्ण सप्तम्यां भरणी भामध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः।।३।।
विश्वसेन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरुहस्तिनापुरे।
देव्यां प्रियऐरायां सुस्वप्नान् संप्रदश्र्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (सर्वार्थाधीशः) सर्वार्थ सिद्धि विमान का स्वामी (विभुः) भगवान शांतिनाथ का जीव (भाद्रपद-कृष्ण-सप्तम्यां) भाद्र कृष्ण सप्तमी के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (भरणी-भा मध्यम्-आश्रिते) भरणी नक्षत्र पर स्थित होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कुरू हस्तिनापुरे) कुरू क्षेत्र के हस्तिनापुर में (सु-स्वप्नान् संप्रदश्र्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियऐरायां) प्रिय ऐरा (देव्यां) देवी और (विश्वसेन-नृपति-तनयः) विश्वसेन राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

ज्येष्ठ वदि भरण्याश्रिते शशांक योगे दिने चतुर्दश्याम्।

जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।

भरण्याश्रिते शशांके ज्येष्ठ कृष्णे चतुर्दशी दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (ज्येष्ठ कृष्ण भरण्याश्रिते शशांकयोगे चतुर्दश्याम्) ज्येष्ठ वदि चतुर्दशी के दिन जब चन्द्रमा भरणी नक्षत्र पर था और चंद्रयोग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च्व स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न में शांतिनाथ का जन्म हुआ था (चतुर्दशी दिवसे) चतुर्दशी के दिन (पूर्णण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले अनेक वर्षाण्यनंत गुणराशिः।

अमरोपनीत भोगान् जाति स्मरण बोधितोत्वरितः।।७।।

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।

सिद्धार्थाख्याशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थ्याम् भरणी भामध्यमाश्रिते सोमे।

अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे शांतिनाथ (कुमार काले) कुमार अवस्था में २५ हजार वर्ष (अमर-उपनीत) देवों के द्वारा लाये गये (भोगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोगकर (जाति स्मरण अभिनि बोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये। तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (सिद्धार्थाख्य

शिविकाम्-आरूह्य) सिद्धार्थ पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) हस्तिनापुर नगर से बाहर निकल गये (ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्थ्याम्-भरणी-भामध्यमाश्रिते सोमे) ज्येष्ठ चतुर्थी के शुभ दिन चंद्रमा भरणी नक्षत्र पर था (अष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) तेला का नियम ले अपरान्ह में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज शांतिनाथ(उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (षोडस-वर्षाणि) सोलह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये नन्दीद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन खलु हस्तिनिकट ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में (खलु हस्ति निकट ग्रामे) हस्तिनापुर के निकट (नंदीद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) नंदी वृक्ष के नीचे शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठोपवासस्य) अपरान्ह में बेला का नियम ले विराजमान हो गये।

पौषसित एकादश्यां भरणीभा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (पौष शुक्ल एकादश्यां) पौष शुक्ल एकादशी के दिन(भरणी भामध्यमाश्रिते चंद्रे) भरणी नक्षत्र पर चंद्रमा था

तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ ४ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान शांतिनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (पंचविंशति सहस्रऊन वर्षाणि) १६ वर्ष कम २५ हजार वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् चक्राय प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) धर्मोपदेश समाप्ति के पश्चात् (भगवान) भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (चक्रायुध प्रभृतिः) साथ में चक्रायुध स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि,

आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

कुन्द प्रभ कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (कुन्द प्रभ कूटोद्याने) कुन्द प्रभ कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां भरण्यामृक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- (ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्यां) ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी के दिन (भरण्यामृक्षे) भरणी नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।

देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) शांतिनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः)

मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति शीतल जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति शांतिजिन चंद्रे) भगवान शांतिनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।२१।।

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः)

उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की आदर सहित परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।

ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः

विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्।।२७।।

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः।।१।।

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में हैं (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश

में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडि पोण पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोपम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए जेट्ठ किण्ह चउदसीए पुव्वण्हे भरणी णक्खत्ते भयवदो संतिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय-वाणविंतर जीयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुन्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी पोणपल्लऊण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउकम्मि सेसकालम्मि) १०० लाख कोडी पोन पल्य कम ३३७३९०० वर्ष व्यतीत हो जाने पर चौथे काल के शेष समय रहने पर (सम्मेए पव्वए जेट्ठ किण्ह चउदसीए पुव्वण्हे भरणी णक्खत्ते

भयवदो सांतिजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष की चौदस के दिन प्रातः काल भरणी नक्षत्र के रहते हुए शांतिनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति बंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि की प्राप्ति हो, सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

शांतिनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद)

या भव कानन में चतुरानन, पाप पनानन घेरि हमेरी।

आतम जानन मानन ठानन, बान न होन दई सठ मेरी।
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आनन टेरी।
आन गही शरनागत को, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद त्रिभंगी, अनुप्रयासक-मात्रा१२ जगण वर्जित)

हिमगिरि गतगंगा, धार अभंगा, प्रासुक संगा, भरि भृंगा।
जर-जनम-मृतंगा, नाशि अघंगा, पूजि पदंगा मृदु हिंगा।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

वर बावन चन्दन, कदली नन्दन, घन आनन्दन सहित घसौं।
भवताप निकन्दन, ऐरानन्दन, वंदि अमंदन, चरन बसौं।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्जत अच्छत जज्जत, भरि थारी।
दुखदारिद गज्जत, सदपद सज्जत, भवभय भज्जत, अतिभारी।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

मंदार, सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं।
भरि कंचनथारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

पकवान नवीने, पावन कीने षटरस भीने, सुखदाई।

मनमोदक हारे, छुधा विदारे, आगे धारे गुनगाई।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रमतम नाशे, ज्ञेय विकासे सुखरासे।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निज भासे।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

चन्दन करपूरं करि वर चूरं, पावक भूरं माहि जुरं।
तसु धूम उड़ावे,नाचत जावे, अलि गुंजावे मधुर सुरं।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक भूरं ले आयो।
ता सों पद जज्जौं, शिवफल सज्जौं, निजरस रज्जौं उमगायो।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी, दृग-प्यारी।
तुम हो भव तारी, करूनाधारी, या तें थारी शरनारी।।श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली

(छंद)

असित सातैंय भादव जानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये।
सचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करें इत ये पद अर्चनं।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णा सप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांति०अर्घ्यं नि०।।१।।

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज-साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजिहों अबै।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांति० अर्घ्यं नि०।।२।।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।
भ्रमर चौदशि जेठ सुहावनी, धरम हेत जजौं गुन पावनी।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शांति०अर्घ्यं नि०।।३।।

शुकल पौष दशैं सुखराश है, परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्र उधारन देव की, हम करें नित मंगल सेवकी।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीशान्ति०अर्घ्यं नि०।।४।।

असित चौदशि जेठ हने अरी, गिरि समेदथकी शिव-तिय वरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आय के, हम जजैं इत मस्तक नाय के।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांति० अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

(छंद रथोद्धता, चन्द्र वत्स तथा चन्द्रवर्त्म)

शान्ति शान्तिगुन मंडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा।
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा, पूजिहौं कलुष हंडिते सदा।।
मोच्छ हेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्नमाल हो।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरौं, ध्यावते तुरत मुक्ति-तिय वरौं।।

छन्द पद्धरि (मात्रा १५)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज, भवसागर में अद्‌भुत जहाज।
तुम तजि सरवारथसिद्धि थान, सरवारथजुत गजपुर महान।१।
तिति जनम लियो आनन्द धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार।
इन्द्रानी जाय प्रसूति थान, तुम को कर में ले हरष मान।२।
हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार।
गिरिराज जाय तित शिला पांडु, ता पे थाप्यो अभिषेक माँड।३।
तिति पंचम उदधि तनों सु वारि, सुर कर कर करि ल्याये उदार।
तब इन्द्र सहसकर करि आनन्द, तुम सिर धारा ढारयो सुमन्द।४।
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर, भभ भभ भभ धध धध कलश शोर।

दृमदृम दृमदृम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नूपुरंग।५।
तन नन नन नन नन तनन तान, घन नन नन घंटा करत ध्वान।
ताथेई थेई थेई थेई थेई सुचाल, जुत नाचत नावत तुमहिं भाल।६।
चट चट चट अटपट नटत नाट, झट झट झट हट नट थट विराट।
इमि नाचत राचत भगति रंग, सुर लेत जहाँ आनन्द संग।७।
इत्यादि अतुल मंगल सु ठाठ, तित बन्ध्यो जहाँ सुर गिरि विराज।
पुनि करि नियोग पितुसदन आय, हरि सौंप्यो तुम तित वृद्ध थाय।८।
पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न, भोग्यो छहखण्ड करि धरम जत्न।
पुनि तप धरि केवल रिद्धि पाय, भवि जीवनि को शिवमग बताय।९।
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुण-मंडित अतुल अनन्त भेष।
मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय, हमरी भवबाधा हर जिनाय।१०।
सेवक अपनो निज जान जान, करूणा करि भौभय भान भान।
यह विघन मूल तरू खंड खंड, चितचिन्तित आनन्द मंड मंड।।११।

छन्द-

श्री शान्ति महंता शिवतियकंता सुगुन अनंता भगवंता।
भवभ्रमन हनन्ता सौख्य अनन्ता दतारं तारनवन्ता।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द रूपक सवैया-मात्रा ३१)

शान्तिनाथ जिन के पदपंकज, जो भवि पूजें मन वच काय।
जनम जनम के पातक ता के, ततछिन तजिकें जायं पलाय।।
मनवांछित सुख पावे सो नर, बांचे भगतिभाव अति उर लाय।
ता तें 'वृन्दावन' नित वंदे, जा तें शिवपुर पहुँचे राज कराय।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

शांतिनाथ जिनराज का, कुन्दप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नव कोटाकोटी नव लक्ष नव सहस्र नवशत नवनवति कुन्द प्रभकूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः
श्री कुन्थुनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननैर्दुरवापैः कुंथु जिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या कुंथुजिनं नत्वा) भगवान कुंथुनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान कुंथुनाथ की मैं स्तुति करुँगी।

श्रावण कृष्ण दशम्यां कृतिका भामध्यमाश्रिते शशिनि।

आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा च सर्वार्थाधीशः।।३।।

सूरसेन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरु हस्तिनापुरे।

देव्यां श्रीकान्तायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (सर्वार्थाधीशः) सर्वार्थसिद्धि विमान का स्वामी (विभुः) भगवान कुंथुनाथ का जीव (श्रावण कृष्ण दशम्यां) श्रावण कृष्ण दशमी के दिन(शशिनि) चन्द्रमा (कृतिका भामध्यम्-आश्रिते) कृतिका नक्षत्र के मध्य स्थित था (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कुरू हस्तिनापुरे) कुरूक्षेत्र के हस्तिनापुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (श्रीकान्तायां) श्रीकान्ता (देव्यां) देवी (सूरसेन नृपति तनयः) सूरसेन राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

बैशाख शुक्ल कृतिका शशांक योगे दिने प्रतिपदायाम्।

जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभ लग्ने।।५।।

कृतिकाश्रिते शशांके वैशाख ज्योत्सने प्रतिपदा दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (वैशाख शुक्ल कृतिका शशांक योगे प्रतिपदायाम् दिने) वैशाख मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन कृतिका नक्षत्र और चन्द्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च्व स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके कृतिकाश्रिते) चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र पर था (वैशाख शुक्ल) वैशाख शुक्ल की शुभ बेला में कुंथुनाथ का जन्म हुआ था(प्रतिपदा दिवसे) प्रतिपदा के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राःरत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इन्द्रों ने रत्नमय

कलशों से उन कुंथुनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
विजयाख्यानाम् शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
वैशाख शुक्ल एका कृतिका भामध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे कुंथुनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में २३७५० वर्ष (अमर-उपनीत) देवों के द्वारा लाये गये (भेगान्-भुक्त्वा) भोगों को भोगकर (जातिस्मरण अभिनि बोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित ऐसी (विजयाख्या शिविकाम्-आरूह्य) विजय नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) हस्तिनापुर नगर के बाहर निकल गये (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा कृतिका भा मध्यमाश्रिते सोमे) वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के शुभ दिन जब चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र पर था, उन्होंने (अष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) तीन दिन के उपवास का नियम लेकर अपरान्ह काल में जिनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः।।१०।।

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज कुंथुनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (षोडस-वर्षाणि)सोलह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये तिलकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्टेन स्थितस्य खलु हस्तिनिकट ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में (खलु हस्ति ग्रामे) हस्तिनापुर के निकट (तिलकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) तिलक वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह काल में बेला का उपवास लेकर विराजमान हो गये।

चैत्र शुक्ल तृतीयायां कृतिका भानिमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (चैत्र शुक्ल तृतीयायां कृतिका भानिमध्यम् आश्रिते) चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन कृतिका नक्षत्र पर चंद्रमा था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर,

भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान कुंथुनाथ(दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (चतुर्विंशव्यून सहस्र वर्षाणि) २६६ वर्ष कम २४ हजार वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् स्वयंभु प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण की रचना की समाप्ति के बाद आयु एक महीना शेष रहने पर (भगवान) भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (स्वयंभु प्रभृति) साथ में स्वयंभु स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
ज्ञानधर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे कुंथुनाथ (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (ज्ञानधर कूटोद्याने) ज्ञानधर कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

वैशाख शुक्ल एका कृतिकामृक्षे निहत्य कर्मरजः।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ- (वैशाख शुक्ल एका) वैशाख शुक्ल एकम के दिन (कृतिकामृक्षे) कृतिका नक्षत्र के रहते हुए (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) कुंथुनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति कुंथुजिन चंद्रे

य: स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति कुंथुजिन चंद्रे) कुंथुनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (य:) जो (द्वयो: हि) दोनों हि (सुसंध्ययो: पठति) संध्याओं में पढ़ता है (स:) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभि:,
संस्तोतुमुद्यतमति: परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मति:) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभि:) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयै: कुसुमै: सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभित: किरन्त:।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्या:,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ता:॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः

तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,

प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ-(शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ) पार्श्वनाथजी उग्रवंश में और महावीरजी नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी सवापल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोपम वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख सुक्क

पडिवदाए अपराण्हे कत्तिकाए णक्खत्ते भयवदो कुंथुजिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु भवणवासिए वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी सवा पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) १०० लाख कोडी सवापल्लकम ३३७३९०० सागरोपम वर्ष व्यतीत हो जाने पर और चौथेकाल के शेष रहने पर (सम्मेए पव्वए वैसाख सुक्क पडिवदा अपराण्हे कत्तिकाए णक्खत्ते भयवदो कुंथुजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से वैशाख शुक्ल एकम के दिन अपरान्ह काल में कृतिका नक्षत्र के रहते हुए कुंथुनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण,

दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव की गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

श्रीकुंथुनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छन्द माधवी तथा किरीद - वर्ण १४)

अज अंक अजै पद राजै निशंक, हरे भवशंक निशंकित दाता। मदमत्त मतंग के माथे गँथे, मतवाले तिन्हें हने ज्यों अरिहाता।
गजनागपुरे लियो जन्म जिन्हौं, रवि के प्रभु नंदन श्रीमति-माता।
सो कुंथु सुकुंथुनि के प्रतिपालक, थापौं तिन्हें जुतभक्ति विख्याता।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सन्निधिकरणम्।

अष्टक

चाल- लावनी मरहटी, लालामनसुखरायजी कृत

कुंथु सुनअरज दास केरी, नाथ सुन अरज दासकेरी।
भवसिन्धु पर्‌यो हौं नाथ, निकारो बांह पकर मेरी।।
प्रभु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुन अरज दासकेरी।
जगतपाल पर्‌यो हौं वेगि निकारो बांह पकर मेरी। टेक।
सुरसरिता को उज्जवल जल भरि, कनकभृंग भेरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरौं धार नेरी।।कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

बावन चंदन कदलीनंदन, घसिकर गुन टेरी।
तपत मोह नाशन के कारन, धरौं चरन नेरी।।कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

मुक्ताफलसम उज्जवल अक्षत, सहित मलय लेरी।
पुंज धरौं तुम चरनन आगे अखय सुपद देरी।।कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

कमल केतकी बेला दौना, सुमन सुमनसेरी।
समरशूल निरमूल हेतु प्रभु, भेंट करौं तेरी ।। कंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी ।
ता सों चरन जजौं करूनानिधि, हरो छुधा मेरी ।। कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।
सो ले चरन जजौं भ्रम तम रवि, निज सुबोध देरी ।। कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

देवदारू हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।

अष्ट करम तत्काल जरे ज्यों, धूम धनंजेरी ।। कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

लोंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।

मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजौं सुकरि ढेरी ।। कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरू, दीप धूप लेरी ।

फलजुत जजन करौं मन सुख धरि, हरो जगत फेरी ।। कुंथु०

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली(छन्द मोतियादाम वर्ण १२)

सुसावन की दशमी कलि जान, तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ।

भयो गरभागम मंगल सार, जजें हम श्री पद अष्ट प्रकार ।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री कुन्थुनाथजि०अर्घ्यं निर्व०।१।

महा बैशाख सु एकम शुद्ध, भयो तब जनम तिज्ञान समृद्ध ।

कियो हरि मंगल मंदिर शीस, जजें हम अत्र तुम्हें नुतशीश ।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्लाप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थु०जि०अर्घ्यं निर्व०।२।

तज्यो षटखंड विभौ जिनचंद, विमोहित चित्त चितार सुछंद ।

धरे तप एकम शुद्ध विशाख, सुमग्न भये निज आनंद चाख ।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला प्रतिपदायां तपोमंगल प्राप्ताय श्री कुन्थु०अर्घ्यं निर्व०।३।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त, चहूँ अरि छयकरि तादिन व्यक्त।

भई समवसृत भाखि सुधर्म, जजौं पद ज्यों पद पाइय पर्म।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल तृतीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुंन्थु०अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।४।

सुदी वैशाख सु एकम नाम, लियो तिहि द्यौस अभय शिवधाम।

जजे हरि हर्षित मंगल गाय, समर्चतु हौं तुहि मन-वच-काय॥
ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल प्रतिपदायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीकुंथु० अर्घ्यं निर्व०।५।

जयमाला

(अडिल्ल छंद-मात्रा २१ रूपकालंकार)

षट खंडन के शत्रु राजपद में हने।
धरि दीक्षा षटखंडन पाप तिन्हें दने॥
त्यागि सुदरशन चक्र धरम चक्री भये।
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ़ गढ़ लये।१।
ऐसे कुंथु जिनेश तने पद पद्म को।
गुन अनंत भंडार महा सुख सद्म को॥
पूजौं अरघ चढ़ाय पूरणानंद हो।
चिदानंद अभिनंद इन्द्र-गन-वंद हो।२।

पद्धरी छंद (मात्रा १६)

जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव, तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिंबुकेव।
जय बुद्धि विदाँवर विष्णु ईश, जय रमाकांत शिवलोक शीश।३।
जय दया धुरंधर सृष्टिपाल, जय जय जगबंधु सुगुनमाल।
सरवारथसिद्धि विमान छार, उपजे गजपुर में गुन अपार।४।
सुरराज किये गिर न्हौन जाय, आनंद-सहित जुत-भगति भाय।
पुनि पिता सौंपि करमुदित अंग, हरितांडव-निरत कियो अभंग।५।
पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल, वय पाय मनोहर प्रजापाल।
षटखंड विभौ भोग्यो समस्त, फिर त्याग जोग धार्यो निरस्त।६।
तब घाति घात केवल उपाय, उपदेश दियो सब हित जिनाय।
जा के जानत भ्रम-तम विलाय, सम्यक्दर्शन निर्मल लहाय।७।
तुम धन्य देव किरपा-निधान, अज्ञान-क्षमा-तमहरन भान।

जय स्वच्छ गुनाकर शुक्त सुक्त, जयस्वच्छ सुखामृत भुक्तिमुक्त।८।
जय भौभयभंजन कृत्यकृत्य, मैं तुमरो हौं निज भृत्य भृत्य।
प्रभु अशरन शरन अधार धार, मम विघ्न-तूलगिरि जार जार।९।
जय कुनय यामिनी सूर सूर, जय मन वाँछित सुख पूर पूर।
मम करमबंध दिढ़ चूर चूर, निजसम आनंद दे भूर भूर।१०।
अथवा जब लों शिव लहौं नाहिं, तब लों ये तो नित ही लहाहिं।
भव भव श्रावक-कुल जनमसार, भवभव सतमति सतसंग धार।११।
भव-भवन निजआतम-तत्व ज्ञान, भव-भव तपसंयमशील दान।
भव-भव अनुभव नित चिदानंद, भव-भव तुम आगम हे जिनंद।१२।
भव-भव समाधिजुत मरन सार, भव-भव व्रत चाहौं अनागार।
यह मो कों हे करूणा निधान, सब जोग मिले आगम प्रमान।१३।
जब लों शिव सम्पत्ति लहौं नाहिं, तबलों मैं इनको नित लहाँहि।
यह अरज हिये अवधारि नाथ, भवसंकट हरि कीजे सनाथ।१४।

छन्द घत्तानंद (मात्र ३१)

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला।
मैं पूजौं ध्यावौं शीश नमावौं, देहु अचल पद की चाला।१५।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

छन्द रोड़क (मात्रा-२४)

कुंथु जिनेसुर पाद पदम जो प्रानी ध्यावें।
अलिसम कर अनुराग, सहज सो निज निधि पावें।।
जो बांचे सरधहें, करें अनुमोदन पूजा।
'वृंदावन' तिंह पुरूष सदृश, सुखिया नहिं दूजा।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

कुन्थुनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह।

मन वच तन कर पूजहुँ शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः षण्णवति कोटाकोटिः षण्णवति कोटिः द्वात्रिंशत् लक्ष षण्णवति सहस्र सप्तशत द्विचत्वारिंशत् ज्ञानधर कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनःपुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री अरहनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः अरहजिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या अरहजिनं नत्वा) भगवान अरहनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान अरहनाथ की मैं स्तुति करुँगी।

फाल्गुन सित तृतियायां रेवती भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा सर्वार्थांधीशः।।३।।

सुदर्शन नृपति तनयो भारतवास्ये कुरूहस्तिनापुरे।
देव्यां मित्र सेनायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (सर्वार्थाधीशः) सर्वार्थ सिद्धि विमान का स्वामी (विभुः) भगवान अरहनाथ का जीव (फाल्गुन सित तृतीयायां) फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (रेवती-भामध्यम्-आश्रिते) रेवती नक्षत्र के मध्य में होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (कुरूहस्तिनापुरे) कुरू क्षेत्र के हस्तिनापुर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (मित्र सेनायां) मित्र सेना (देव्यां) देवी और (सुदर्शन नृपति-तनयः) सुदर्शन राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

मार्ग शुक्ल रोहिण्यां शशांक योगे दिने चतुर्दश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।
रोहिणी शशांके खलु मार्ग ज्योत्सने चतुर्दशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (मार्ग-शुक्ल-रोहिणी शशांक योगे चतुर्दश्याम् दिने) मगशिर सुदी चतुर्दशी के दिन रेवती नक्षत्र और चंद्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके रोहिण्याश्रिते) चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र पर था तब (मार्ग ज्योत्सने) मार्ग शीर्ष की शुभ बेला में अरहनाथ का जन्म हुआ था (चतुर्दशी दिवसे) चतुर्दशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से उन अरहनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् मेघनाशाबोधितो त्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
वैजयन्ताख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिक्रान्तः॥८॥
मार्ग शुक्ल दशम्यां रेवती भामध्यमाश्रिते सोमे।
षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे अरहनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में २१ हजार वर्ष (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (मेघनाशा अभिनिबोधितः) मेघनाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (वैजयन्ताख्य शिविकाम्-आरूह्य) वैजयन्त नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) हस्तिनापुर नगर के बाहर निकल गये (मार्ग शुक्ल दशमी-रेवती भा मध्यमाश्रिते सोमे) मार्ग शुक्ल की दशमी के दिन जब चन्द्रमा रेवती नक्षत्र पर था। (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) दो दिनों का उपवास लेकर अपरान्ह में जिनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षोडसवर्षाण्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज अरहनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (षोडस-वर्षाणि)

सोलह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहेतुक वनस्य मध्ये आम्रद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु हस्ति निकट ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहेतुक वनस्यमध्ये) सहेतुक वनके बीच में (खलु हस्ति निकट ग्रामे) हस्तिनापुर के पास (आम्रद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) आम के वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह काल में दो दिन का उपवास ग्रहण कर विराजमान हो गए।

कार्तिक सित द्वादश्यां रेवती भामध्यमाश्रिते चंद्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (कार्तिक सित द्वादश्यां) कार्तिक शुक्ल बारस के दिन (रेवती भा मध्यमाश्रिते चंद्रे) चन्द्रमा रेवती नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ ३ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाणि जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- केवलज्ञान के पश्चात् (जिर्नेद्रः) भगवान अरहनाथ (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (सहस्रवर्षाणि) २०९८४ वर्षकाल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् कुम्भगण प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) धर्मोपदेश और समवशरण के विघटन के पश्चात् (भगवान) भगवान अरहनाथ (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ(कुम्भगण प्रभृति) साथ में कुंभगण स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

नाटककूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे भगवान (पद्मवन-दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम-खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (नाटक कूटोद्याने) नाटककूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

चैत्रासित अमावस्यां रेवतीमृक्षे निहत्य कर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- (चैत्रासित अमावस्यां) चैत्र अमावस्या के दिन

(रेवती मृक्षे) रेवती नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) अरहनाथ जिनेन्द्र को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल- सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप तथा उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (गता दिवं खं च-वन भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति अरहजिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति अरहजिन चंद्रे) भगवान अरहनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हन्तों की तीर्थंकरों की, गणधरों की, श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके

(अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृतियुता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुड्.गगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रवल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे)

सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम सिद्ध हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र)

यहाँ- (अंर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

-क्षेपक श्लोक -

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी सहस्स कोडी वस्समुच्चा एगड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए चैत किण्ह अमावस्साए पुव्वण्हे रेवती णक्खत्ते भयवदो अरह जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण

पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी सहस्स कोडी वस्समुच्चा एगड्ढं पल्लूण तेत्तीस तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) १०० लाख कोडी एक हजार करोड वर्ष काल छोड़कर डेढ पल्य कम ३३७३९०० सागरोपम काल के व्यतीत हो जाने पर तथा चौथे काल के शेष रहने पर (सम्मेए पव्वए चैत किण्ह अमावस्साए पुव्वण्हे रेवती णक्खत्ते भयवदो अरहजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से चैत्र मास कृष्ण पक्ष अमावस्या की प्रातः काल रेवती नक्षत्र के रहते हुए अरहनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य,

दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकाल अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति परिणिव्वाण- महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

अरहनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छप्पय छंद, वीर रस, रूपकालंकार)

तप तुरंग असवार धार, तारन विवेक कर।
ध्यान शुकल असिधार शुद्ध सुविचार सुबखतर।।
भावन सेना, धर्म दशों सेनापति थापे।
रतन तीन धरि सकति, मंत्रि अनुभो निरमापे।।
सत्तातल सोहं सुभटि धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि।
इहविध समाज सज राज को, अर जिन जीते कर्म अरि।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सन्निधिकरणम्।

अष्टक

छंद त्रिभंगी अनुप्रयासक (मात्रा ३२, जगणवर्जित)

कनमनिमय झारी, दृग सुखकारी, सुर सरितारी नीर भरी।
मुनिमन सम उज्जवल, जनम जरादल, सो ले पदतल धार करी।।
प्रभु दीन दयालं, अरिकुल कालं, विरद विशालं सुकुमालं।
हरि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुन मालं, वरभालं।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

भवताप नशावन, विरद सुपावन, सुनि मन भावन, मोद भयो।
तातैं घसि बावन, चंदनपावन, तुमहिं चढ़ावन, उमगि अयो।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

तंदुल अनियारे, श्वेत सँवारे, शशिदुति टारे, थार भरे।
पद अखय सुदाता, जगविख्याता, लखि भवत्राता पुंजधरे।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

सुरतरू के शोभित, सुरन मनोभित, सुमन अछोभित ले आयो
मनमथ के छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन गुन गायो।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

नेवज सज भक्षक प्रासुक अक्षक, पक्षक रक्षक स्वच्छ धरी।
तुम करम निकक्षक, भस्म कलाक्षक, दक्षक पक्षक रक्ष करी।।
प्रभु दीन दयालं, अरिकुल कालं, विरद विशालं सुकुमालं।
हरि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुन मालं, वरभालं।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

तुम भ्रमतम भंजन मुनिमन कंजन, रंजन गंजन मोह निशा।
रवि केवलस्वामी दीप जगामी, तुम ढिग आमी पुण्य दृशा।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

दशधूप सुरंगी गंध अभंगी वह्नि वरंगी माहिं हवें।
वसुकर्म जरावें धूम उड़ावें, ताँडव भावें नृत्य पवें।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

रितुफल अतिपावन, नयन सुहावन, रसना भावन, कर लीने।
तुम विघन विदारक, शिवफलकारक, भवदधि तारक चरचीने।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं, पुष्प-चरुं।
वर दीपं धूपं, आनंदरूपं, ले फल भूपं, अर्घ करुं।।प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।६।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली
(छंद चौपाई (मात्रा १६)

फागुन सुदी तीज सुखदाई, गरभ सुमंगल ता दिज पाई।
मित्रादेवी उदर सु आये, जजे इन्द्र हम पूजन आये ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथ जि०अर्घ्यं निर्व०।१।

मँगसिर शुक्ल चतुर्दशि सोहे, गजपुर जनम भयो जग मोहे।
सुर गुरू जजे मेरू पर जाई, हम इत पूजें मनवचकाई।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला चतुर्दश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्री अरह०अर्घ्यं नि०।।२।।

मंगसिर सित दसमी दिन राजे, ता दिन संजम धरे विराजै।
अपराजित घर भोजन पाई, हम पूजें इत चित हरषाई।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला दशम्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्री अर०अर्घ्यं नि०।।३।।

कार्तिक सित द्वादशि अरि चूरे, केवलज्ञान भयो गुन पूरे।
समवसरन तिथि धरम बखाने, जजत चरन हम पातक भाने।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वादश्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्री अर०अर्घ्यं नि०।।४।।

चैत कृष्ण अमावसी सब कर्म, नाशि वास किय शिव-थल पर्म।
निहचल गुन अनंत भंडारी, जजौं देव सुधि लेहु हमारी।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अमावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री अर०अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

(दोहा छन्द-जमकपद तथा लाटानुबंध)

बाहर भीतर के जीते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अर जिन भये, साहर शिवपुर राय।१।
राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमवरन तन वरष वर, नव्वै सहस सुआय।२।

(छन्द तोटक-वर्ण १२)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी, जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी।
भवभीम भवोदधि तारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।३।
गरभादिक मंगल सार धरे, जग जीवनि के दुखदंद हरे।
कुरूवंश शिखामनि तारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।४।
करि राज छखंड विभूति मई, तप धारत केवलबोध ठई।
गण तीस जहाँ भ्रमवारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।५।
भविजीवन को उपदेश दियो, शिवहेत सबै जन धारि लियो।
जग के सब संकट टारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।६।
कहि बीस प्ररूपन सार तहाँ, निजशर्म सुधारस धार जहाँ।
गति चार हृषीपन धारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।७।
षट काय तिजोग तिवेद मथा, पनवीस कषा वसु ज्ञान तथा।
सुर संजम भेद पसारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।८।
रस दर्शन लेश्या भव्य जुगं, षट सम्यक् सैनिय भेद युगं।
जुग हार तथा सु अहारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।९।

गुनथान चतुर्दस मारगना, उपयोग दुवादश भेद भना।
इमि बीस विभेद उचारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।१०।
इन आदि समस्त बखान कियो, भवि जीवनि ने उर धार लियो।
कितने शिववादिन धारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।११।
फिर आप अघाति विनाश सबै, शिवधाम विषै थित कीन तबै।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।१२।
अब दीनदयाल दया धरिये, मम कर्म कलंक सबै हरिये।
तुमरे गुन को कछु पार न है, अरनाथ नमौं सुखकारन हैं।१३।

घत्तानन्द छन्द (मात्रा ३१)

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं।
अरिकर्म विदारन, शिवसुखकारन, जयजिनवर जग त्रातारं।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द आर्या

अर जिन के पदसारं, जो पूजै द्रव्य भाव सों प्राणी।
सो पावै भवपारं, अजरामर मोक्षथान सुखखानी।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नवनवति कोटिः नवनवति लक्ष नवनवति सहस्र नवशत नवनवति नाटक कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री मल्लिनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपतिमहितम्।

अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचलमनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणै: संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुरवापै: मल्लिजिनं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख स्वरूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं(अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, (सम्प्राप्तम्) ऐसे विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या मल्लिजिनं नत्वा) उन मल्लिनाथ भगवान को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) मैं उन मल्लिनाथ भगवान की स्तुति करुँगी।

चैत्र सित प्रतिपदायां अश्विनी भा मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः॥३॥
कुम्भ श्री नृपति तनयो भारतवास्ये अंग मिथिलापुरे।
देव्यां श्री प्रभावत्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (अपराजिताधीशः) अपराजित विमान का स्वामी (विभुः) भगवान मल्लिनाथ का जीव (चैत्र शुक्ल प्रतिपदायां) चैत्र सुदीएकम के दिन (शशिनि) चंद्रमा (अश्विनी भामध्यम्-आश्रिते) अश्विनी नक्षत्र के मध्य में था तब (स्वर्ग सुखं भुक्त्वा) सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में

(अंग मिथिलापुरे) अंग क्षेत्र के मिथिलापुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रभावत्यां) प्रभावती (देव्यां) देवी (कुम्भ नृपति -तनयः) कुम्भराज राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

मार्गशीर्ष अश्विन्यां शशांक योगे दिने एकादश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।
अश्विन्यामाश्रिते शशांके मार्ग सित एकादशी दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (मार्गशीर्ष अश्विन्यां शशांकयोगे एकादश्यां दिवसे) अगहन सुदी एकादशी के दिन अश्विनी नामक नक्षत्र के साथ चन्द्रयोग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु जज्ञे) शुभ ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके अश्विन्यामाश्रिते) चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र पर था (मार्गशीर्ष) मार्गशुक्ल पक्ष की शुभ बेला में मल्लिनाथ का जन्म हुआ था (एकादशी दिवसे) एकादशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले शतैक वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् विद्युत्पाता बोधितोत्वरितः।।७।।
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
जयंताख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।
मार्गशिर एकादश्यां अश्विनी भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन पूर्वाण्हे तु भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि

स्वरूप वे मल्लिनाथ (कुमार काले) कुमार काल अवस्था में (शतैक वर्षाणि) १०० वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवोपुनीत भोगों को भोगकर (विधुत्पाता अभिनिबोधितः) बिजली के नाश को देखकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त(नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (जयंताख्य शिविकाम्-आरूह्य) जयंत पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) मिथिलापुर के बाहर निकल गये। (मार्गशिर एकादशी अश्विनी भा मध्यम्-आश्रिते) मार्ग माह की एकादशी के शुभ दिन जब चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र पर स्थित था उन्होंने(षष्टेन भक्तेन जिनः प्रवव्राज) बेला का नियम लेकर (तु-अपराण्हे) अपरान्ह काल में जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः षट् दिनान्यामरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज मल्लिनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (षट् दिनानि) छह दिन तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

श्वेतवनस्यमध्ये तु अशोकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु मिथिलानिकट ग्रामे॥१।

अन्वयार्थ- (श्वेत वनस्यमध्ये) श्वेतवन के मध्य में (खलु मिथिला निकट ग्रामे) मिथिलापुर के निकट ग्राम में (अशोक द्रुम

संश्रिते शिलापट्टे) अशोक वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (पूर्वाण्हे षष्ठेन स्थितस्य) प्रातः बेला का नियम ले स्थित हुए।

मार्गसित एकादश्यां अश्विनी भा मध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ- (मार्गसित एकादश्यां) मार्ग शुक्ल एकादशी के दिन (अश्विनी भा मध्यम्-आश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र पर था (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) तब क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मल्लिनाथ मुनिराज को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ- वहाँ ३ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं अनेकवर्षाणि खलु जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान मल्लिनाथ (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (अनेकवर्षाणि) ४ दिन कम ५४९०० वर्ष तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूद् विशाखा प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) धर्म सभा की समाप्ति के पश्चात् (भगवान) भगवान मल्लिनाथ (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं संप्रापत्) विशाल सुन्दर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (विशाखा प्रभृति) साथ में विशाखा स्वामी आदि को लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।
सम्बल कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे मल्लिनाथ (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभित (सम्बल कूटोद्याने) संबल कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थित हो गये।

फाल्गुन शुक्ल पंचम्यां भरणीनामृक्षे निहत्यकर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्व्यजरामर मक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ-(फाल्गुन शुक्ल पंचभ्यां) फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन (भरणीनामृक्षे) भरणी नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मो का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि-गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) मल्लिनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) चारों निकाय के देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकर के (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुगंधित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने)वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति मल्लिजिनेश चंद्रे
य: स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति मल्लि जिन चंद्रे) मल्लिनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,

निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,

नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्.गगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत से (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम

मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-(अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण सुक्क पक्ख पंचमी अपराण्हे भरणीए णक्खत्ते भयवदो मल्लिजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवान! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ) परिनिर्वाण भक्ति संबंधी कायोत्सर्ग किया (तस्सालोचेउं इमम्मि) उसकी आलोचना करने की इच्छा

करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथेकाल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीस तिहत्तरि णवसद सागरोवम) १०० लाख कोडी डेढ़ पल्य कम ३३७३९०० सागरोपम काल (वस्सहीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) व्यतीत होने पर शेष चौथे काल का समय अवशेष रहने पर (सम्मेए पव्वए फागुण सुक्क पंचमी अपराण्हे भरणीए णक्खत्ते भयवदो मल्लिजिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिवर पर्वत से फाल्गुण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन अपरान्ह काल में भरणी नक्षत्र के रहते हुए मल्लिनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए। (तिसुविलोएसु भवणवासिए वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चारों प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्यगंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्य दीप, दिव्य धूप, दिव्य फलों के द्वारा(णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति) नित्यकाल अर्चा करते हैं, पूजा करते हैं, वन्दना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परमनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ, (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहिमरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, सुगति में

गमन हो, समाधि मरण हो (जिण गुण सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

मल्लिनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

(छंद रोड़क)

अपराजित तें आय नाथ मिथलापुर जाये।
कुंभराय के नन्द, प्रभावति मात बताये।
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजे।
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रम भाजे।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

छंद - जोगीरासा (मात्रा २८)

सुर-सरिता-जल उज्जवल लेकर, मनिभृंगार भराई।
जनम जरामृतु नाशन कारन, जजहुँ चरन जिनराई।।
राग-दोष-मद-मोह हरन को, तुम ही हो वरवीरा।
यातें शरन गही जगपति जी, वेगि हरो भवपीरा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

बावनचंदन कदली नंदन, कुंकुमसंग घिसायो।
लेकर पूजौं चरनकमल प्रभु, भवआताप नसायो।।
राग-दोष-मद-मोह हरन को, तुम ही हो वरवीरा।
यातें शरन गही जगपति जी, वेगि हरो भवपीरा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व० स्वाहा।२।

तंदुल शशिसम उज्जवल लीने, दीने पुंज सुहाई।
नाचत गावत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा।३।

पारिजात मंदार सुमन, संतान जनित महकाई।
मार सुभट मद भंजनकारन, जजहुँ तुम्हें शिरनाई।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।४।

फेनी गोझा मोदन मोदक, आदिक सद्य उपाई।
सो लै छुधा निवारन कारन जजहुँ चरन लवलाई।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।५।

तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रहयो दुखदाई।
तासु नाश कारन को दीपक, अद्भुत जोति जगाइ।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्व०।६।

अगर तगर कृष्णागर चंदन चूरि सुगंध बनाई।
अष्टकरम जारन को तुम ढिग, खेवत हौं जिनराई।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई।
मोक्ष महाफल दाय जानिके, पूजैं मन हरखाई।।राग०

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजौं भगति बढ़ाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गहो मैं आई।।
राग-दोष-मद-मोह हरन को, तुम ही हो वरवीरा।
यातें शरन गही जगपति जी, वेगि हरो भवपीरा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।९।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली
(लक्ष्मीधरा छन्द-१२ वर्ण)

चैत की शुद्ध एकैं भली राजई, गर्भकल्यान कल्यान को छाजई।
कुंभराजा प्रभावति माता तने, देवदेवी जजे शीश नाये घने।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला प्रतिपदायां गर्भमंगल मण्डिताय श्रीमल्लि०जि० अर्घ्यं निर्व०।१।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई, जन्मकल्यान को द्यौस सो छाजई।
इन्द्र नागेंद्र पूजें गिरिंदजी जिन्हें, मैं जजौं ध्याय के शीश नावौं तिन्हें।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष-शुक्लैकादश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री मल्लि०जि० अर्घ्यं निर्व०।२।

मार्गशीर्षे सुदीग्यारसीके दिना, राजको त्याग दीच्छा धरी है जिना।
दान गोछीरको नन्दसेने दयो, मैं जजौं जासु के पंच अचरज भयो।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष-शुक्लैकादश्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्रीमल्लि० अर्घ्यं निर्व०।३।

पौष की श्याम दूजी हने घातिया, केवलज्ञान साम्राज्यलक्ष्मी वर लिया।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करें, मैं जजौं चर्न ज्यों कर्म वक्री टरें।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्रीमल्लि० अर्घ्यं निर्व०।४।

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाती हते, सिद्ध आलै बसै जाय सम्मेदतें।
इन्द्रनागेन्द्र कीन्ही क्रिया आयके, मैं जजौं शिव मही ध्यायके गायके।

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ला-पंचम्यां मोक्षमंगल प्राप्ताय श्रीमल्लि० अर्घ्यं नि०।५।

जयमाला
घत्तानन्द छन्द (३२ मात्रा)

तुअ नमित सुरेशा, नर नागेशा, रजत नगेशा भगति भरा।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिव-रमनिवरा।१।

पद्धरि छन्द (मात्रा १६ लघ्वन्त)

जय शुद्ध चिदातम देव एव, निरदोष सुगुन यह सहज टेव।
जय भ्रमतम भंजन मारतंड, भवि भवदधि तारन को तरंड।२।

जय गरभ जनम मंडित जिनेश, जय छायक समकित बुद्धभेस।
चौथे किय सातों प्रकृतिछीन, चौ अनंतानु मिथ्यात तीन।३।
सातंय किय तीनों आयु नास, फिर नवें अंश नवमें विलास।
तिन माहिं प्रकृति छत्तीस चूर, या भाँति कियो तुम ज्ञानपुर।४।
पहिले महं सोलह कहँ प्रजाल, निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल।
हनि थानगृद्धि को सकल कुब्ब, नर तिर्यग्गति गत्यानुपुब्ब।५।
इक बे ते चौ इन्द्रीय जात, थावर आतप उद्योग घात।
सूच्छम साधारन एक चूर, पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर।६।
चौथे प्रत्याप्रत्याख्यान चार, तीजे सु नपुंसक वेद टार।
चौथे तियवेद विनाशकीन, पाँचें हास्यादिक छहों छीन।७।
नर वेद छठें छय नियत धीर, सातयें संज्ज्वलन क्रोध चीर।
आठवें संज्ज्वलन मान भान, नवमें माया संज्ज्वलन हान।८।
इमि घात नवें दशमें पधार, संज्ज्वलन लोभ तित हू विदार।
पुनि द्वादशके द्वय अंश माहिं, सोलह चकचूर किये जिनाहिं।९।
निद्रा प्रचला इक भाग माहिं, दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं।
ज्ञानावरनी पन दरश चार, अरि अंतराय पांचों प्रहार।१०।
इमि छय त्रेशठ केवल उपाय, धरमोपदेश दीन्हों जिनाय।
नव केवललब्धि विराजमान, जय तेरमगुन तिथि गुनअमान।११।
गत चौदहमें द्वै भाग तत्र, क्षय कीन बहत्तर तेरहत्र।
वेदनी असाता को विनाश, औदारि विक्रियाहार नाश।१२।
तैजस्य कारमानों मिलाय, तन पंच पंच बंध विलाय।
संघात पंच घाते महंत, त्रय अंगोपांग सहित भनंत।१३।
संठान संहनन छह छहेव, रसवरन पंच वसु फरस भेव।
जुग गंध देवगति सहित पुव्व, पुनि अगुरूलघु उस्वास दुव्व।१४।

परउपघातक सुविहाय नाम, जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम।
अपरज थिर अथिर अशुभ सुभेव, दुरभाग सुसुर दुस्सुर अभेव।१५।
अन आदर और अजस्य कित्त, निरमान नीच गोतौ विचित्त।
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय, तब दूजे में तेरह नशाय।१६।
पहले सातावेदनी जाय, नर आयु मनुषगति को नशाय।
मानुष गत्यानु सु पूरवीय, पंचेंद्रिय जात प्रकृति विधिय।१७।
त्रसवादर पर्जापति सुभाग, आदरजुत उत्तम गोत पाग।
जसकीरती तीरथप्रकृति जुक्त, ए तेरह छयकरि भये मुक्त।१८।
जय गुनअनंत अविकार धार, वरनत गनधर नहिं लहत पार।
ताकों मैं वंदौं बार बार, मेरी आपत उद्धार धार।१९।
सम्मेदशैल सुरपति नमंत, तब मुकतथान अनुपम लसंत।
'वृन्दावन' वंदत प्रीति-लाय, मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय।२०।

घत्तानंद

जय जय जिनस्वामी, त्रिभुवननामी, मल्लि विमल कल्यानकरा।
भवदंदविदारन आनंद कारन, भविकुमोद निशिईश वरा।२१।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरिणी

जजें हैं जो प्रानी दरब अरू भावादि विधि सों,
करैं नाना भाँति भगति थुति औ नौति सुधि सों।
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको,
तथा मोक्ष जावे जजत जन जो मल्लिजिन को।।

इत्याशीर्वादः(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथः जिनेन्द्रादि मुनिः षण्णवति कोटिः सम्बलकूटतः मोक्षंगत्तः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री मुनिसुव्रत निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरुम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुरवापैः मुनिसुव्रतं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ में (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग-भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं(विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं(अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ परम गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (मुनिसुव्रतं भक्त्या) भगवान मुनिसुव्रत को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन मुनिसुव्रत भगवान की मैं स्तुति करुँगी।

श्रावण कृष्ण द्वितीयायां श्रवणऋक्षेमध्यमाश्रिते सोमे।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा प्राणताधीशः ॥३॥
सुमित्र नृपति तनयो भारतवास्ये अंग कुशाग्रपुरे।
देव्यां श्री सोमायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (प्राणताधीशः) प्राणत विमान का स्वामी (विभुः) भगवान मुनिसुव्रतनाथ का जीव (श्रावण कृष्ण द्वितीयायां) श्रावण वदिदोजके दिन (सोमे) चन्द्रमा (श्रवण- ऋक्षे मध्यम्-आश्रिते) श्रवण नक्षत्र पर होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष के (अंग कुशाग्रपुरे) कुशाग्रपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (श्री सोमायां) सोमा (देव्यां) देवी (सुमित्र-नृपति-तनयः) और सुमित्र राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

चैत्र श्रवणे ऋक्षे शशांकयोगे शुभ दिने दशम्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
श्रवणाश्रिते शशांके चैत्र कृष्ण शुभ दशम्यां दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (चैत्र कृष्ण दशम्यां श्रवणऋक्षे शशांक योगे) चैत्र वदि दशमी के दिन जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था (सोम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके श्रवणाश्रिते) जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था उस समय मुनिसुव्रतनाथ का जन्म हुआ (दशम्यां दिवसे) दशमी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इंद्रों ने रत्नमय कलशों से अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः॥७॥
नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
अपराजिताख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः॥८॥

वैशाख कृष्ण दशम्यां श्रवण भामध्यमाश्रिते सोमे।
अष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे मुनिसुव्रत (कुमार काले सप्तार्ध सहस्रवर्षाणि) कुमार काल अवस्था में ७ हजार वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवोपुनीत भोगों को भोगकर (जाति स्मरण अभिनिबोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (अपराजिताख्य शिविकाम्-आरूह्य) अपराजित पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) कुशाग्रनगर के बाहर निकल गये (वैशाख कृष्ण दशमी श्रवण भा मध्यमाश्रिते सोमे) वैशाख कृष्ण दशमी के दिन जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था (अष्टेन भक्तेन तु पूर्वाण्हे जिनः प्रवव्राज) प्रातः में तेला का नियम ले कर जिनेश्वरी निर्ग्रन्थ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः अनेक्मासान्यमरैः पूज्यः ॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज मुनिसुव्रतने (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (एकादश मासानि) ग्यारह माह तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

नील वनस्य मध्ये चम्पकद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

पूर्वाण्हे अष्टेन स्थितंतस्य खलु कुशाग्र ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (नील वनस्य मध्ये) नीलवन के बीच में (खलु कुशाग्रग्रामे) कुशाग्र नामक ग्राम में (चंपकद्रुम संश्रिते शिलापट्टटे) चम्पक वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (पूर्वाण्हे अष्टेन स्थितस्य) प्रातः में तेला का नियम ले कर विराजमान हो गये।

वैशाख कृष्ण नवम्यां श्रवणभा मध्यमाश्रिते चन्द्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (वैशाख-कृष्ण नवम्यां) वैशाख कृष्ण नवमी के दिन(श्रवणभा मध्यमाश्रिते चंद्रे) जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ २ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं सहस्रवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान मुनिसुव्रत ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्मं) ग्यारह प्रतिमा रूप

श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (सप्तसहस्रार्ध वर्षाणि) ११ माह कम ७५०० वर्ष तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् मल्लिजिनप्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) धर्मोपदेश की समाप्ति के पश्चात् (भगवान) मुनिसुव्रत (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (मल्लि प्रभृतिः) साथ में मल्लिनाथ स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि आर्यिका, श्रावक, श्राविका, रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये।।
निर्जर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनि) वे केवलज्ञानी (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्ष समूह से शोभित (निर्जर कूटोद्याने) निर्जर कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

फाल्गुन वदि द्वादश्यां श्रवण ऋक्षे निहत्यकर्मरजः।।
अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ-(फाल्गुन वदि द्वादश्यां) फाल्गुण कृष्ण द्वादशी के दिन (श्रवण नक्षत्रे) श्रवण नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारू, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति मुनिसुव्रत जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति मुनिसुव्रत चंद्रे) मुनिसुव्रत (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा)

उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंत शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगनन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्.गगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति

अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) उत्तम मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रूषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ-(अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज

(मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजा:॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजा:) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम चउवण्णं लक्ख वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए फागुण किण्ह द्वादशी अपराण्हे सवण णक्खत्ते भयवदो मुणिसुव्वए जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय वाणविंतर, जोयसिय, कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण

संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडि एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम चउवण्णं लक्ख वस्स हीणे) १०० लाख कोडी डेढ़ पल्य कम ३३७३९०० सागरोपम, ५४ लाख वर्ष व्यतीत हो जाने पर (वास चउक्कम्मि सेस कालम्मि) चौथे काल के शेष समय रहने पर (सम्मए पव्वए फागुण किण्ह बारसीए अपराण्हे सवण णक्खत्ते भयवदो मुणिसुव्वए जिणो सिद्धिं ग़दो) सम्मेद शिखर पर्वत से फागुण कृष्ण बारस के दिन अपरान्ह काल में श्रवण नक्षत्र के रहते हुए मुनिसुव्रतनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में जो चार प्रकार के देव हैं, वे दिव्यजल, दिव्य चंदन, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि

पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

मुनिसुव्रत भगवान की पूजा एवं टोक वन्दना

(मत्तगयन्द)

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सु राजगृहीमहँ आई।
श्री सुहमित्त पिता जिनके, गुनवान महापदमा जसु माई।।
बीस धनू तनु श्याम छवी, कछु अंक हरी वर वंश बताई।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कहूँ थापतु हौं इत प्रीत लगाई।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

गीतिका-

गीतिका-उज्ज्वल सुजल जिमि जस तिहांरो, कनक झारीमें भरौं।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुम पदतर करौं।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन, विरद विशाल हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।१।

भवतापघायक शान्तिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरौं।
गुनगाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबैं हरौं॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनन्दभरन तारन तरन, विरद विशाल हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।२।
तंदुल अखण्डित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरौं।
पद अखयदायक मुकति नायक, जानि पद पूजा करौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।३।
बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरौं।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।४।
पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरौं।
सो लेय तुम पदतर धरत ही छुधा डाइन को हरौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।५।
दीपक अमोलिक रतन मणिमय, तथा पावन घृत भरौं।
सो तिमिर मोहविनाश आतम भास कारण ज्वै धरौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशयनाय दीपं निर्व०।६।
करपूर चन्दन चूर भूर, सुगन्ध पावक में धरौं।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निज सुख को भरौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।
श्रीफल अनार सु आम आदिक पक्वफल अति विस्तरौं।
सो मोक्ष फल के हेत लेकर, तुम चरण आगे धरौं॥शिव०
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।
जलगंध आदि मिलाय आठों दरब अरघ सजौं वरौं।

पूजौं चरन रज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरौं।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनन्दभरन तारन तरन, विरद विशाल हैं।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।६।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली (छन्द त्रोटक)

तिथि दोयज सावन श्याम भयो, गरभागम मंगल मोद थयो।
हरिवृन्द सची पितु मातु जजें, हम पूजत ज्यौं अघ ओघ भजें।।
ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रत० अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।१।

बैसाख बदी दशमी वरनी, जनमे तिहिं द्योस त्रिलोकधनी।
सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दर ने, मुनिसुव्रतनाथ हमैं सरनै।।
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनि०अर्घ्यं नि० स्वाहा।२।

तप दुद्धर श्रीधर ने गहियो, वैसाख बदी दशमी कहियो।
निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं, हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं।।
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्रीमुनि०अर्घ्यं नि०।३।

वर केवलज्ञान उद्योत किया, नवमी वैसाख वदी सुखिया।
धनि मोहनिशाभनि मोखमगा, हम पूजि चहैं भवसिन्धु थगा।।
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णानवम्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीमुनि० अर्घ्यं नि० स्वाहा।४।

वदि बारसि फागुन मोच्छ गये, तिहुँ लोक शिरोमणि सिद्ध भये।
सु अनन्त गुनाकर विघ्न हरी, हम पूजत हैं मनमोद भरी।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा द्वादश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमुनि०अर्घ्यं नि०स्वा०।५।

जयमाला (दोहा)

मुनिगण नायक मुक्तिपति, सूक्त व्रताकर युक्त।
भुक्ति मुक्ति दातार लखि, वन्दौं तन-मन युक्त।१।

जय केवल भान अमान धरं, मुनि स्वच्छ सरोज विकास करं।
भव संकट भंजन लायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।२।
घनघात वनं दवदीप्त भनं, भविबोध त्रषातुर मेघघनं।
नित मंगलवृन्द वधायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।३।
गरभादिक मंगलसार धरे, जगजीवन के दुखदंद हरे।
सब तत्व प्रकाशन नायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।४।
शिवमारग मण्डन तत्व कहयो, गुनसार जगत्रय शर्म लहयो।
रूज रागरू दोष मिटायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।५।
समवस्रत में सुरनार सही, गुनगावत नावत भाल मही।
अरू नाचत भक्ति बढ़ायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।६।
पग नूपुर की धुनि होत भनं, झननं झननं झननं झननं।
सुरलेत अनेक रमायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।७।
घननं घननं घन घंट बजें, तननं तननं तनतान सजें।
दृमदृम मिरदंग बजायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।८।
छिन में लघु और छिन थूल बनें, जुत हावविभाव विलासपने।
मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।९।
धृगतां धृगतां पग पावत हैं, सननं सननं सु नचावत हैं।
अति आनन्द को पुनि पायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।१०।
अपने भव को फल लेत सही, शुभ भावनि तें सब पाप दही।
तित तैं सुख को सब पायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।११।
इन आदि समाज अनेक तहां, कहि कौन सके जु विभेद यहाँ।
धनि श्री जिनचन्द सुधायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।१२।
पुनि देश विहार कियो जिन ने, वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने।
हमको तुमरी शरनायक है, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।१३।

हम पै करूनाकरि देव अबै, शिवराज समाज सु देहु सबै।
जिमि होहुं सुखाश्रम नायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।१४।
भवि वृन्दतनी विनती जु यही, मुझ देहु अभयपद राज सही।
हम आनि गही शरनायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं।१५।
घत्ता -जय गुनगनधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूप पती।
परमानंददायक, दास सहायक, मुनिसुव्रत जयवंत जती।१६।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा:-श्रीमुनिसुव्रत के चरन, जो पूजें अभिनन्द।
सो सुरनर सुख भोगि के, पावें सहजानन्द।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

मुनिसुव्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नवनवति कोटाकोटिः नवनवति कोटिः नवनवति लक्ष नवशत नवनवति निर्जरकूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री नमिनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः नमिजिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ में (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग-भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती,

कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ परम गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या नमिजिनं नत्वा) भगवान नमिनाथ को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः)गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन नमिनाथ भगवान की मैं स्तुति करुँगी।

अश्विनद्वितीयासिते अश्विन्यपि मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा अपराजिताधीशः।।३।।
विजय महाराज तनयो भारतवास्ये अंग मिथिलापुरे।
देव्यां श्री प्रियवप्रायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः।।४।।

अन्वयार्थ- (अपराजिताधीशः) अपराजित विमान का स्वामी (विभुः) भगवान नमिनाथ का जीव (अश्विन कृष्ण द्वितीयायां) अश्विन कृष्ण द्वितीया के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (अश्विनी-मध्यम्-आश्रिते) अश्विनी नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (अंग मिथिलापुरे) अंग क्षेत्र के मिथिलापुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियवप्रायां) प्रियवप्रा (देव्यां) देवी (विजय महाराज-तनयः) और विजय राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

आषाढ कृष्ण स्वाती शशांक योगे शुभ दिने दशम्याम्।

जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।

स्वात्याश्रिते शशांके आषाढ कृष्णे दशम्याम् दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (अषाढ-कृष्ण स्वाति शशांक योगे दशम्याम् दिने) अषाढ़ कृष्ण दशमी के दिन स्वाती नक्षत्र के साथ चन्द्रयोग था (सोम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके स्वात्याश्रिते) जब चन्द्रमा स्वाती नक्षत्र पर था (आषाढ कृष्णे) आषाढ माह के कृष्ण पक्ष के शुभ दिन भगवान नमिनाथ का जन्म हुआ (दशम्यां दिवसे) दशमी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इंद्रों ने रत्नमय कलशों से उन नमिनाथ का अभिषेक किया।

भुक्त्वा कुमार काले पंचविंशतिशत वर्षाण्यनंत गुणराशिः।

अमरोपनीत भोगान् जातिस्मरण बोधितो त्वरितः।।७।।

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।

उत्तरकुरु शिविकामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।

आषाढ कृष्ण दशम्यां अश्विनी च मध्यमाश्रिते सोमे।

षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे नमिनाथ (कुमार काले पंचविंशतिशत वर्षाणि) कुमार काल अवस्था में २५०० वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवोपुनीत भोगों को भोगकर (जाति स्मरण अभिनिबोधितः) जाति स्मरण से वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों

से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (उत्तर कुरू शिविकाम्-आरूह्य) उत्तर कुरू पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांतः) मिथिलापुर नगर के बाहर निकल गये (आषाढ़ कृष्ण दशम्यां अश्विनी मध्यमाश्रिते) आषाढ़ कृष्ण दशमी के शुभ दिन जब चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र पर था (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिनः प्रवव्राज) बेला का नियम ले कर अपरान्ह काल में जिनेश्वरी निर्ग्रन्थ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रै स्तपोविधानैः नववर्षाण्यमरैः पूज्यः ॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज नमिनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (नव वर्षाणि) नव वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

सहस्राम्रवनस्यमध्ये बकुलद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितः मिथिलापुरी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहस्त्राम्रवनस्यमध्ये) सहस्त्राम्र वन के बीच में (खलु मिथिला निकट ग्रामे) मिथिला नगर के पास (बकुलद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) बकुल वृक्ष के नीचे शिलापट्ट पर (अपराह्णे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह में बेला का नियम ले कर विराजमान हो गये।

मार्गशीर्षैकादश्यां अश्विनी मध्यमाश्रिते चन्द्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (मार्गशीर्षैकादश्यां) मार्ग शीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन (अश्विनी मध्यमाश्रिते चन्द्रे) चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।
वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ- वहाँ २ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।
देशयमानो व्यवहरं अनेक वर्षाणि जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (जिनेंद्रः) भगवान नमिनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (पंचविंशतिशत अनेकोन वर्षाणि) ९ वर्ष कम २५०० वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् सुप्रभप्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण के विघटन के पश्चात्

(भगवान) नमिनाथ (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (सुप्रभ प्रभृति) साथ में सुप्रभ स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि आर्यिका, श्रावक, श्राविका, रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये॥

मित्रधर कूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनि) वे भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन और अनेक प्रकारों के वृक्ष समूह से शोभित (मित्रधर कूटोद्याने) मित्रधर कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

वैशाख वदि चतुर्दशी अश्विन्यामृक्षे निहत्यकर्मरजः॥

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- (वैशाख वदि चतुर्दशी) वैशाख कृष्ण चतुर्दशी(अश्विन्यामृक्षे) अश्विनी नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।

देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) नमिनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरू-रक्त-चंदन-

कालागरू-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति नमिजिनेश चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति नमिजिनेश चंद्रे) नमिनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसंध्ययोः-पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंत शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या।।२१।।

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ

(भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्यानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।

ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमला: सुगतिं प्रयाता:,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षा: पण्डो: सुता:) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेता:) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहित: बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपु: सुवर्णभद्र:) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्या: तटे) पावागिरि के पास चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधव:) जो साधु (हतमला:) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाता:) मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके

पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित मिष्ट (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत अवस्था को प्राप्त मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-

अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में उत्पन्न हुए हैं (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में उत्पन्न हुए (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में पैदा हुए हैं (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एगसड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम अस्सी लक्ख वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए वैसाख मासस्स किण्ह चउद्दसीए पुव्वण्हे अस्सिनी णक्खत्ते भयवदो णमि जिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु, भवणवासिय वाणविंतर, जोयसिय, कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल

के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी एगसड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णव सद सागरोवम अस्सी लक्ख वस्स हीणे) १०० लाख कोडी डेढ़ पल्य कम ३३७३९०० सागरोपम, ८० लाख वर्ष व्यतीत हो जाने पर (वास चउक्कम्मि सेस कालम्मि) चौथे काल के शेष समय रहने पर (सम्मए, पव्वए वैसाख किण्ह चौदसीए पुव्वण्हे अस्सिनी णक्खत्ते भयवदो णमि जिणो सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की चौदस के दिन प्रातः काल अश्विनी नक्षत्र के रहते हुए नमिनाथ निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में जो चार प्रकार के देव हैं, वे दिव्यजल, दिव्य चंदन, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंस्संति परिणिव्वाण- महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में

गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

नमिनाथ भगवान की पूजा एवं टोक वन्दना

(रोड़क)

श्री नमिनाथ जिनेन्द्र नमौं विजयारथ नन्दन।
विख्यादेवी मातु सहज सब पाप निकन्दन।।
अपराजित तजि जये मिथिलापुर वर आनन्दन।
तिन्हें सु थापौं यहाँ त्रिधा करि के पदवन्दन।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

द्रुतविलम्बित

सुरनदी जल उज्जवल पावनं, कनक भृंग भरौं मन भावनं।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदांबुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।१।

हरिमलय मिलि केशर सों घसौं, जगतनाथ भवातप को नसौं।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।२।

गुलक के सम सुन्दर तंदुलं, धरत पुंजुसु भुंजत संकुलं।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।३।

कमल केतुकी बेलि सुहावनी, समरसूल समस्त नशावनी।

जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।४।
शशि सुधासम मोदक मोदनं, प्रबल दुष्ट छुधामद खोदनं।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।५।
शुचि घृताश्रित दीपक जोइया, असम मोह महातम खोइया।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशयनाय दीपं निर्व०।६।
अमरजिह्व विषें दशगंध को, दहत दाहत कर्म के बंधको।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।
फलसुपक्व मनोहर पावने, सकल विघ्न समूह नशावने।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।
जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भवभय हरं।
जजतु हौं नमि के गुण गाय के, जुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।९।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली

गरभागम मंगलचारा, जुग आश्विन श्याम उदारा।
हरि हर्षि जजे पितुमाता, हम पूजें त्रिभुवन-त्राता।।
ॐ ह्रीं अश्विन कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथ अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।१।
जनमोत्सव श्याम असाढ़ा, दशमी दिन आनन्द बाढ़ा।
हरि मन्दर पूजे जाई, हम पूजें मन वच काई।।
ॐ ह्रीं आषाढ कृष्णा दशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमि०अर्घ्यं नि० स्वाहा।२।

तप दुद्धर श्रीधर धारा, दशमी कलि षाढ़ उदारा।
नित आतम रस झर लायो, हम पूजत आनन्द पायो।।
ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा दशम्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्रीनमि०अर्घ्यं नि०।३।
सित मंगसिर ग्यारस चूरे, चव घाति भये गुण पूरे।
समवसृत केवलधारी, तुमको नित नौति हमारी।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनमि०अर्घ्यं नि० स्वाहा।४।
वैसाख चतुर्दशि श्यामा, हनि शेष वरी शिव वामा।
सम्मेद थकी भगवन्ता, हम पूजें सुगुन अनन्ता।।
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री नमि०जि०अर्घ्यं नि०।५।

जयमाला (दोहा)

आयु सहस दश वर्ष की, हेम वरन तनसार।
धनुष पंचदश तुंग तनु, महिमा अपरम्पार।१।
जय जय जय नमिनाथ कृपाला, अरिकुल गहन दहन दवज्वाला।
जय जय धरम पयोधर धीरा, जय भव भंजन गुन गम्भीरा।२।
जय जय परमानन्द गुनधारी, विश्व विलोकन जनहितकारी।
अशरन शरन उदार जिनेशा, जय जय समवशरन आवेशा।३।
जय जय केवल ज्ञान प्रकाशी, जय चतुरानन हनि भवफांसी।
जय त्रिभुवनहित उद्यम वंता, जय जय जय जय नमि भगवंता।४।
जै तुम सप्त तत्व दरशायो, तास सुनत भवि निज रस पायो।
एक शुद्ध अनुभव निज भाखे, दो विधि राग दोष छै आखे।५।
दो श्रेणी दो नय धर्मं, दो प्रमाण आगमगुन शर्मं।
तीन लोक त्रयजोग तिकालं, सल्ल पल्ल त्रय वात वलायं।६।
चार बन्ध संज्ञागति ध्यानं, आराधन निछेप चउ दानं।
पंचलब्धि आचार प्रमादं, बन्धहेतु पैंताले सादं।७।

गोलक पंचभाव शिव भौनें, छहों दरब सम्यक अनुकौने।
हानि वृद्धि तप समय समेता, सप्तभंग वानी के नेता।८।
संयम समुद्घात भय सारा, आठ करम मद सिध गुन धारा।
नवों लबधि नवतत्व प्रकाशे, नोकषाय हरि तूप हुलाशे।९।
दशों बन्ध के मूल नशाये, यों इन आदि सकल दरशाये।
फेर विहरि जगजन उद्धारे, जय जय ज्ञान दरश अविकारे।१०।
जय वीरज जय सूक्षमवन्ता, जय अवगाहन गुण वरनंता।
जय जय अगुरुलघू निरबाधा, इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा।११।
ता कों कहत थके गनधारी, तौ को समरथ कहे प्रचारी।
ता तैं मैं अब शरने आया, भवदुख मेटि देहु शिवराया।१२।
बार बार यह अरज हमारी, हे त्रिपुरारी हे शिवकारी।।
पर-परणति को वेगि मिटावो, सहजानन्द स्वरूप भिटावो।१३।
'वृन्दावन' जांचत शिरनाई, तुम मम उर निवसो जिनराई।
जब लों शिव नहिं पावौं सारा, तब लों यही मनोरथ म्हारा।१४।

घत्ता छन्द

जय जय नमिनाथं हो शिवसाथं, औ अनाथ के नाथ सदम।
ता तें शिर नायौ, भगति बढ़ायो, चिन्ह शत पत्र पदम।१५।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा:-श्री नमिनाथ तने जुगल, चरन जजें जो जीव।
सो सुर नर सुख भोगकर, होवें शिवतिय पीव।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

नमिनाथ जिनराज का, कूट मित्र धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः नव कोटाकोटिः एकाब्ज पंच चत्वारिंशत् लक्ष सप्तसहस्र नवशत द्विचत्वारिंशत् मित्रधर कूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः
श्री नेमिनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः नेमिजिनं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ में (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग-भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत्त और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं, उपमातीत हैं, कल्याणस्वरूप हैं (अनघं) जो निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ परम गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या नेमिजिनंनत्वा) भगवान नेमिनाथ को नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन नेमिनाथ भगवान की मैं स्तुति करुँगी।

कार्तिक शुक्ल षष्ठ्यां उत्तराषाढ मध्यमाश्रिते शशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा जयन्ताधीशः ॥३॥
समुद्र नृपतितनयो भारतवास्ये नगर शौरीपुरे।

देव्यां श्रीप्रियशिवाख्यायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (जयन्ताधीशः) जयन्त विमान का स्वामी (विभुः) भगवान नेमिनाथ का जीव (कार्तिक शुक्ला षष्ठ्यां) कार्तिक शुक्ला छट् के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (उत्तराषाढ मध्यमाश्रिते) उत्तराषाढ नक्षत्र पर था तब (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतके (नगर शौरीपुरे) शौरीपुर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रिय शिवाख्यायां) प्रिय शिवा (देव्यां) देवी और (समुद्र नृपति-तनयः) समुद्र विजय राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

श्रावणसित चित्रायां शशांक योगे चाहन्यां षष्ठ्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
चित्राश्रिते शशांके श्रवण ज्योत्सने षष्ठ्याम् दिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ- (श्रावणसित चित्रायां शशांक योगे चाहन्यां षष्ठ्याम्) श्रावण शुक्ल षष्टी के दिन चित्रा नक्षत्र के साथ चंद्र योग था (सोम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके चित्राश्रिते) जब चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पर था उस समय (श्रावण ज्योत्सने) श्रावण सुदी में नेमिनाथ का जन्म हुआ (षष्ठ्याम् दिवसे) षष्टी के दिन(पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) इंद्रों ने रत्नमय कलशों से अभिषेक किया था।

भुक्त्वा कुमार काले त्रिशत वर्षाण्यनंत गुणराशिः।
अमरोपनीत भोगान् प्राणिवधाबोधितो त्वरितः॥७॥

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।
देवकुर्वाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनि:क्रान्त:॥८॥
श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां चित्रा भा मध्यमाश्रिते सोमे।
षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिन प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशि:) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे नेमिनाथ (कुमार काले त्रिशत वर्षाणि) कुमारावस्था में ३०० वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवोपुनीत भोगों को भोगकर (प्राणिवधा अभिनिबोधित:) प्राणिवध की वार्ता को सुनकर वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरित:) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित (देव कुर्वाख्यशिविकांआरूह्य) देव कुरू नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांत:) जूनागढ़ नगर के बाहर निकल गये (श्रावण शुक्ल षष्टी चित्रा भा मध्यमाश्रिते सोमे) श्रावण शुक्ल षष्टी के दिन जब चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र पर था (षष्टेन भक्तेन तु अपराण्हे जिन: प्रवव्राज) अपरान्ह काल की मंगल बेला में दो दिन का उपवास ग्रहण कर जिनेश्वरी निर्ग्रन्थ दीक्षा धारणकर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानै: नानादिवसामरै: पूज्य: ॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरै: पूज्य:) देवों से पूज्य मुनिराज नेमिनाथ (उग्रै: तपोविधानै:) उग्र तपों के विधान से (नानादिवस) ५६ दिन तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार)

प्रकृष्ट विहार किया।

सहस्राम्रवनस्य मध्ये वेणुद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।

पूर्वाण्हे अष्ठेनस्थितस्य खलु जूनागढ़ ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (सहस्राम्र वनस्य मध्ये) सहस्राम्र वन के मध्य में (खलु जूनागढ़ ग्रामे) जूनागढ़ ग्राम के पास (वेणुद्रुम-संश्रिते शिलापट्टे) वेणु वृक्ष के नीचे स्थित शिलापट्ट पर (पूर्वाण्हे अष्टेनस्थितस्य) प्रातः काल में तीन दिन का उपवास ग्रहण कर विराजमान हो गये।

अश्विन शुक्ल प्रतिपदायां चित्रा भानिमध्यमाश्रिते शशिनि।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्॥१२॥

अन्वयार्थ- (अश्विन शुक्ल प्रतिपदायां) अश्विन शुक्ल प्रतिपदा के दिन (चित्राभानि मध्यमाश्रिते शशिनि) चित्रा नक्षत्र पर चन्द्रमा स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन नेमिनाथ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१३॥

अन्वयार्थ- वहाँ १ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं सप्तशतऊनवर्षाणि जिनेन्द्रः॥१४॥

अन्वयार्थ- केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान नेमिनाथ (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनि धर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (सप्तशत ऊन वर्षाणि) ५६ दिन कम ७०० वर्ष काल तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान सम्प्रापद् दिव्यं गिरनार पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंधस्तत्राभूद् वरदत्त प्रभृति॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण और धर्मोपदेश की समाप्ति के पश्चात् (भगवान) नेमिनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं ऊर्जयन्त पर्वतं सम्प्रापत्) गिरनार पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (वरदत्त प्रभृति) साथ में वरदत्त स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूप चार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडिते रम्ये॥

जूनागढनगरोद्याने पद्मासनेन स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनि) वे केवलज्ञानी नेमिनाथ भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्ष समूह से शोभायमान (जूनागढनगरोद्याने) जूनागढ नगर के उद्यान में (पद्मासनेन स्थितः) पद्मासन से स्थित हो गये।

आषाढसित सप्तम्यां चित्रामृक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- (आषाढसित सप्तम्यां) आषाढ शुक्ल सप्तमी

(चित्रामृक्षे) चित्रा नक्षत्र के रहते हुए (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्यं।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः॥१८॥
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने॥१९॥

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) नेमिनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु-रक्त-चंदन-कालागरु-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरू और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि-धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति नेमि जिन चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति॥२०॥

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति नेमिजिन चंद्रे) नेमिनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों ही (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंत शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष पद को (प्रयाति) प्राप्त करता है।

यत्राऽर्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमिः) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध मन, काय वचन से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिंताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं

को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदनपुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्.गगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से हुए। (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि

(वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरूषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरुवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख वस्स हीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि उज्जंते पव्वए आसाढ मासस्स सुक्क सत्तमीए पुव्वण्हे चित्ता णक्खत्ते भयवदो णेमि जिणो सिद्धिं गदो। तिसुविलोएसु भवणवासिय-वाणविंतर जोयसिय-कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण

दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अच्चंति पूजंति वंदंति णमसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंच्चेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उसकी आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख वस्स हीणे) १०० लाख कोड़ी डेढ़ पल्य कम ३३७३९०० सागर ६५ लाख वर्ष व्यतीत हो जाने पर (वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि) तथा चौथे काल के शेष रहने पर (उज्जंते पव्वए आसाढ मासस्य सुक्क सप्तमीए चित्ता णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो णेमिजिणं सिद्धिं गदो) गिरनार पर्वत से आसाढ़ शुक्ल सप्तमी के दिन प्रातः काल चित्रा नक्षत्र के रहते हुए नेमिनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में जो चार प्रकार के देव हैं, वे दिव्यजल, दिव्य चंदन, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति

परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं,परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं। (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनेन्द्र देव के गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

नेमिनाथ भगवान की पूजा एवं टोक वन्दना

(छंद लक्ष्मी तथा अर्द्धलक्ष्मीधरा)

जैतिजै जैतिजै जैतिजै नेमकी, धर्म औतार दातार शिवचैनकी ।
श्रीशिवानंद भौफंद निकन्द की, ध्यावें जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ॥
परमकल्यान के देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौं ऐनकी ।
थापि हौं वार त्रै शुद्ध उच्चार के, शुद्धताधार भवपारक लेन की ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सन्निधिकरणम् पुष्पांजलिं क्षिपामि

अष्टक

(चाल होली, ताल जत्त)

दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय॥दाता०॥टेक॥

गंग नदी कुश प्राशुक लीनो, कंचन भृंग भराय।
मन वच तन तें धार देत ही, सकल कलंक नशाय।
दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०स्वाहा।१।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुंकुम संग घिसाय।
विघन ताप नाशन के कारन, जजौं तिहारे पाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व०।२।

पुण्यराशि तुमजस सम उज्जवल, तंदुल शुद्ध मंगाय।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुंज धरौं गुन गाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।३।

पुण्डरीक सुरद्रुम करनादिक, सुमन सुगंधित लाय।
दर्प्पक मनमथ भंजनकारन, जजहुँ चरन लवलाय।।
दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता०।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।४।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मँगाय।
क्षुधा-वेदनी नाश करन को, जजहुँ चरन उमगाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।५।

कनक दीप नवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय।
तिमिर मोह नाशक तुम को लखि, जजहुँ चरन हुलसाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशयनाय दीपं निर्व०।६।

दशविध गंध मँगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय।
दशों बंध जारन के कारन, खेवौं तुम ढिंग लाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० स्वाहा।७।

सुरस वरन रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय।

मोक्ष महाफल कारन पूजौं, हे जिनवर तुम पाय।।दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० स्वाहा।८।

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छिति के राज करन को, जजौं अंग वसु नाय।। दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।९।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली (पाइता छन्द)

सित कातिक छट्‌ठ अमंदा, गरभागम आनन्दकन्दा।
शचि सेय शिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथ० अर्घ्यं नि०स्वा०।१।

सित सावन छट्‌ठ अमन्दा, जनमे त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद्र महासुख पायो, हम पूजत विघन नशायो।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमि०अर्घ्यं नि० स्वाहा।२।

तजि राजमती व्रत लीनो, सित सावन छट्‌ठ प्रवीनो।
शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजैं पद शिर नाई।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्री नेमि०अर्घ्यं नि०।३।

सित आश्विन एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्ट प्रकारा।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानमण्डितायश्रीनेमि०अर्घ्यं नि० स्वाहा।४।

सितषाढ़ सप्तमी चूरे, चारों अघातिया कूरे।
शिव ऊर्जयन्त तें पाई, हम पूजैं ध्यान लगाई।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीनेमि०अर्घ्यं नि०स्वा०।५।

जयमाला (दोहा)

श्याम छवी तनु चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम।
शंख चिन्ह पद में निरखि, पुनि-पुनि करौं प्रनाम।१।

पद्धरि छंद (१५ मात्रा लघ्वन्त)

जै जै जै नेमि जिनिंद चन्द, पितु समुद देन आनन्दकन्द।
शिवमात कुमुदमन मोददाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय।२।
जयदेव अपूरव मारतंड, तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड।
शिवतिय मुखजलज विकाशनेश, नहिं रह्यो सृष्टि में तम अशेष।३।
भविभीत कोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्म थोक।
जै जै जै जै तुम गुनगँभीर, तुम आगम निपुन पुनीत धीर।४।
तुम केवल जोति विराजमान, जै जै जै जै करूना निधान।
तुम समवसरन में तत्वभेद, दरशायो जा तें नशत खेद।५।
तित तुमको हरि आनन्दधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय।६।
जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष।
जय कुमतिमतंगन को मृगेंद्र, जय मदनध्वांत को रवि जिनेंद्र।७।
जय कृपासिंधु अविरूद्ध बुद्ध, जय रिद्धिसिद्धि दाता प्रबुद्ध।
जय जगजन मनरंजन महान, जय भवसागर महं सुष्टुयान।८।
तुव भगति करें ते धन्य जीव, ते पावैं दिव शिवपद सदीव।
तुमरो गुनदेव विविध प्रकार, गावत नित किन्नर की जुनार।९।
वर भगति माहिं लवलीन होय, नाचें ताथेई थेई थेई बहोय।
तुम करूणासागर सृष्टिपाल, अब मों को वेगि करो निहाल।१०।
मैं दुख अनंत वसुकरमजोग, भोगे सदीव नहिं और रोग।
तुमको जग में जान्यो दयाल, हो वीतराग गुन रतन माल।११।
ता तें शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय।
यह विघनकरम मम खंड खंड, मनवांछित कारज मंडमंड।१२।
संसार कष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर।

निजपर प्रकाशबुद्धि देई देई, तजि के विलंब सुधि लेई लेई।१३।
हम याचतु हैं यह बार, बार भवसागर तें मो तार तार।
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख, तातैं विनवैं हे सुगुनमुक्ख।।१४।
घत्तानंद :- श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं।१५।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिनी (१५ वर्ण)

सुख धन जस सिद्धि पुत्र पौत्रादि वृद्धी।
सकल मनसि सिद्धि होति है ताहि रिद्धी।।
जजत हरषधारी नेमि को जो अगारी।
अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोक्षनारी।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

नेमिनाथ जिन सिद्ध भए, सिद्ध क्षेत्र गिरनार।
मन वच तन कर पूजहूँ, भवदधि पार उतार।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरूद्धादि द्वासप्तति कोटिः सप्तशत गिरनारगिरेः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री पार्श्वनाथ निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्।।१।।
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै र्दुरवापैः पार्श्वजिनं भक्त्या ।।२।।

अन्वयार्थ- जो (हि) यथार्थ (विबुधपति-खगपति-नरपति-धनद-उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरूम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (भक्त्या पार्श्व जिनं नत्वा) भगवान पार्श्वनाथ को भक्ति से नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान पार्श्वनाथ की मैं स्तुति करुँगी।

वैशाख कृष्ण तृतीयायां विशाखा भामध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वा प्राणताधीशः ॥३॥
विश्वसेन नृपति तनयो भारतवास्ये वाराणसी नगरे।
देव्यां प्रियवामायां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (प्राणत-अधीशः) प्राणत विमान का स्वामी (विभुः) भगवान पार्श्वनाथ का जीव (वैशाख कृष्ण-तृतीयायां) वैशाख वदि तीज के दिन (शशिनि) चन्द्रमा (विशाखा भा-मध्यम्-आश्रिते) विशाखा नक्षत्र पर था (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष के (वाराणसी नगरे) वाराणसी नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियवामायां) प्रिय वामा (देव्यां) देवी और (विश्वसेन-नृपति-तनयः) विश्वसेन राजा का पुत्र (आयातः)

हुआ।

पौष कृष्ण विशाखायां अनिलायोगे दिने एकादश्यां।

जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने।।५।।

विशाखाश्रिते शशांके पौष कृष्णे एकादशी दिवसे।

पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्।।६।।

अन्वयार्थ- (पौष-कृष्ण-विशाखा अनिलायोगे दिने एकादश्याम्) पौष वदि एकादशी के दिन विशाखा नक्षत्र तथा अनिला योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके विशाखाश्रिते) जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था (पौष कृष्ण) पौष वदि में पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था (एकादशी दिवसे) एकादशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से अभिषेक किया था।

भुक्त्वा कुमार काले च त्रिंशत् वर्षाण्यनंत गुणराशिः।

अमरोपनीत भोगान् जाति स्मरण बोधितोत्वरितः।।७।।

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।

विमला कुर्वाख्य शिविकामारूह्य पुराद्विनिःक्रान्तः।।८।।

पौषवदि एकादश्यां विशाखा भामध्यमाश्रिते सोमे।

षष्टेन त्वपराण्हे भक्तेन जिनः प्रवव्राज।।९।।

अन्वयार्थ- जो (अनंत-गुण-राशिः) अनंत गुणों के राशि स्वरूप वे पार्श्वनाथ (कुमार काले) कुमार अवस्था में (त्रिंशत् वर्षाणि) ३० वर्ष तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवोपनीत भोगों को भोगकर (जातिस्मरणामिनिबोधितः) जाति स्मरण से

वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (त्वरितः) तुरन्त (नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से विभूषित सुशोभित ऐसी (विमल कुर्वाख्य शिविकाम्-आरूह्य) विमला कुरु नामक पालकी पर आरोहण करके (पुंरात् विनिष्क्रांतः) वाराणसी नगर के बाहर निकल गये (पौष कृष्ण एकादशी-विशाखा-भा-मध्यमाश्रिते सोमे) पौष कृष्ण एकादशी के दिन जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर स्थित था (षष्टेन भक्तेन त्वपराण्हे) बेला के उपवास का नियम ग्रहण कर अपरान्ह काल में (जिनः प्रवव्राज) जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।
उग्रैस्तपोविधानैः चतुर्मासान्यमरैः पूज्यः॥१०॥

अन्वयार्थ-(अमरैः पूज्यः) देवों से पूज्य मुनिराज पार्श्वनाथ (उग्रैः तपोविधानैः) उग्र तपों के विधान से (चतुर्मासानि्) चार मास तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

अश्व वनस्य मध्ये धवलद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
पूर्वाण्हे अष्टेन स्थितस्य वाराणसी ग्रामे॥११॥

अन्वयार्थ- (अश्व वनस्यमध्ये) अश्व वनके बीच में (वाराणसी ग्रामे) बनारस नगर के पास (धवलद्रुम संश्रिते शिलापट्टटे) धवल वृक्ष के नीचे शिलापट्टट पर स्थित (पूर्वाण्हे अष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह काल में तीन दिन का उपवास

ग्रहण कर विराजमान हो गये।

चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां विशाखा भामध्यमाश्रिते चंद्रे।

क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ- (चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां) चैत्र कृष्ण चौथ के दिन (विशाखा भामध्यमाश्रिते चन्द्रे) जब चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्।।१३।।

अन्वयार्थ- वहाँ १ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुगन्धित सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दश विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं अनेकवर्षाण्यथ जिनेन्द्रः।।१४।।

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान पार्श्वनाथ ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्मका (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्मका (देशयमानः) उपदेश देते हुए (सप्तत्यून वर्षाणि) ४ माह कम ७० वर्ष तक (व्यवहरत्) विहार किया।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं सम्मेद पर्वतं रम्यम्।

चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत्स्वयंभू प्रभृति।।१५।।

अन्वयार्थ- (अथ) समवशरण और धर्मोपदेश के समाप्ति के पश्चात् विहार करते हुए (भगवान) पार्श्वनाथ भगवान (दिव्यं रम्यं सम्मेद पर्वतं सम्प्रापत्) सम्मेद शिखर पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ तक साथ में (स्वयंभू प्रभृतिः) स्वयंभू स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्यसंघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

सुवर्णकूटोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे भगवान (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभायमान (सुवर्ण कूटोद्याने) सुवर्ण भद्र कूट के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

श्रावण शुक्ला सप्तम्यां विशाखामृक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्।।१७।।

अन्वयार्थ- (श्रावण शुक्ल सप्तम्यां) श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन (विशाखामृक्षे) विशाखा नक्षत्र में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।

देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।

अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।

अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा)

पार्श्वनाथ भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (दैवतरू-रक्त-चंदन-कालागुरु-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिनेंद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति पार्श्व जिनेश चंद्रे
य: स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति पार्श्व जिनेश चंद्रे) भगवान पार्श्वनाथ (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,

संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाली हुई मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करती हूँ।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,
संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ताः॥२२॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की सादर परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे मोक्ष की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२३॥

द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२४॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सु प्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमला: सुगतिं प्रयाता:,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥२५॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षा: पण्डो: सुता:) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेता:) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहित: बलभद्रनामा तु तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गगिरि से तथा (जितरिपु: सुवर्णभद्र:) कर्म मुनि सुवर्णभद्र से (नद्या: तटे) चेलना नदी के किनारे से मुक्ति को प्राप्त हुए। (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले) सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधव:) जो साधु (हतमला:) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाता:) उत्तम सिद्धगति को प्राप्त हुए हैं

(जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य पुरुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥२६॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितमया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥२७॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।

उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए सद लक्ख कोडी एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख तिसीदि सगं सद पण्णास वस्स हीणे वास चउक्कम्मि सेसकालम्मि सम्मेए पव्वए सावण मासस्स सुक्क सप्तमीए पुव्वण्हे विसाखा णक्खत्ते भयवदो पासजिणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग

किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करती हूँ। (चउत्थ समयस्स मज्झिमे भाए) चौथे काल के मध्य भाग में (सद लक्ख कोडि एग सड्ढं पल्लूण तेत्तीसा तिहत्तरि णवसद सागरोवम पणसट्ठी लक्ख तीसिदि सग सद पण्णास वस्स हीणे) १०० लाख कोडी डेढ़ पल्य कम ३३७३९०० सागर ६५८३७५० वर्ष कम होने पर (वास चउकम्मि सेसकालम्मि) और चौथे काल के शेष रहने पर (सम्मेए पव्वए सावणमासस्स सुक्क सप्तमीए पुव्वण्हे विसाखा णक्खत्ते भयवदो पासजिणं सिद्धिं गदो) सम्मेद शिखर पर्वत से श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन विशाखा नक्षत्र के रहते हुए श्री पार्श्वनाथ भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहती हुई वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करती हूँ, पूजा करती हूँ, वंदना करती हूँ, नमस्कार करती हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं,

समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे जिनगुण सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

पार्श्वनाथ भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना

प्रानत देवलोक तें आये, वामा दे उर जगदाधार।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरित तन सुखदातार।।
जरत नाग जुग बोधि दियो जिहिं, भुवनेसुरपद परम उदार।
ऐसे पारस को तजि आरस, थापि सुधारस हेत विचार।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुरदीरधि सों जल कुम्भ भरौं, तुव पादपद्म तर धार करौं।
सुखदाय पाय यह सेवत हौं, प्रभु पार्श्व पार्श्व गुन सेवत हौं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

हरिगंध कुंकुम कर्पूर घसौं, हरिचिन्ह हेरि अरचौं सुर सों।
सुखदाय पाय यह सेवत हौं, प्रभु पार्श्व पार्श्व गुन सेवत हौं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

हिम हीर नीरज समान शुचं, वर तंदुल पुंज तवाग्र मुचं।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

कमलादिपुष्प धनु पुष्प धरी, मदभंजन हेतु ढिग पुंज करी।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

चरू नव्य गव्य रस सार करौं, धरि पादपद्म तर मोद भरौं।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

मणि दीप जोति, जगमग्ग मई, ढिग धारतें स्व पर बोध ठई।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

दश गंध खेय मन माचत हैं, वह धूम धूम मिसि नाचत है। सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

फल पक्व शुद्ध रसजुक्त लिया, पदकंज पूजिहौं खोलि हिया।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

जल आदि साजि सब द्रव्य लिया, कनथार धार नुतनृत्य किया।सु०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली
(छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा)

पक्ष बैशाख की श्याम दूजी भनो, गर्भकल्यान को द्योस सो ही गनो।
देव देवेन्द्र श्रीमातु सेवें सदा, मैं जजौं नित्य ज्यों विघ्न होवे विदा।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि०।।१।।

पौष की श्याम एकादशी को स्वजी, जन्मलीनो जगन्नाथ धर्मध्वजी।
नाग-नागेन्द्र नागेन्द्र ने पूजिया, मैं जजौं ध्याय के भक्ति धारौंहिया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि०।।२।।

कृष्ण एकादशी पौष की पावनी, राज को त्याग वैराग धारयो वनी।
ध्यान चिद्रूप को ध्याय साता भई, आपको मैं जजौं भक्ति भावैं लई।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि०।।३।।

चैत की चौथि श्यामा महाभावनी, ता दिना घातिया घाति शोभा बनी।
बाह्य आभ्यन्तरे छन्द लक्ष्मीधरा, जयति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि०।।४।।

सप्तमी शुद्ध शोभे महासावनी, ता दिना मोक्ष पायो महापावनी।।
शैल सम्मेद तें सिद्ध राजा भये, आप को पूजत सिद्ध काजा ठये।।
ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

(दोहा)

पार्श्व पर्म गुनराशि है, पार्श्व कर्म हरतार।
पार्श्वशर्म निजवास दो, पार्श्वधर्म धरतार।१।
नगरबनारसि जन्म लिय, वंश इक्ष्वाकु महान।
आयु वरष शत तुंग तन-हस्त सु नौ परमान।२।

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश, तुव गुण गण फणि गावत अशेष।
जय जय जय आनन्द कन्द चन्द, जय जय भवि पंकज को दिनन्द।३।
जय जय शिवतिय बल्लभ महेश, जय ब्रह्मा शिवशंकर गनेश।
जय स्वच्छ चिदंग अनंगजीत, तुम ध्यावत मुनिगण सुहृद मीत।४।
जय गरभागममंडित महंत, जग जनमन मोदन परम सन्त।
जय जनम महोच्छव सुखद धार, भवि सारंग को जलधर उदार।५।
हरि गिरिवर पर अभिषेक कीन, झट तांडव निरत अरंभ दीन।
बाजन बाजत अनहद अपार, को पार लहत वरणत अवार।६।
दृमदृम दृमदृम दृम दृम मृदंग, घनघन नननन घण्टा अभंग।
छमछम छमछम छम छुद्र घण्ट, टमटम टमटम टम टंकोर तंट।७।
झननन झननन नूपुर झँकोर, तननन तननन नन तान शोर।
सन नन नन नन नन गगन मांहि, फिरि फिरि फिरि फिरि फिरकी लहांहि।८।
ताथेई थेइ थेइ थेइ धरत पाव, चटपट अटपट झट त्रिदशराव।
करके सहस्र कर को पसार, बहुभांति दिखावत भाव प्यार।९।
निज भगति प्रगट जित करत इन्द्र, ता कों क्या कहिं सकिहे कविन्द्र।

जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म, अरू सभा ईस तुम देव शर्म।१०।
अरू नाचत मघवा भगति रूप, बाजे किन्नर बाज्जत अनूप।
सो देखत ही छवि बनत वृन्द, मुख सों कैसे वरनै अमन्द।११।
धन घड़ी सोय धन देव आप, धन तीर्थंकर प्रकृति प्रताप।
हम तुमको देखत नयन द्वार, मनु आज भये भवसिन्धु पार।१२।
पुनि पिता सौंपि हरि स्वर्ग जाय, तुम सुख समान भोग्यो जिनाय।
फिर तप धरि केवल ज्ञान पाय, धरमोपदेश दे शिव सिधाय।१३।
हम शरणागत आये अबार, हे कृपासिन्धु गुण अमलधार।
मो मन में तिष्ठहु सदाकाल, जबलों न लहौं शिवपुर रसाल।१४।
निरवाण थान सम्मेद जाय वृन्दावन वंदत शीस नाय।
तुम ही सब दुख दंद हरण, ता तें पकरी यह चरण शरण।१५।

घत्ता-

जय जय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर, पार्श्व पती।
वृन्दावन ध्यावत, पूज रचावत, शिवथल पावत शर्म अती।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त -

पारसनाथ अनाथनि के हित, दारिद गिरि को वज्र समान।
सुखसागरवर्द्धन को शशिसम, दव कषाय को मेघ महान।।
तिन को पूजे जो भवि प्रानी, पाठ पढ़े अतिआनन्द आन।
सोपावे मनवांछित सुख सब, और लहे अनुक्रम निरवान।१७।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्ण भद्र है कूट ।
मन वच तन कर पूजहूँ, जाऊं करम से छूट।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनिः द्वयाशीति कोटिः चतुरशीति लक्ष पंचचत्वारिंशत् सहस्त्र सप्त शतद्विचत्वारिंशत् सुवर्णभद्रकूटतः मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्याय नमः

श्री महावीर निर्वाण भक्ति

विबुधपति-खगपति नरपति धनदोरग भूत यक्षपति महितम्।
अतुल सुख विमल निरूपम शिवमचल मनामयं हि संप्राप्तम्॥१॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोक परम गुरूम्।
भव्यजनतुष्टि जननै दुरवापैः सन्मतिं भक्त्या ॥२॥

अन्वयार्थ- जो (विबुधपति- खगपति -नरपति-धनद उरग भूत-यक्षपति-महितम्) देवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती, कुबेर, धरणेन्द्र, भूत और यक्षों के स्वामियों से पूजे जाते हैं (अचलम्) अविनाशी हैं (अनामयं) निरोगी हैं (अतुल-सुखं) अतुल्य सुख रूप हैं (विमल-निरूपम शिवम्) निर्मल हैं उपमातीत हैं, कल्याणरूप हैं (अनघं) निर्दोष हैं (त्रिलोक परमगुरुम्) तीनों लोकों के श्रेष्ठ गुरू हैं, ऐसे (सम्प्राप्तम्) विशेषणों को प्राप्त (सन्मतिं नत्वा) भगवान महावीर स्वामी को नमस्कार करके (भव्यजन-तुष्टि-जननैः) भव्यजनों को संतोष उत्पन्न करने वाले (दुरवापैः) अत्यन्त दुर्लभ (पंचभिः कल्याणैः) गर्भादि पांच कल्याणकों के द्वारा (संस्तोष्ये) उन भगवान वीरप्रभु की अच्छी तरह से स्तुति करुँगा।

आषाढसुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रितेशशिनि।
आयातः स्वर्गसुखं भुक्त्वापुष्पोत्तराधीशः॥३॥
सिद्धार्थनृपतितनयो भारतवास्ये विदेहकुण्डपुरे।

देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्वप्नान् संप्रदर्श्य विभुः॥४॥

अन्वयार्थ- (पुष्पोत्तर-अधीशः) पुष्पोत्तर विमान का स्वामी (विभुः) भगवान महावीर का जीव (आषाढ-सुसित-षष्ठ्यां) आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन (शशिनि) चन्द्रमा के (हस्तोत्तर-मध्यम-आश्रिते) हस्तोत्तर नक्षत्र के मध्य स्थित होने पर (स्वर्ग सुखं-भुक्त्वा) स्वर्ग के सुखों को भोगकर (भारतवास्ये) भारतवर्ष में (विदेहकुण्डपुरे) विदेह क्षेत्र के कुण्डपुर नगर में (सु-स्वप्नान् संप्रदर्श्य) उत्तम स्वप्नों को दिखाकर (प्रियकारिण्यां) प्रियंकारिणी (देव्यां) देवी और (सिद्धार्थ-नृपति-तनयः) सिद्धार्थ राजा का पुत्र (आयातः) हुआ।

चैत्रसितपक्षफाल्गुनि शशांकयोगे दिने त्रयोदश्याम्।
जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्येषु शुभलग्ने॥५॥
हस्ताश्रिते शशांके चैत्र ज्योत्सने चतुर्दशीदिवसे।
पूर्वाण्हे रत्नघटै र्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम्॥६॥

अन्वयार्थ-(चैत्र-सित-पक्ष-फाल्गुनि-शशांकयोगे-त्रयोदश्याम् दिने) चैत्रमास शुक्ल पक्ष तेरस के दिन जब उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र तथा चन्द्र योग था (सौम्येषु ग्रहेषु स्व-उच्चस्थेषु-जज्ञे) शुभग्रह अपने-अपने उच्च स्थान पर स्थित थे (शुभ लग्ने) शुभ लग्न था (शशांके हस्ताश्रिते) चन्द्रमा हस्त नक्षत्र पर स्थित था तथा (चैत्र ज्योत्सने) चैत्र शुक्ल तेरस के दिन महावीर का जन्म हुआ था। (चतुर्दशी दिवसे) चतुर्दशी के दिन (पूर्वाण्हे) प्रातः काल में (विबुधेन्द्राः) इंद्रों ने (रत्नघटैः अभिषेकं चक्रुः) रत्नमय कलशों से उन वीर का अभिषेक किया था।

भुक्त्वा कुमार काले सहस्र त्रिंशद्धवर्षाण्यनंत गुणराशिः।

अमरोपनीत भोगान्सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्यु:॥७॥

नानाविधरूपचितां विचित्र कूटोच्छ्रितां मणि विभूषाम्।

चन्द्र प्रभाख्यशिविकामारूह्य पुराद्विनि:क्रान्त:॥८॥

मार्गशिर कृष्ण दशमी हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते सोमे।

षष्ठेन त्वपराण्हे भक्तेन जिन: प्रवव्राज॥९॥

अन्वयार्थ- जो वर्धमान स्वामी (अनंत-गुण-राशि:) अनंत गुणों के राशि स्वरूप (कुमार काले) कुमार अवस्था में (त्रिंशत् वर्षाणि) ३० वर्षों तक (अमर-उपनीत भोगान्-भुक्त्वा) देवों के द्वारा लाये गये भोगों को भोगकर (सहसा अभिनिबोधित:) अचानक वैराग्य को प्राप्त हो गये तथा (अन्येद्यु:) दूसरे दिन(नानाविधरूपचितां) विविध प्रकार के चित्रों से (विचित्र कूटोच्छ्रितां) विचित्र-ऊँचे-ऊँचे शिखरों से ऊँची विशाल (मणि-विभूषाम्) मणियों से सुशोभित ऐसी (चन्द्र प्रभाख्य शिविकाम्-आरूह्य) चन्द्रप्रभा नामक पालकी पर आरोहण करके (पुरात् विनिष्क्रांत:) कुण्डपुर नगर से बाहर निकल गये (मार्ग-शिर-कृष्ण-दशमी-हस्तोत्तर-मध्यमाश्रिते सोमे) अगहन वदि दशमी के शुभ दिन जब चन्द्रमा हस्तोत्तर नक्षत्र पर था, उन्होंने (षष्ठेन भक्तेन त्वपराण्हे) दो उपवास का नियम ग्रहण कर अपरान्ह काल में (जिन: प्रवव्राज) निर्ग्रंथ दीक्षा धारण कर ली।

ग्रामपुर खेटकर्वटमटंब घोषाकरान्प्रविजहार।

उग्रैस्तपोविधानै: द्वादशवर्षण्यमरै: पूज्य:॥१०॥

अन्वयार्थ- (अमरै: पूज्य:) देवों से पूज्य मुनिराज वर्धमान ने (उग्रै: तपोविधानै:) उग्र तपों के विधान से (द्वादश-वर्षाणि)

बारह वर्ष तक (ग्राम-पुर-खेट-कर्वट-मटंब, घोषा-करान्) ग्राम-पुर-खेट-कर्वट- मटम्ब-घोष और आकर आदि में (प्रविजहार) प्रकृष्ट विहार किया।

ऋजुकूलायास्तीरे शाल्मद्रुम संश्रिते शिलापट्टे।
अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे।।११।।

अन्वयार्थ- (ऋजुकूलायाः तीरे) ऋजुकूला नदी के किनारे (खलु जृम्भिकाग्रामे) जृम्भिका ग्राम के पास (शाल्मद्रुम संश्रिते शिलापट्टे) शाल वृक्ष के नीचे शिला पर स्थित (अपराण्हे षष्ठेन स्थितस्य) अपरान्ह में बेला का नियम लेकर विराजमान हो गये।

वैशाखसितदशम्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते चंद्रे।
क्षपक श्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवलज्ञानम्।।१२।।

अन्वयार्थ- (वैशाखसितदशम्यां) वैशाख शुक्ल दशमी (हस्तोत्तर मध्यमाश्रिते चन्द्रे) जब चन्द्रमा हस्तोत्तर नक्षत्र पर स्थित था तब (क्षपक श्रेण्यारूढस्य उत्पन्नं केवलज्ञानम्) क्षपक श्रेणी पर आरूढ उन मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

अथ भगवान संप्रापद् दिव्यं वैभार पर्वतं रम्यम्।
चातुर्वर्ण्य सुसंघस्तत्राभूत् गौतम प्रभृति।।१३।।

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् (भगवान) वीर भगवान (दिव्यं रम्यं वैभार पर्वतं सम्प्रापत्) विशाल सुंदर मनोज्ञ ऐसे वैभार पर्वत पर पधारे (तत्र) वहाँ (गौतम प्रभृति) गौतम स्वामी को आदि लेकर (चातुर्वर्ण्य संघः अभूत्) मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका रूपचार प्रकार का संघ था।

छत्राशोकौ घोषं सिंहासन दुंदुभिः कुसुमवृष्टिम्।

वरचामर भामण्डल दिव्यान्यन्यानि चावापत्॥१४॥

अन्वयार्थ- वहाँ १ योजन विशाल समवशरण में (छत्र-अशोकौ) दिव्य सुंदर छत्र, अशोक वृक्ष (घोषं) दिव्य ध्वनि (सिंहासन-दुंदुभिः) सिंहासन और दुंदुभि बाजे (कुसुम वृष्टिं) सुमनों की वर्षा (वर-चामर-भामण्डल दिव्यानि-अन्यानि च) उत्तम चंवर, भामण्डल और अन्य अनेक दिव्य वस्तुओं को आपने (अवापत्) प्राप्त किया।

दस विधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा धर्मम्।

देशयमानो व्यवहरं स्त्रिंशद्वर्षाण्यथ जिनेन्द्रः॥१५॥

अन्वयार्थ- (अथ) केवलज्ञान के पश्चात् (जिनेंद्रः) भगवान महावीर ने (दशविधम् अनगाराणाम्) दस प्रकार के मुनिधर्म का (तथा) तथा (एकादशधा उत्तरं धर्म) ग्यारह प्रतिमा रूप श्रावक धर्म का (देशयमानः) उपदेश देते हुए (त्रिंशद् वर्षाणि) ३० वर्षों पर्यन्त (व्यवहरत्) विहार किया।

पद्मवनदीर्घिका कुल विविध द्रुमखण्ड मंडितेरम्ये।

पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः॥१६॥

अन्वयार्थ- (सः मुनिः) वे महावीर (पद्मवन दीर्घिकाकुल-विविध-द्रुम खण्ड-मण्डिते) कमलवन समूह और अनेक प्रकारों के वृक्षों से शोभित (पावानगरे उद्याने) पावानगर के उद्यान में (व्युत्सर्गेण स्थितः) कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

कार्तिक कृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्यकर्मरजः।

अवशेषं संप्रापत्व्यजरामरमक्षयं सौख्यम्॥१७॥

अन्वयार्थ- वे सकल परमात्मा महावीर (कार्तिक-कृष्णस्य-अन्ते) कार्तिक अमावस्या और (स्वातौ ऋक्षे) स्वाति

नक्षत्र के काल में (अवशेषं कर्मरजः निहत्य) सम्पूर्ण अघातिया कर्मों का क्षय करके (व्यजरम्-अमरम् अक्षयम् सौख्यम्) निर्दोष अक्षय अविनाशी, शाश्वत सुख को (सम्प्रापद्) प्राप्त किया।

परिनिर्वृत्तं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधह्यथाशु चागम्य।
देवतरू रक्त चंदन कालागरू सुरभिगोशीर्षैः।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिन देहं मुकुटानल सुरभि धूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि गतादिवं खं च वनभवने।।१९।।

अन्वयार्थ- (अथ हि) तत्पश्चात् (जिनेन्द्रं परिनिर्वृत्तं ज्ञात्वा) वीर भगवान को मुक्त हुए जानकर (विबुधाः) इंद्र आदि देवों ने (आशु-आगम्य) शीघ्र आकरके (देवतरु-रक्त-चंदन-कालागुरु-सुरभिगोशीर्षैः) देवदारु, लाल चंदन, कालागरु और सुगंधित गोशीर्ष-चंदनों से (अग्नीन्द्रात्) अग्नि कुमार देवों के स्वामी "अग्नीन्द्र" के (मुकुट-अनल-सुरभि- धूपवर-माल्यैः) मुकुट से प्राप्त अग्नि सुंगन्धित धूप और उत्कृष्ट मालाओं के द्वारा (जिनदेहं) जिर्नेद्र देव के शरीर की (अभ्यर्च्य) पूजा की तथा (गणधरानपि अभ्यर्च्य) गणधरों की भी पूजा की इसके बाद (दिवं खं च-वन गता भवने) वैमानिक देव स्वर्ग को, ज्योतिषी देव आकाश को, व्यन्तर देव वन को तथा भवनवासी देव भवनों को चले गये।

इत्येवं भगवति वर्धमान चंद्रे
यः स्तोत्रं पठति सुसंध्ययो र्द्वयोर्हि।
सोऽनंतं परम सुखं नृ देव लोके,
भुक्त्वान्ते शिवपदमक्षयं प्रयाति।।२०।।

अन्वयार्थ- (इति एवं) इस प्रकार (भगवति वर्धमान चंद्रे)

भगवान महावीर (स्तोत्रं) स्तोत्र को (यः) जो (द्वयोः हि) दोनों हि (सुसंध्ययोः पठति) संध्याओं में पढ़ता है (सः) वह (नृ-देवलोके) मनुष्य और देवलोक में (परम सुखं भुक्त्वा) उत्तम सुखों को भोगकर (अन्ते) अन्त में (अक्षयं-अनंतं शिवपदं) अविनाशी शाश्वत ऐसे मोक्ष को (प्रयाति) पाता है।

यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां,
निर्वाण भूमिरिह भारत वर्ष जानाम्।
तामद्य शुद्धमनसा क्रिययावचोभिः,
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमिभक्त्या॥२१॥

अन्वयार्थ- (इह) यहाँ जम्बूद्वीप में (यत्र) जहाँ (भारतवर्षजानाम्) भारतदेश में उत्पन्न (अर्हतां, गणभृतां, श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि) अर्हंतों की तीर्थंकरों की गणधरों की श्रुतकेवलियों की निर्वाण भूमियां हैं। (संस्तोतुम्-उद्यत-मतिः) उन की स्तुति करने के लिए तत्पर बुद्धि वाला हुआ मैं (भक्त्या) भक्तिपूर्वक (ताम्) उनको (अद्य) अभी (शुद्ध-मनसा-क्रियया-वचोभिः) शुद्ध योगों से (परिणौमि) नमस्कार करता हूँ।

कैलाश शैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ,
शैलेशिभावमुपपद्य वृषो महात्मा।
चम्पापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्,
सिद्धिं परामुपगतो गतरागबन्धः॥२२॥

अन्वयार्थ- (शैलेशिभावम् उपपद्य) अठारह हजार शीलों के स्वामीपने को प्राप्त करके (असौ महात्मा वृषः) ये महान आत्मा वृषभदेव (कैलाश-शैल-शिखरे) कैलाश पर्वत के शिखर से (परिनिर्वृतः) निर्वाण को प्राप्त हुए (गत-रागबन्धः

सुधीमान्) वीतरागी केवलज्ञानी (वसुपूज्यसुतः चम्पापुरे) राजा वसुपूज्य के सुपुत्र-भगवान् वासुपूज्य ने चम्मापुर से (परां सिद्धिं उपगतः) उत्कृष्ट सिद्धि को प्राप्त किया।

यत्प्रार्थ्यते शिवमयं विबुधेश्र्वराद्यैः,
पाखण्डिभिश्र्च परमार्थगवेष शीलैः।
नष्टाष्ट कर्म समये तदरिष्टनेमिः,
संप्राप्तवान् क्षितिधरे वृहदूर्जयन्ते।। २३।

अन्वयार्थ- (विबुधेश्र्वराद्यैः) इन्द्र आदि देवों के द्वारा (च) और (परमार्थ-गवेषशीलैःपाखण्डिभिः) आत्मा की खोज करने वाले अन्य लिंगधारियों के द्वारा भी (यत् शिवम् प्रार्थ्यते) जिस मोक्ष की इच्छा की जाती है (तत्) उस मोक्ष को (अयं अरिष्टनेमिः) इन नेमिनाथ भगवान ने (नष्ट-अष्ट-कर्म समये) अष्ट कर्मों का क्षय करते ही, (वृहत्-उर्जयन्ते क्षितिधरे) उर्जयन्त पर्वत से (संप्राप्तवान्) प्राप्त किया।

पावापुरस्य बहिरुन्नत भूमिदेशे,
पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्री वर्द्धमान जिनदेव इति प्रतीतो,
निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा।।२४।।

अन्वयार्थ- (पावापुरस्य बहिः) पावापुर के बाहर (पद्म-उत्पलाकुलवतां) कमल से भरे हुए (सरसां हि मध्ये) तालाब के बीच में ही (उन्नतभूमिदेशे) ऊँचे भूमि प्रदेश पर (श्रीवर्धमान-जिनदेव इति प्रतीतो भगवान्) श्री वर्धमान भगवान् ने (प्रविधूतपाप्मा निर्वाणमाप) पापों का क्षय करके मोक्ष पाया।

शेषास्तु ते जिनवरा जितमोहल्ला,

ज्ञानार्क भूरि किरणैरव भास्य लोकान्।
स्थानं परं निरवधारित सौख्यनिष्ठं,
सम्मेद पर्वततले समवापुरीशाः॥२५॥

अन्वयार्थ- (जितमोहमल्लाः) जीत लिया है मोहरूपी मल्ल को जिनने ऐसे (शेषास्तु ते जिनवराः ईशाः) जो शेष तीर्थंकर है, भगवान् हैं वे (ज्ञान-अर्क-भूरि-किरणैः लोकान् अवभावस्य) ज्ञानरूपी सूर्य की अनेकानेक किरणों से लोकों को प्रकाशमान करके (सम्मेद-पर्वत-तले) सम्मेदाचल पर्वत पर (निरवधारित-सौख्यनिष्ठं परं स्थानं) अनन्त सुख से व्याप्त उत्कृष्ठ मोक्ष को (सम् अवापूः) अच्छी तरह से प्राप्त हुए।

आद्यश्चर्तुदश दिनैर्विनिवृत्त योगः,
षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिन वर्द्धमानः।
शेषाविधूत घनकर्म निबद्धपाशाः,
मासेन ते यतिवरांस्त्व भवन्वियोगाः॥२६॥

अन्वयार्थ- (आद्यः) प्रथम तीर्थंकर वृषभदेव ने (चतुर्दशदिनैः विनिवृत्त योगः) चौदह दिनों के द्वारा योग निरोध किया(जिन वर्द्धमानः) वर्द्धमान जिनेन्द्र ने (षष्ठेन-निष्ठित कृतिः) दो दिनों के द्वारा योगों का रिनोध किया (शेषा ते यतिवराः तु मासेन) शेष-२२ तीर्थंकर एक माह के द्वारा योग निरोध कर (विधूत-घन-कर्म-निबद्ध-पाशाः) अत्यन्त दृढ कर्मबंध रूप जाल को नाश कर मुक्त (अभवन्) हुए।

माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धा,
न्यादाय मानसकरैरभितः किरन्तः।
पर्येम आदृतियुता भगवन्निषद्याः,

संप्रार्थिता वयमिमे परमांगतिं ता:॥२७॥

अन्वयार्थ- (वाक् स्तुतिमयैः कुसुमैः) वचनों के स्तुतिमय पुष्पों के द्वारा (सुदृब्धानि माल्यानि) गूँथी हुई सुंदर मालाओं को (मानसकरैः आदाय) मन रूपी हाथों में ग्रहण करके (अभितः) चारों ओर (किरन्तः) बिखेरते हुए (इमे) ये (वयम्) हम (भगवन् निषद्याः आदृति युता पर्येम) भगवन्तों की निर्वाण भूमियों की साद परिक्रमा करते हैं तथा (ताः परमां गतिं सम्प्रार्थिता) उनसे उत्तम सिद्ध गति की प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

शत्रुञ्जये नगवरे दमितारिपक्षाः
पण्डोः सुताः परमनिर्वृत्तिमभ्युपेताः।
तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा,
नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः॥२८॥
द्रोणीमति प्रबल कुण्डल मेढ्रके च,
वैभार पर्वत तले वर सिद्ध कूटे।
ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च
विन्ध्ये च पोदन पुरे वृषदीपके च ॥२९॥
सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे,
दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ।
ये साधवोहतमलाः सुगतिं प्रयाताः,
स्थानानि तानि जगति प्रथितान्य भूवन्॥३०॥

अन्वयार्थ- (दमित अरिपक्षाः पण्डोः सुताः) शत्रु नाशक पाण्डव (शत्रुञ्जये नगवरे परमनिर्वृत्तिम्-अभ्युपेताः) शत्रुञ्जय पर्वत से निर्वाण को प्राप्त हुए (संग रहितः बलभद्रनामा तु

तुंग्यां) समस्त परिग्रह के त्यागी बलभद्र मुनि तुङ्गिगिरि से तथा (जितरिपुः सुवर्णभद्रः) कर्म विजेता मुनि सुवर्णभद्र (नद्याः तटे) चेलना नदी के किनारे से (द्रोणीमति) द्रोणगिरि (प्रबल-कुण्डल-मेढ्रके च) प्रकृष्ट कुण्डलगिरि और मुक्तागिरि (वैभार-पर्वततले) वैभार पर्वत के नीचे से (वर-सिद्धकूटे) सिद्धवर कूट से (ऋषि-आद्रिके) सोनागिरि (विपुलाद्रि-बलाहके च) विपुलाचल तथा बलाहक पर्वत (विन्ध्ये) विन्ध्याचल से (वृषदीपके पोदनपुरे) और धर्म को प्रकाशित करने वाले पोदनपुर से (सह्याचले)सह्याचल पर्वत (सुप्रतिष्ठे-हिमवति अपि) अति-प्रसिद्ध हिमालय पर्वत (दण्डात्मके गजपथे पृथुसार यष्टौ) दण्डाकार गजपंथा और वंशस्थ पर्वत से (ये साधवः) जो साधु (हतमलाः) कर्मों का क्षयकर (सुगतिं प्रयाताः) मोक्ष को प्राप्त हुए हैं (जगति) संसार में (तानि स्थानानि) वे सभी स्थान (प्रथितानि अभूवन्) प्रसिद्ध हुए।

इक्षोर्विकार रसपृक्त गुणेन लोके
पिष्टोऽधिकं मधुरतामुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्य परुषै रुषितानि नित्यं,
स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥३१॥

अन्वयार्थ- (यद्वत्) जिस प्रकार (लोके) लोक में (इक्षोः विकार रसपृक्त गुणेन) गन्ने के रस से निर्मित (पिष्टः) आटा (अधिकं मधुरताम्) अधिक मधुरता को (उपयाति) प्राप्त हो जाता है। (तद्वत् च) उसी प्रकार (पुण्य पुरुषैः उषितानि) महापुरुषों के आश्रित (तानि स्थानानि) वे स्थान (इहजगतां नित्यं पावनानि) इस संसार को सदैव पवित्र करने वाले होते हैं।

इत्यर्हतां शमवतां च महामुनीनां,
प्रोक्तामयात्र परिनिर्वृति भूमि देशाः।
ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः
दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम्॥३२॥

अन्वयार्थ- (इति) इस प्रकार (मया) मेरे द्वारा (अत्र) यहाँ- (अर्हतां शमवतां च महामुनीनां) तीर्थंकर जिन और साम्यभाव को प्राप्त महामुनियों के (परिनिर्वृति भूमि देशाः प्रोक्ताः) निर्वाण स्थलों को कहा गया (ते जितभयाः जिनाः शांताः मुनयः च) वे निर्भय तीर्थंकर जिन और शांत मुनिराज (मे) मेरे लिए (आशु) शीघ्र (निरवद्यसौख्याम् सुगतिं दिश्यासु) निर्दोष सुख से युक्त उत्तम मोक्ष गति को प्राप्त कराने वाले हों।

शांति कुन्थ्वर कौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ।
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः॥१॥

अन्वयार्थ- (शांतिकुन्थु-अर-कौरव्या) शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर कुरूवंश में (नेमि सुव्रतौ) नेमिनाथ और मुनिसुव्रत ये दो तीर्थंकर (यादवौ) यदुवंश में (पार्श्ववीरौ उग्रनाथौ) पार्श्वनाथ जी उग्रवंश में तथा महावीर नाथवंश में (शेषा इक्ष्वाकु वंशजाः) तथा शेष सत्रह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हैं।

- अंचलिका -

इच्छामि भंते! परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि, अवसप्पिणीए चउत्थ समयस्स पच्छिमे भाए आउट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि, पावाए णयरीए कत्तिय मासस्स किण्ह चउद्दसिए रत्तीए सादीए, णक्खत्ते,

पच्चूसे, भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो। तिसुवि लोएसु भवण वासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण णिच्चकालं अंच्चंति पूजंति, वंदंति, णमंस्संति, परिणिव्वाण महाकल्लाण पुज्जं करंति। अहमवि इहसंतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

अन्वयार्थ - (भंते) हे भगवन! मैंने (परिणिव्वाण भत्ति काउस्सग्गोकओ) परिनिर्वाण भक्ति से संबंधित कायोत्सर्ग किया (तस्स आलोचेउं इच्छामि) उस की आलोचना करने की इच्छा करता हूँ। (इमम्मि अवसप्पिणीए चउत्थ समयस्स पच्छिमे भाए) इस अवसर्पिणी संबंधी चौथे काल के अन्तिम भाग में (आउट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि) साढ़े तीन माह कम चार वर्ष अर्थात् ३ वर्ष आठ मास १५ दिन काल शेष रहने पर (पावाए णयरीए कत्तियमासस्स किण्हचउद्दसिए रत्तीए सादीए णक्खत्ते पच्चूसे भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो जिणो सिद्धिं गदो) पावानगरी में कार्तिक मास की कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में स्वाति नक्षत्र के रहते हुए प्रभात काल में भगवान महति महावीर वर्धमान निर्वाण को प्राप्त हुए। (तिसुविलोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासियत्ति चउव्विहादेवा सपरिवारा दिव्वेण ण्हाणेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण अक्खेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण चुण्णेण,

दिव्वेण दीवेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण वासेण) तीनों लोकों में चार प्रकार के देव दिव्यजल, दिव्य गंध, दिव्य अक्षत, दिव्य पुष्प, दिव्य नैवेद्य, दिव्यदीप, दिव्यधूप, दिव्यफलों के द्वारा (णिच्चकालं अंचंति पुज्जंति वंदंति णमंसंति परिणिव्वाण-महाकल्लाण पुज्जं करेंति) नित्यकाल अर्चना करते हैं, पूजा करते हैं, वंदना करते हैं, नमस्कार करते हैं, परिनिर्वाण महाकल्याण पूजा करते हैं (अहमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंस्सामि) मैं भी यहाँ रहता हुआ वहाँ स्थित निर्वाण क्षेत्रों की नित्यकाल अर्चा करता हूँ, पूजा करता हूँ, वंदना करता हूँ, नमस्कार करता हूँ (दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगईगमणं, समाहि मरणं) मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो सुगति में गमन हो, समाधि मरण हो (जिणगुण-सम्पत्ति होउ मज्झं) मुझे गुणरूपी सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

"इति"

श्रीमहावीर भगवान की पूजा एवं टोंक वन्दना
(मत्तगयन्द छंद)

श्रीमत वीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणा-धन-धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टक आदि अनेक रागों में बनती है)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरौं।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करौं।।
श्रीवीर महा-अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा।१।

मलयागिर चन्दनसार, केसर संग घसौं।
प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसौं।।श्रीवीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।।२।।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनो थार भरी।
तसु पुंज धरौं अविरुद्ध, पावौं शिवनगरी।।श्रीवीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।३।।

सुरतरू के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजौं पद थारे।।श्री वीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा।।४।।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।।श्री वीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।।५।।

तमखंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हौं।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हौं।।श्रीवीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।।६।।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।

तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा।।श्रीवीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।।७।।

रितु फल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरौं।

शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरौं। श्री वीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा।।८।।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरौं।

गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरौं।।श्रीवीर०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ्यावली

(राग टप्पा)

मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्द्धमान जिनरायजी मोहि राखो०।।

गरभ साढ़ सित छट्ट लियो थित, त्रिशला उर अघ हरना।

सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजूं भवतरना।।

मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला षष्ठ्यां गर्भमंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जन्म चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।

सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजौं भवहरना।मोहि०

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहा०अर्घ्यं नि०।।२।।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।

नृपति कूल घर पारन कीनों, मैं पूजौं तुम चरना।मोहि०

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महा०अर्घ्यं नि०।।३।।

शुक्ल दशैं वैशाख दिवस अरि, घात चतुक क्षय करना।

केवल लहि भवि भवसर तारे, जजौं चरन सुख भरना। मोहि०

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला-दशम्यां केवल ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहा०अर्घ्यं नि०।।४।।

कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुर तैं वरना।
गणफनिवृन्द जजें तित बहुविध मैं पूजौं भयहरना।मोहि०

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहा० अर्घ्यं नि०।।५।।

जयमाला

(छंद हरिगीतिका-२८ मात्रा)

गणधर, अशनिधर, चक्रधर, हलधर, गदाधर, वरवदा।
अरू चापधर, विद्यासुधर तिरशूलधर सेवहिं सदा।।
दुखहरन आनंदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुण मनिमाल उन्नत भालकी जयमाल हैं।

छन्द घत्ता

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयन धरं।।

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु-कला-सदनं, भवि-कोक-विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञान-दृगांवर चूर करं।१।
गर्भादिक मंगल मंडित हो, दुखदारिद को नि र खंडित हो।
जग माहिं तुम्हीं सतपंडित हो, तुम ही भवभाव-विहंडित हो।२।
हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो।
लहि केवलधर्म प्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजतियो।३।
पुनि आप तने गुण माहिं सही, सुरमग्न रहैं जितने सबही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं, लय-ताननिसों मनभावत हैं।४।
पुनि नाचत रंग उमंग-भरी, तुअ भक्ति विषै पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं।५।

घननं घननं घनघंट बजै, दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गननांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता।६।
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसालजु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें।७।
किन्नर सुर बीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं।
करताल विषै करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं।८।
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुरभक्ति करें प्रभुजी तुमरी।
तुमही जग जीवन के पितु हो, तुमही बिनकारनतें हितु हो।९।
तुमही सब विघ्न विनाशक हो, तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चितचिंतितदायक हो,जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो।१०।
तुमरे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सबही।
हमतो तुमरी शरणागत हैं, तुमरे गुन में मन पागत है।११।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो।१२।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभभाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो।१३।
जबलों नहिं नाश करौं अरिको, शिव नारि वरौं समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।१४।

घत्ता-

श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वाँछित पावै शर्म वरा।।

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-

श्रीसन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीत।

वृन्दावन सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

।।दोहा।।

महावीर जिन सिद्ध भए, पावापुर से जोय।

मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर नमूं पद दोय।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुरेः पदमूसरोवरात् षडविंशति मुनिः सह मोक्षंगतः तान् चरणानहं योगैः पुनः पुनः नमस्करोमि जलाद्यर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा- वीतराग वंदौं सदा, भाव सहित सिरनाय।
कहूं काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।१।
चौपाई-अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौं भाव- भगति उर धार।२।
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि' स्वामी महावीर।
'शिखर सम्मेद'जिनेश्वर बीस, भाव सहित वंदौं निश-दीस।३।
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव सहित कर जोडि।४।
श्री ' गिरनार' शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भू-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय।५।
राम चंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पांच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार।६।
पांडव तीन, द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस , भाव सहित वंदौं निश-दीस।७।
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।

श्री, 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहूं काल।८।
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़िनिन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान।९।
नंग अनंग कुमार सुजान , पांच कोड़ि अरू अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि'-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश।१०।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरू लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास।११।
रेवानदी 'सिद्धवर-कूट' पश्चिम दिशा देह जहं छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, उटकोड़ि वंदौं भव पार।१२।
'बडवानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल' उतुंग।
इंद्रजीत अरू कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सायर तर्ण।१३।
सुवरण- भद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर मंझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास।१४।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरूदत्तादि- मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वंदौं नित तहां।१५।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार।१६
अचलापुर की दिश ईसान, तहां मेंढगिरि' नाम प्रधान।
साढे तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय।१७।
वंसस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिश 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करुं प्रणाम।१८।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करुं जोड़ जुग पान।१९।
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।

वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।२०।
'मथुरा नगरी' पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।२१।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहां।
मन-वच-काय सहित शिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।२२।
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
भैया वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल।२३।

श्री चौबीस-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्र पूजा

सोरठा- परम पूज्य चौबीस, जिंह जिंह थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन वच तन पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर क्षेत्राणि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति० क्षेत्राणि ! अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गीता-छन्द

शुचि छीरोदधि-सम नीर निरमल, कनक-झारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलास को।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः जलं निर्व० स्वाहा।१।

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भव-ताप को संताप मेटो, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनं निर्व० स्वाहा।२।

मोती-समान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरौं।
औगुन हरो, गुन करो हमको, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतान् निर्व० स्वाहा। ३।

शुभफूल -रास सुवास-वासित, खेद सब मन को हरौं।
दुख-धाम-काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं।।सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्व० स्वाहा। ४।

नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं।
मम भूख-दूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा पावापुरि कैलास को।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवास को।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा। ५।

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं।
संशय-विमोह-विभरम-तम-हर, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा। ६।

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं।
सब करम-पुंज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौं।। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।७।

बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं।।
निहचै मुकति-फल देहु मोको, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।८।

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निर्भय जगत सो, जोर कर विनती करौं।। सम्मेद०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।९।

जयमाला

सोरठा:- श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमौं।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणते।१।

चौपाई १६ मात्रा

नमौं ऋषभ कैलास पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं, सन्मति पावापुर अभिनंदौं ।२।
वंदौं अजित अजित पद-दाता, वंदौं संभव भव-दुख-घाता।
वंदौं अभिनंदन गुण-नायक, वंदौं सुमति सुमति के दायक ।३।
वंदौ पदम मुकति-पदमाकर, वंदौं सुपार्स आस-पाशा हर।
वंदौं चंद्रप्रभ प्रभु चंदा, वंदौं सुविधि सुविधि-निधि-कंदा।४।
वंदौं शीतल अघ तप शीतल, वंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वंदौं अनंत अनंत-सुखभोगी ।५।
वंदौं धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौं शांति शांति-मन-धारा।
वंदौं कुंथु कुंथु-रखवालं, वंदौं अर अरि-हर गुण मालं । ६।
वंदौं मल्लि काम-मल-चूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत-पूरन।
वंदौं नमि जिन नमित-सुरासुर, वंदौं पार्श्व पाश-भ्रम-जग-हर ।७।
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखरसम्मेद-महागिरि भू पर।
भावसहित वंदे जो कोई, ताहि नरक-पुश-गति-नहि होई ।८।
नरपति नृप सुर शुक्र कहावैं, तिंहु जग-भोग भोगि शिव पावैं।
विघन -विनाशक मंगलकारी, गुण-विलास वंदौं भव तारी।९।

दोहा- जो तीरथ जावै पाप मिटावे, ध्यावै गावै भगति करै।
ताकों जस कहिये संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उतरै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति- तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यः पूर्णर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

वर्तमान २४ तीर्थंकर सम्बन्धी कही ज्ञातव्य अर्थात् जानने योग्य बातें।

क्रमांक	तीर्थंकरों के नाम (१)	तीर्थंकरों के पूर्व के तीन भवान्तर		
		पिछले तीसरे भव का		
		द्वीपों के नाम	क्षेत्रों के नाम	देश या प्रान्त
१	२	३	४	५
१	श्री ऋषभनाथ	जम्बूद्वीप	पूर्व विदेह	पुष्कलावति
२	श्री अजितनाथ	"	"	वत्स
३	श्री संभवनाथ	"	"	कच्छ
४	श्री अभिनन्दन	"	"	मंगलावति
५	श्री सुमतिनाथ	धातकीखंड	"	पुष्कलावति
६	श्री पद्मप्रभ	"	"	वत्स
७	श्री सुपार्श्वनाथ	"	"	सुकच्छ
८	श्री चन्द्रप्रभ	"	"	मंगलावति
९	श्री पुष्पदन्त	पुष्करार्ध द्वीप	"	पुष्कलावति
१०	श्री शीतलनाथ	"	"	वत्स
११	श्री श्रेयांसनाथ	"	"	सुकच्छ
१२	श्री वासुपूज्य	"	"	वत्सकावति
१३	श्री विमलनाथ	धातकी खंड	पूर्व भरत	-
१४	श्री अनन्तनाथ	"	पश्चिम ऐरावत	रम्यकावति
१५	श्री धर्मनाथ	"	पूर्व विदेह	वत्स
१६	श्री शान्तिनाथ	जम्बू द्वीप	"	पुष्कलावति
१७	श्री कुंथुनाथ	"	"	वत्स
१८	श्री अरहनाथ	"	"	कच्छ
१९	श्री मल्लिनाथ	"	"	वत्स
२०	श्री मुनिसुव्रत	"	भरत क्षेत्र	अंगदेश
२१	श्री नमिनाथ	"	"	-
२२	श्री नेमिनाथ	"	"	-
२३	श्री पार्श्वनाथ	"	"	कौशल्य
२४	श्री महावीर	"	"	-

१–तीर्थंकर ऋषभदेव को आदिनाथ, आदिब्रह्म, पुष्पदन्त को सुविधिनाथ और महावीर को वर्धमान स्वामी,

नगरी की सीमा	नगरी का नाम	वहाँ के नाम	वहाँ का राजवैभव व्रताचरणादि
६	७	८	९
पूर्व विदेह	पुंडरीकिनी	बज्रनाभि	
सीता नदी के उत्तर तट पर	सुसीमा	विमलवाहन	ऋषभदेव का जीव
सीता नदी के उत्तर तट पर	क्षेमपुरी (झेमा)	विपुलवाहन	तो चक्रवर्ती ११
सीता नदी के दक्षिण तट पर	रत्नसंचयपुर	महाबल	अंग १४ पूर्व का
सीता नदी के उत्तर तट पर	पुंडरीकिनी	अतिबल	वेत्ता था। बाकी
सीता नदी के दक्षिण तट पर	सुसीमा	अपराजित	सब मांडलिक
सीता नदी के उत्तर तट पर	क्षेमपुरी (क्षेमा)	नन्दिषेण	राजा ११ अंग के
सीता नदी के दक्षिण तट पर	रत्नसंचयपुर	पद्मनाभि	पाठी थे। रङ्ग
सीता नदी के उत्तर तट पर	पुंडरीकिनी	महापद्म	सबका सुवर्ण
सीता नदी के दक्षिण तट पर	सुसीमा	पद्मगुल्म	सरीखा था। यह
सीता नदी के उत्तर तट पर	क्षेमपुरी (क्षेमा)	नलिनप्रभ	सब सिंहनिष्क्रीडित
सीता नदी के दक्षिण तट पर	रत्नसंचयपुर	पद्मोत्तर	व्रत के आचरण
-	महानगर	पद्मरथ	करने वाले एक
-	अरिष्टपुर	पद्मसेन	मास पर्यन्त
सीता नदी के दक्षिण तट पर	भद्रिलापुर (सुभद्रिका)	दशरथ	प्रायोपगमन संन्यास
-	पुंडरीकिनी	मेघरथ	के धारक और
सीता नदी के दक्षिण तट पर	सुसीमा	सिंहरथ	स्वर्गगामी थे।
सीता नदी के उत्तर तट पर	क्षेमपुरी (क्षेमा)	धनपति	
सीता नदी के दक्षिण तट पर	वीतशोका	वैश्रवण	
-	चम्पापुर	श्रीधर्मा (हरिवर्म)	
-	कौशाम्बी	सिद्धार्थ	
-	हस्तनागपुर	सुप्रतिष्ठित	
-	अयोध्या (साकेता)	आनन्द	
-	छत्रपुर (छत्राकार)	नन्द (नन्दन)	

सन्मति, वीर, अतिवीर, महातिमहावीर भी कहते हैं और इन्द्र ने तीर्थंकरों की १००८ नामों

क्रमांक	वहाँ के गुरू का नाम	कहाँ से चयकर तीर्थकर हुये	
		स्वर्गादिकों के नाम	वहाँ कौन थे ?
	१०	११	१२
१	वज्रसेन	सर्वार्थ सिद्धि वि.	अहमिन्द्र
२	अरिन्दम	वैजयन्त वि.	"
३	स्वयं प्रभ	उपरिमहिट्ठिमि ग्रै.	"
४	विमल वाहन	वैजयन्त वि.	"
५	सीमंधर	ऊर्ध्व ग्रैवेयक	"
६	पिहिताश्रव	वैजयन्त वि.	"
७	अरिन्दम (अरहनंदन)	मध्य ग्रैवेयक	"
८	युगंधर (श्री धर)	वैजयन्त वि.	"
९	सर्वजनानन्द (मूर्तिहित)	अपराजित वि.	"
१०	अभयानन्द (आनन्द)	आरण स्वर्ग	इन्द्र
११	वज्रदत्त (अनन्त)	अच्युत स्वर्ग	"
१२	वज्रनाभि (युगंधर)	महाशुक्र स्वर्ग	"
१३	सर्वगुप्त	सहस्रार स्वर्ग	"
१४	स्वयंप्रभ (त्रिगुप्ता)	अच्युत स्वर्ग	"
१५	चित्तरक्ष	सर्वार्थ सिद्धि वि.	अहमिन्द्र
१६	विमलवाहन (धनरथ)	सर्वार्थ सिद्धि वि.	"
१७	यतिवृषभ (धनरथ)	सर्वार्थ सिद्धि वि.	"
१८	संबर (अरहनन्द)	सर्वार्थ सिद्धि वि.	"
१९	वरधर्म (श्रीनाग)	अपराजित वि.	"
२०	सुनन्द (अनन्तवीर्य)	प्राणत स्वर्ग	इन्द्र
२१	नन्द (महाबल)	अपराजित वि.	अहमिन्द्र
२२	व्यतीतशोका (सुमंदर)	जयन्त विमान	"
२३	दाम्मर (समुद्रदत्त)	प्राणत स्वर्ग	इन्द्र
२४	प्रौष्ठिल	अच्युत स्वर्ग (पुष्पोत्तर विमान)	"

से स्तुति की है।

तीर्थंकरों का गर्भावतरण-गर्भ कल्याणक

तीर्थंकरों की जन्मभूमि		गर्भावतरण की तिथि इत्यादि		
देश का नाम	जन्मपुरी (नगर या पट्टन)	वंश का नाम	जनक (पिता)	जननी (माता)
१३	१४	१५	१६	१७
कौशल	अयोध्या (साकेतपुर)	इक्ष्वाकुवंश	नाभिराज	मरुदेवी
"	" "	"	जितशत्रु	विजयादेवी
"	श्रावस्ति (श्रावन्ति)	"	दृढ़राज (जितारि)	सुषेणादेवी
"	अयोध्या (साकेतपुर)	"	संवर (स्वयंवर)	सिद्धार्था
"	विनितापुर	"	मेघरथ (मेघप्रभ)	सुमंगला
"	कौशाम्बीपुर	"	धारणाराजा	सुसीमा
काशीदेश	वाराणसी (काशी)	उग्रवंश	सुप्रतिष्ठ	पृथिवी
कौशल	चन्द्रपुरी	"	महासेन (महश्रेणी)	लक्ष्मण (सुलक्षण)
"	काकन्दीपुरी	"	सुग्रीवराजा	जयरामा (रामा)
मालवदेश	भद्रिलापुर	"	दृढरथराजा	सुनन्दादेवी
कौशल	सिंहपुरी	"	विष्णुराज (विमल)	विष्णु श्री (नन्दा)
अंगदेश	चम्पारी	"	वसुपूज्य	जयावती (विजया)
"	कांपिल्य (कपिला)	"	कृतवर्मा (कृतधर्मा)	आर्यशामा (सुरम्या)
"	अयोध्या (साकेतपुर)	"	सिंहसेन	लक्ष्मीमती (सर्वयशा)
"	रत्नपुरी	कुरुवंश	भानुराज	सुप्रभा (सुव्रता)
कुरुजांगल	हस्तिनागपुर	"	विश्वसेन	ऐरादेवी
"	"	"	सुरसेन (सूर्य)	श्रीदेवी (श्रीकान्ता)
"	"	"	सुदर्शन	मित्रसेना (मित्रा)
अंगदेश	मिथिलापुर	इक्ष्वाकुवंश	कुंभराज (राजकुंभ)	प्रभावती (रक्षता)
"	कुशाग्रपुर	यादववंश (हरि)	सुमित्र	सोमा (पद्मावती)
"	मिथिलापुर	इक्ष्वाकुवंश	विजयराज	वर्मिला (वप्रा)
समुद्र देश	शौरीपुर (द्वारका)	यादववंश (हरि)	समुद्र विजय	शिवादेवी
काशी देश	वाराणसी (काशी)	अग्रवंश	विश्वसेन (अश्वसेन)	वामादेवी (ब्राह्मी)
विदेह देश	कुंडलपुर(वैशाली)	नाथवंश	सिद्धार्थ राजा	प्रियकारिणी (त्रिशला देवी)

				तीर्थकरों का जन्माभिषेक	
				जन्म तिथि-समयादि	
क्रमांक	गर्भ तिथि	गर्भ समय	गर्भ नक्षत्र	जन्म तिथि	जन्म समय
	१८	१९	२०	२१	२२
१	आषाढ़ कृ.२	रात्रि के अंत समय	उत्तराषाढ़	चैत्र कृ. ९	-
२	ज्येष्ठ कृ.१५	"	रोहिणी.	पौष्य शु. १०	-
३	फाल्गुण कृ.८	प्रातः समय	मृगशीर्ष	मार्गशीर्ष शु.*३०	चन्द्रमार्योग
४	वैशाख शु.६	रात्रि के पूर्व समय	पुनर्वसु	पौष्य शु.१२	आदित्ययोग
५	श्रावण शु.२	"	मघा	वैशाख कृ. १०	पितृयोग
६	माघ कृ.६	प्रातः समय	चित्रा	कार्तिक कृ. १३	-
७	भाद्रपद शु.६	"	विशाखा	ज्येष्ठ शु.१२	अनिलायोग
८	चैत्र कृ.५	"	ज्येष्ठा	पौष्य कृ११	-
९	फाल्गुण कृ.९	"	मूला	मार्गशीर्ष शु.९	लैत्र योग
१०	चैत्र कृ. ८	"	पूर्वाषाढ़	पौष्य कृ. १२	-
११	ज्येष्ठ कृ.६	"	श्रवण	फाल्गुण कृ.११	-
१२	आषाढ़ शु.६	"	शततारका	फाल्गुण कृ. १४	वरुणयोग
१३	ज्येष्ठ कृ. १०	अष्टमासिया	उत्तराभाद्रपद	पौष्ट शु.४	-
१४	कार्तिक कृ.१	"	रेवती	ज्येष्ठ कृ. १२	पुष्ययोग
१५	वैशाख शु.१३	"	रेवती	पौष्य शु.१३	-
१६	भाद्रपद कृ.७	"	भरणी	ज्येष्ठ कृ.१४	प्रातःसमय
१७	श्रावण कृ. १०	"	कृतिका	वैशाख खु.१	-
१८	फाल्गुन शु. ३	"	रेवती	मार्गशीर्ष शु.१४	-
१९	चैत्र शु.१	"	अश्विनी	मार्गशीर्ष शु.११	-
२०	श्रावण कृ.२	"	श्रवण	चेत्र कृ.१०	-
२१	आश्वनि कृ.	"	आश्विनी	आषाढ कृ.१०	-
२२	कार्तिक शु. ६	"	उत्तराषाढ	श्रावण शु. ६	-
२३	वैशाख कृ. ३	"	विशाखा	पौष्य कृ. ११	अनिलायोग
२४	आषाढ शु.६	"	उत्तराषाढ	चैत्र शु.१३	-

+ ज्येष्ठ कृष्ण १५ यह (अमावश्या तिथि) समझना चाहिये। * मार्गशीर्ष शु.३० यह (पौर्णिमा तिथि) समझना चाहिये।

जन्म कल्याणक

जन्म नक्षत्र	जन्म राशि	शरीर का वर्ण (रङ्ग)	ऊँचाई शरीर की (धनुष)
२३	२४	२५	२६
अभिजित	धनु	" "	५००
रोहिणी	वृषभ	" "	४५०
ज्येष्ठा	मिथुन	" "	४००
पुनर्वसु	"	" "	३५०
मघा	सिंह	" "	३००
चित्रा	कन्या	बन्धूक पुष्प के समान रक्तवर्ण (विद्रुम वर्ण)	२५०
विशाखा	तुला	इन्द्र नील प्रभा समान हरित (पच्च वर्ण)	२००
अनुराधा	वृषभ	कुन्द पुष्प के समान शुभ्र वर्ण (सफेद)	१५०
मूला	धनु	" "	१००
पूर्वाषाढ		तपे हुये सोने के समान वर्ण	९०
श्रवण	मकर	" "	८०
शततारका	कुम्भ	बन्धूक पुष्प के समान रक्त वर्ण (विद्रुम वर्ण)	७०
उत्तराभाद्र.	मीन	तपे हुये सोने के समान वर्ण	६०
रेवती	"	" "	५०
पुष्य	कर्क	" "	४५
भरणी	मेष	" "	४०
कृतिका	वृषभ	" "	३५
रोहिणी	मीन	" "	३०
अश्विनी	मेष	" "	२५
श्रवण	मकर	प्रियंगुप्रभा-इन्द्रनील (श्यामवर्ण)	२०
स्वाती	मेष	तपे हुये सोने के सामन वर्ण	१५
चित्रा	कन्या	प्रियंगुप्रभा-मोर के कंठ के समान (श्यामवर्ण)	१०
विशाखा	कुम्भ	इन्द्रनील प्रभा-पच्च (हरितवर्ण)	९
उत्तरा फा.	कन्या	तपे हुये सोने के समान वर्ण	७

		पूर्ण आयु में से कुमार कालादि काल प्रमाण	
क्रमांक	तीर्थंकरों के लांछन (चिन्ह)	कुमार काल प्रमाण	*राजभोग काल प्रमाण
	२७	२८	२९
१	वृषभ (बैल)	२० लाख पूर्व	६३ लाख पूर्व + ०
२	गज (हाथी)	१८ लाख पूर्व	४३ लाख पूर्व + १ पूर्वाङ्ग
३	अश्व (घोड़ा)	१५ लाख पूर्व	४४ लाख पूर्व + ४ पूर्वाङ्ग
४	कपि (बन्दर)	१२ ।। लाख पूर्व	३६।। लाख पूर्व + ८ पूर्वाङ्ग
५	कोक (चकवा)	१० लाख पूर्व	२९ लाख पूर्व + १२ पूर्वाङ्ग
६	कमल	७।। लाख पूर्व	२१ लाख पूर्व + १६ पूर्वाङ्ग
७	स्वस्तिक (साथिया)	५ लाख पूर्व	१४ लाख पूर्व + २० पूर्वाङ्ग
८	शशि (चन्द्रमा)	२।। लाख पूर्व	६।। लाख पूर्व + २४ पूर्वाङ्ग
९	मकर (मगर)	५० हजार पूर्व	५० हजार पूर्व + २८ पूर्वाङ्ग
१०	कल्प वृक्ष	२५ हजार पूर्व	५० हजार पूर्व
११	गंडक (गेंडा)	२१ लाख पूर्व	४२ लाख पूर्व
१२	महिष (भैंसा)	१८ लाख पूर्व	राजभोग नहीं किया (कुमार श्रमण)
१३	शूकर (सुअर)	१५ लाख पूर्व	३० लाख वर्ष
१४	भल्लूक (भालु-रीछ)	७।। लाख वर्ष	१५ लाख वर्ष
१५	वज्र	२५० हजार वर्ष	५ लाख वर्ष
१६	मृग (हिरण)	२५००० वर्ष	५० हजार वर्ष
१७	मेष (बकरा)	२३७५० वर्ष	४७५०० हजार वर्ष
१८	मीन (मछली)	२१००० वर्ष	४२००० हजार वर्ष
१९	कुम्भ (कलश)	१०० वर्ष	राज नहीं किया (कुमार श्रमण)
२०	कूर्म (कछवा)	७५०० वर्ष	१५ हजार वर्ष
२१	नील कमल	२५०० वर्ष	५ हजार वर्ष
२२	शंख	३०० वर्ष	राज नहीं किया (कुमार श्रमण)
२३	नाग (सर्प)	३० वर्ष	राज नहीं किया (कुमार श्रमण)
२४	सिंह	३० वर्ष	राज नहीं किया (कुमार श्रमण)

* श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ

(को.२८से ३१)

रूपकाल में छद्मस्थ अवस्था काल प्रमाण	केवली अवस्था का काल प्रमाण	पूर्ण आयु प्रमाण वर्ष	दीक्षा तिथि
३०	३१	३२.	३३
१००० वर्ष	१००० वर्ष कम-एक लाख पूर्व	८४ लाख पूर्व	चैत्र कृ.९
१२ वर्ष	१ पूर्वांग+ १२ वर्ष कम-एक लाख पूर्व	७२ लाख पूर्व	पौष्य शु.९
१४ वर्ष	४ पूर्वांग+ १४ वर्ष कम-एक लाख पूर्व	६० लाख पूर्व	मार्गशीर्ष शु.३०
१८ वर्ष	८ पूर्वांग+ १८ वर्ष कम-एक लाख पूर्व	५० लाख पूर्व	पौष्य शु. १२
२० वर्ष	१२ पूर्वांग+ २० वर्ष कम-एक लाख पूर्व	४० लाख पूर्व	वैशाख शु. ९
६महीना	१६ पूर्वांग+ ६ महीना कमल-एक लाख पूर्व	३० लाख पूर्व	मार्गशीर्ष शु.१०
९ वर्ष	२० पूर्वांग+ ९ वर्ष कम-एक लाख पूर्व	२० लाख पूर्व	ज्येष्ठ शु १२
३ महीना	२४ पूर्वांग+ ३ महीना कम-एक लाख पूर्व	१० लाख पूर्व	पौष्य कृ.१२
४ वर्ष	२८ पूर्वांग+ ४ वर्ष कम-एक लाख पूर्व	२ लाख पूर्व	मार्गशीर्ष शु.९
३ वर्ष	३ वर्ष कम २५००० वर्ष	१ लाख पूर्व	पौष्य कृ.१२
२ वर्ष	२ वर्ष कम २१००००० वर्ष	८४ लाख वर्ष	फाल्गुन कृ.११
१ वर्ष	१ वर्ष कम ४५००००० वर्ष	७२ लाख वर्ष	फाल्गुन शु. १४
३ वर्ष	१४९९९९७ वर्ष	६० लाख वर्ष	पौष्य शु. ४
२ वर्ष	७४९९९८ वर्ष	३० लाख वर्ष	ज्येष्ठ कृ.१२
१ वर्ष	२४९९९९ वर्ष	१० लाख वर्ष	पौष्य शु. १
१६ वर्ष	२४९८४ वर्ष	१ लाख वर्ष	ज्येष्ठ कृ. ४
१६ वर्ष	२३७३४ वर्ष	९५ हजार वर्ष	वैशाख शु.१
१६ वर्ष	२०९८४ वर्ष	८४ हजार वर्ष	मार्गशीर्ष शु.१०
६ दिन	६ दिन कम-५४९०० वर्ष	५५ हजार वर्ष	मार्गशीर्ष शु.११
११ महीना	११ महीना कम -७५०० वर्ष	३० हजार वर्ष	वैशाख कृ. १०
१ वर्ष	१ वर्ष कम -२५०० वर्ष	१० हजार वर्ष	आषाढ़ कृ.१०
५६ दिन	५६ दिन कम-७०० वर्ष	१ हजार वर्ष	श्रावण शु. ६
४ महीना	४ महीना कम-७० वर्ष	१०० वष	पौष्य कृ.११
१२ वर्ष	३० वर्ष	७२ वर्ष	कार्तिक कृ.१३

अरहनाथ ये तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती भी हुए और कामदेव भी हुए राज्य छोड़कर वैराग्य (दीक्षा) लिया।

तीर्थंकरों के दीक्षा-परिनिष्क्रमण-तपकल्याणक-

दीक्षा तिथि इत्यादि-				दीक्षातपोवन-उद्यान	
क्रमांक	दीक्षा समय	दीक्षा नक्षत्र	दीक्षा पालकी का नाम	नगरों के नाम	वनों -उद्यानों के नाम
	३४	३५	३६	३७	३८
१	अपराह्न	उत्तराषाढ़ा	सुदर्शन	प्रयाग	सिद्धार्थ-वन
२	"	रोहिणी	सुप्रभा	अयोध्या	सहेतुक-सहसाम्र
३	"	ज्येष्ठा	सिद्धार्था	श्रावस्ति	" "
४	"	पुनर्वसु	हस्तचित्रा	अयोध्या	उग्रोद्यान-सहसाम्र
५	पूर्वाह्न	मघा	अभयकारी	"	सहेतुक-सहसाम्र
६	अपराह्न	चित्रा	निवृत्तकारी	कौशांबी	मनोहर-सहसाम्र
७	"	विशाखा	सुमनोगति	काशी	सहेतुक-सहसाम्र
८	"	अनुराधा	विमला	चन्द्रपुरी	सर्वर्दक-सहसाम्र
९	"	अनुराधा	सूर्यप्रभा	काकन्दी	पुष्पक-सहसाम्र
१०	"	पूर्वाषाढ़ा	शुक्रप्रभा	भद्रिलापुर	सहेतुक
११	पूर्वाह्न	श्रवण	विमलप्रभा	सिंहनादपुर	मनोहर
१२	अपराह्न	विशाखा	पुष्पभा	चम्पापुर	क्रीडोद्यान-सहसाम्र
१३	"	उत्तराभाद्रपद	देवदत्ता	कंपिला	सहेतुक-सहसाम्र
१४	"	रेवती	सागरदत्ता	अयोध्या	०-
१५	"	पुष्य	नागदत्ता	रत्नपुर	शालवन-
१६	"	भरणी	सिद्धार्था	हस्तिनागपुर	०-
१७	"	कृतिका	विजया	"	सहेतुक-
१८	"	रेवती	वैजयन्ति	"	"
१९	पूर्वाह्न	अश्विनी	जयन्ति	मिथिलापुर	श्वेतवन
२०	अपराह्न	श्रवण	अपराजिता	राजगृही	नीलवन-नीलगुफा
२१	"	अश्विनी	उत्तरकुरु	मिथिलापुर	चित्रवन-सहसाम्र
२२	पूर्वाह्न	चित्रा	देवकुरु	गिरनार	०-"
२३	"	विशाखा	विमला	वाराणसी	अश्ववन-मनोरमा
२४	अपराह्न	उत्तरा	चन्द्रप्रभा	कुंडलपुर	ज्ञात्रवन-नाथ

और वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर ये पाँच तीर्थंकर कुमार अवस्था में वैरागी

दीक्षा के वृक्ष		दीक्षा के समय-		
वृक्षों के नाम	वृक्षों की ऊँचाई (धनुष प्रमाण)	वैराग्य का निमित्त कारण	उपवास का नियम (उत्तरपु.हरिवंशपु.से)	कितने राजाओं ने दीक्षा ली थी?
३९	४०	४१	४२	४३
वट वृक्ष	६०००	नीलांजना की मृत्यु	६ मास का उपवास	चार हजार
सप्तच्छद	५४००	उल्कापात देखना	षष्ठमभक्त (बेला)	एक हजार
शाल वृक्ष	४८००	मेघपटल का नाश	बेला (दो दिन का)	एक हजार
"	४२००	गंधर्वनगर का नाश	"	"
प्रियंगु	३६००	पूर्वभव का स्मरण	तेला (तीन दिन का)	"
"	३०००	"	बेला (दो दिन का)	"
शिरीष	२४००	वन लक्ष्मी का नाश	"	"
नागतरु	१८००	बिजली का देखना	"	"
शालवृक्ष	१२००	उल्कापात देखना	"	"
पलाश	१०८०	हिमका नाश देखना	"	"
तिन्दुक	९६०	वनलक्ष्मी का नाश	"	"
पाटलतरु	८४०	पूर्वभव का स्मरण	एक उपवास	६७६ (६६०)
जम्बुवृक्ष	७२०	मेघपटल का नाश	बेला	एक हजार
पीपल	६००	उल्कापात देखना	तेला (बेला)	"
दीर्घपण	५४०	उल्कापात देखना	तेला (बेला)	"
नन्दीतरु	४८०	पूर्वभव का स्मरण	"	"
तिलक	४२०	"	"	"
आम्र	३६०	मेघपटल का नाश	बेला	"
अशोक	३००	बिजली का देखना	"	३०० (६०६)
चम्पक	२४०	पूर्वभव का स्मरण	तेला (बेला)	एक हजार
बकुल	१८०	-	बेला	"
मेघश्रृङ्ग	१२०	प्राणीवध की वार्ता	तेला (बेला)	"
धवलवृक्ष	१०८	जातिस्मरण होना	षष्टमभक्त (३)	३०० (६०६)
शालवृक्ष	३२ धनुष	"	तेला उ.बेला	अकेले (३००)

(श्रमण) हुए राज भी नहीं किया और विवाह भी नहीं किया और अन्य सोलह तीर्थंकर महामांडलिक

दान तीर्थ के प्रवर्तक दाताओं के द्वारा दिये गये दीक्षा के बाद का आहारादि-

क्रमांक	कितने दिनों में लिये थे ?	कौन सा आहार लिया था ?	आहार देने वाले दातृ महाशयों के नाम	पारणा किये हुये नगरों के नाम
	४४	४५	४६	४७
१	एक वर्ष के बाद	इक्षु रस	श्रेयांसराजा (हरि-शाम)	हस्तिनागपुर
२	चौथे दिन		ब्रह्मदत्त (सुवर्ण)	अयोध्या
३	तीन दिन के बाद		सुरेन्द्रदत्त	श्रावस्ति (श्रावन्ति)
४	" "		इन्द्रदत्त	अयोध्या (वनितापुर)
५	" "	श्री ऋषभ	पद्मदत्त	सोमन (विजयपुरी)
६	" "	देव के	सोमदत्त	वर्धमान (मंगलपुरी)
७	" "	सिवाय बाकी	मेन्द्रदत्त	सोमखंड (पटलीखंडपुरी)
८	" "	सभी ने गो	पुष्यमित्र (सोमदत्त राजा)	नलिनापुर (पद्मखंडपुर)
९	" "	क्षीर (गाय	पुनर्वसु (पुष्पक राजा)	शैतपुर (चिन्तहरपुर)
१०	" "	के दूध) से	नन्दन (पुनर्वसु)	अरिष्टपुर (सेयपुर)
११	" "	बना हुआ	सौन्दर (सुनन्दन राजा)	सिद्धार्थपुर अरिष्टपुर)
१२	" "	क्षीरान्न	जय (सुरेन्द्रनाथ राज)	महापुर (सिद्धार्थपुर)
१३	" "	(खीर)	बिशाख (जयकुमार)	नन्दनपुर (धान्यवटपुर)
१४	" "	अर्थात् दूध	धान्यसेन (विशाखभूती)	अयोध्या (धर्ममानपुर)
१५	" "	के नाना	धर्म मित्र (सुमित्र)	पटना (सौमनसपुर)
१६	" "	प्रकार के	सुमित्र (प्रिय मित्र)	मन्दरपुर (सौमनसपुर)
१७	" "	पक्वान्न की	अपराजित (वरदत्त राजा)	हस्तिनागपुर (मन्दिरपुर)
१८	" "	पारणा की	नन्दी (अपराजित)	चक्रपुर (गजपुर)
१९	चौथे दिन के बाद	थी।	नन्दिसेन (विषयदत्त)	मिथिला (चक्रहरपुर)
२०	तीन दिन के बाद		वृषभदत्त (दत्त)	राज्यगृही (मिथिलापुर)
२१	तीन दिन के बाद		दत्त (वरदत्त)	दीरपुर (संयोगपुर)
२२	तीन दिन के बाद		वरदत्त (चारुदत्त)	द्वारिका (विखरपुर)
२३	चार दिन के बाद		धान्यसेन (धनदत्त)	गुलमखेट (द्वारावती)
२४	तीन दिन के बाद		नन्दन (विश्वसेन)	कुंडलपुर

राजा भये राज्य छोड़कर वैराग्य (दीक्षा) लिया।

तीर्थंकरों के केवल ज्ञान-कल्याणक

तपादि काल का प्रमाण	केवल ज्ञान के पहले उपवास धारण का नियम	केवल ज्ञान		
		तिथि	समय	नक्षत्र
४८	४९	५०	५१	५२
एक लाख पूर्व	अष्टमभक्त (३)	फाल्गुण कृ.११	पूर्वाह्न	उत्तराषाढ
१ पूर्वाङ्ग कम १ लाख पूर्व	बेला (२)	पौष्य शु.११	अपराह्न	रोहिणी
४ " "	"	कार्तिक कृ.४	"	मृगशिर
८ " "	"	पौष्य शु. १४	"	पुनर्वसु
१२ " "	"	चैत्र शु. ११	"	मघा
१६ " "	"	चैत्र शु. ३०	"	चित्रा
२० " "	"	फाल्गुन कृ. ६	"	विशाखा
२४ " "	"	फाल्गुन कृ. ७	"	अनुराधा
२८ " "	"	कार्तिक शु. २	"	मूला
२५ हजार पूर्व	"	पौष्य कृ. १४	"	पूर्वाषाढ
२१ लाख वर्ष	"	माघ कृ.१५	पूर्वाह्न	श्रवण
५४ लाख वर्ष	"	माघ शु. २	अपराह्न	विशाखा
१५ लाख वर्ष	"	माघ शु.६	"	उत्तराषाढ
७५० हजार वर्ष	"	चैत्र कृ. १५	"	रेवती
२५० हजार वर्ष	तेला (उ) बेला (६)	पौष्य शु. ३०	"	पुष्य
२५ हजार वर्ष	षष्टोपवास (३)	पौष्य शु. ११	अपराह्न	भरणी
२३७५० वर्ष	षष्टोपवास (३)	चैत्र शु. ३	"	कृतिका
२१००० वर्ष	बेला (२)	कार्तिक श. १२	"	रेवती
५४९०० वर्ष	अष्टमभक्त (३)	मार्ग शीर्ष शु.११	"	अश्विनी
७५०० वर्ष	"	वैशाख कृ. ९	पूर्वाह्न	श्रवण
२५०० वर्ष	बेला (२)	मार्गशीर्ष शु.११	अपराह्न	अश्विनी
७०० वर्ष	अष्टमभक्त (३)	आश्विन शु. १	पूर्वाह्न	चित्रा
७० वर्ष	तेला (३)	चैत्र कृ.४	"	विशाखा
४२ वर्ष	बेला (२)	वैशाख शु.१०	अपराह्न	हस्ता (उत्तरा)

तीर्थंकरों के केवल ज्ञान-ज्ञान कल्याणक

क्रमांक	केवल ज्ञान के वन-उद्यानों के नाम	वृक्ष (अशोक वृक्ष)	समवशरण का विस्तार योजन प्रमाण	कोस प्रमाण	समवशरण में तीर्थंकर भगवान का आसन
	५३	५४	५५	५६	५७
१	शकटा वन (पुरिमतालपुर)	वट वृक्ष	१२	४८	समवशरण में सब ही तीर्थंकर भगवान पद्मासन से ही विराजमान होते हैं।
२	सहेतुक वन	सप्तपर्ण	११॥.	४६	
३	"	शाल्मली	११	४४	
४	उग्र वन	वैशाल	१०॥.	४२	
५	सहेतुक वन	प्रियंगु	१०	४०	
६	मनोहर वन	"	९॥.	३८	
७	सहेतुक वन	शिरीष	९	३६	
८	सवर्थि वन	नागवृक्ष	८॥.	३४	
९	पुष्पक वन	अक्ष (बहेडा)	८	३२	
१०	मनोहर वन	विल्व वृक्ष	७॥.	३०	
११	"	पलाश	७	२८	
१२	"	कदम्ब	६॥.	२६	
१३	सहेतुक वन	जंबु (पाटल)	६	२४	
१४	"	पीपल वृक्ष	५॥.	२२	
१५	शाल वन	सप्तच्छद	५	२०	
१६	सहसाम्र वन	नन्दी वृक्ष	४॥.	१८	
१७	सहेतुक वन	तिलक	४	१६	
१८	सहेतुक वन	आम्र वृक्ष	३॥.	१४	
१९	श्वेत वन	अशोक	३	१२	
२०	नील वन	चम्पक	२॥.	१०	
२१	चित्रक वन	बकुल	२	८	
२२	गिरनार	मेष श्रृंग	१॥.	६	
२३	अश्व वन (काशी)	देवदारु	१।.	५	
२४	मनोहर (ऋजु कूला नदी)	शाल वृक्ष	१	४	

समवशरण में रहने वाले सात प्रकार के मुनीश्वरों का संघ और उनकी संख्या-

सामान्य केवलियों की संख्या	पूर्वधारियों की संख्या	शिक्षकों की संख्या	विपुलमति म०ज्ञानियों की संख्या	विक्रिया ऋ० यों की संख्या	अवधि ज्ञानियों की संख्या
५८	५९	६०	६१	६२	६३
२००००	४७५०	४१५०	१२७०५	२०६००	९०००
२००००	३७५०	२१६०	१२४५०	२०४००	९४००
१५०००	२१५०	१२९३००	१२१५०	१९८००	९६००
१६०००	२४५००	२३००५०	१२६५०	१९०००	१८००
१३०००	२४००	२५४३५०	१०४००	१८४००	११०००
१२०००	२३००	२६९०००	१०३००	१६८००	१००००
११०००	२०३०	२४४९२०	९१००	१५३००	९०००
८०००	४०००	२१०४००	८०००	१०६००	२०००
७५००	१५००	१५५५००	७५००	१३०००	८४००
७०००	१४००	५९२००	७५००	१२०००	७२००
६५००	१३००	४८२००	६०००	११०००	६०००
६०००	१२००	३९२००	६०००	१००००	५४००
५५००	११००	३८५००	५५००	९०००	४८००
५०००	१०००	३९५००	५०००	८०००	४३००
४५००	९००	४०७००	४५००	७०००	३६००
४०००	८००	४१८००	४०००	६०००	३०००
३२००	७००	४३१५०	३३५०	५१००	२४००
२८००	६१०	३५८३५	२०५५	४३००	२८००
२२००	५५०	२९०००	१७५०	२९००	२२००
१८००	५००	२१०००	१५५०	२२००	१८००
१६००	४५०	१२६००	१२५०	१५००	१६००
१५००	४००	११८००	९००	११००	१५००
१०००	३५०	१०९००	७५०	१०००	१४००
७००	३००	९९००	५००	९००	१३००
१८५८००	३६९४०	२०००५५५	१५४९०५	२२५९००	१२७६००

			गणधर		गणनी या (आर्यिका)
क्रमांक	वादियों की संख्या	कुल संघ की (को० ५८से ६४) संख्या	मुख्य गणधरों के नाम	सब गणधरों की संख्या	मुख्य गणनियों के नाम
	६४	६५	६६	६७	६८
१	१२७५०	८४०००	वृषभ सेन	८४	ब्राह्मी
२	१२४००	१०००००	सिंह सेन	९०	आत्मगुप्ता (प्रकूब्जा)
३	१२०००	२०००००	चारु सेन (चारुदत्त)	१०५	धर्म श्री
४	१००००	३०००००	वज्रनाभि(वज्रचमर)	१०३	मेरुषेणा
५	१०४५०	३२००००	चमर (अमरवज्र)	११६	अनन्तमति
६	९६००	३३००००	वज्रचमर (चमर)	११०	रतिषेणा (मेरुसेना)
७	८६००	३०००००	बलदत्त (बली)	९५	मीनश्री
८	७०००	२५००००	दत्त (वैदर्भ)	९३	वरुणश्री
९	६६००	२०००००	विदर्भ (नाग)	८८	घोषवति
१०	५७००	१०००००	अनगार	८१	धारणाश्री (धारण)
११	५०००	८४०००	कुंथु	७७	धारण
१२	४२००	७२०००	सधर्म (धर्म)	६६	वरसेना (सेना)
१३	३६००	६८००	मन्दरार्य (मन्दिर)	५५	पद्मश्री
१४	३२००	६६०००	जयार्य (जय)	५०	सर्वश्री
१५	२८००	६४०००	अरिष्ट सेन	४३	सुव्रता
१६	२४००	६२०००	चक्रायुध	३६	हरिषेणा
१७	२०००	६००००	स्वयंभु	३५	भावश्री (भाविता)
१८	१६००	५००००	कुंभार्य (कुंभु)	३०	कूर्मश्री (पक्षिला)
१९	१४००	४००००	विशाख	२८	अमरसेना (बंधुसेना)
२०	१२००	३००००	मल्ली	१८	पुष्पदत्ता
२१	१०००	२००००	सुप्रभ (सोमक)	१७	भार्गवश्री (मंगला)
२२	८००	१८०००	वरदत्त	११	पक्षिणी
२३	६००	१६०००	स्वयंभु	१०	सुलोचना
२४	४००	१४०००	गौतम (इन्द्रभूति)	११	चन्दना
	११६३००	२८४८०००		१४५२	

गणनीय अर्जिकायों की संख्या	मुख्य श्रोताओं के नाम	श्रावकों की संख्या	श्राविकाओं की संख्या	यक्षों के नाम
६९	७०	७१	७२	७३
३५००००	भरत	३ लाख	५ लाख	गोमुख (वृषभ)
३२००००	सत्य भाव	"	"	महायज्ञ
३३००००	सत्य वीर्य	"	"	त्रिमुख
३३०६००	मित्र भाव	"	"	यज्ञेश्वर
३३००००	मित्र वीर्य	"	"	तुम्बुर (तुम्बक)
४२००००	धर्म वीर्य	"	"	कुसुम
३३००००	दान वीर्य	"	"	वरनन्दो (मातंग)
३८००००	मघव	"	"	विजय (शाम)
३८००००	युद्ध वीर्य	२ लाख	४ लाख	अजित
३८००००	श्री मन्दर	"	"	ब्रह्मेश्वर (ब्रह्म)
१३००००	त्रिपिष्ट	"	"	कुमार (ईश्वर)
१०६०००	द्विपिष्ट	"	"	षण्मुख (कुमार)
१०३०००	स्वयंभु	"	"	पाताल (चतुर्मुख)
१०८०००	पुरुषोत्तम	"	"	किन्नर (पाताल)
६२४००	पुरुषवर	"	"	किंपुरुष (किन्नर)
६०३००	पुंडरीक	"	"	गरुड
६०३५०	दत्त	१ लाख	३ लाख	गंधर्व
६००००	कुनाल	"	"	महेन्द्र (यज्ञेन्द्र)
५५०००	नारायण	"	"	कुबेर
५००००	सुभौम	"	"	वरुण
४५०००	अजितंजय	"	"	विद्युत्प्रभ (भृकुटी)
४००००	उग्रसेन	"	"	सर्वान्ह (गोमद)
३८०००	अजित	"	"	धरणेन्द्र
३६०००	श्रेणिक राजा	"	"	मातंग
५०५०६२५०		४८ लाख	९६ लाख	

क्रमांक	यक्षिणियों के नाम	आयु के अंत में योग निरोध या विहार कब बंद किया था?	विहार बन्द होने के बाद समवशरण की स्थिति कैसी रही है ?
	७४	७५	७६
१	चक्रेश्वरी	१४ दिन पहले	श्री तीर्थंकर केवली भगवान आयु के अंत समय जब विहार बंद करके योग निरोध करते हैं तब एक ही स्थान में यथायोग्य आसन लगाकर निश्चल रहते हैं। हलन-चलन रूप काययोग की क्रिया उपदेश रूप वचनयोग की क्रिया सब बन्द हो जाती है। उनका सभी पुण्य पूरा नाश होने से समवशरण की रचना नहीं रहती है। बारह प्रकार की सभा सब विघटित होकर सभा में के सब जीव हाथ जोड़कर रहते हैं प्रभु के पास रहने वाले सब प्रमुख देवता चले जाते हैं। श्री ऋषभ नाथ भगवान के योग निरोध करने के बाद चौदह दिनों तक भरत चक्रवर्ती निरन्तर श्री आदिनाथ भगवान की पूजा करते रहे। इस प्रकार आदि पुराण (महापुराण) पर्व १७४ में लिखा है।
२	रोहिणी (अजिता)	एक मास पहले	
३	प्रज्ञप्ति (नम्रे)	"	
४	वज्र श्रृंखला (दुरितारी)	"	
५	पुरुषदत्ता (संसारी)	"	
६	मनोवेगा (मोहनी)	"	
७	काली (मालिनी)	"	
८	ज्वाला (मालिनी)	"	
९	महाकाली (भृकुटी)	"	
१०	मानवी (चामुंडे)	"	
११	गौरी (गोमधकी)	"	
१२	गांधारी (विद्युत्माली)	"	
१३	वैरोटी (विद्या)	"	
१४	अनन्तमति (विजंभणी)	"	
१५	मानसी (परिभृते)	"	
१६	महामानसी (कन्दर्प)	"	
१७	जय (गांधारिणी)	"	
१८	विजया (काली)	"	
१९	अपराजिता (अनजान)	"	
२०	बहुरुपिणी (सुगंधिनी)	"	
२१	चामुंडी (कुसुम मालिनी)	"	
२२	कुष्मांडी	"	
२३	पद्मावती	"	
२४	सिद्धायनी	दो दिन पहले	

तीर्थंकरों के निर्वाण-मोक्ष का कल्याण-

मोक्ष प्राप्ति की तिथि आदि-			निर्वाण क्षेत्र-	
मोक्ष की तिथि	समय (हरि वंश पु.अ.६० से	नक्षत्र	नगर-पर्वतादिस्थान	निर्वाण क्षेत्र में का विशिष्ट स्थान (चूलिका)
७७	७८	७९	८०	८१
माघ कृ.१४	पूर्वाह	उत्तराषाढ़	कैलासपर्वत	-
चैत्र शु.५	"	रोहिणी	सम्मेदशिखरजी	सिद्धवरकूट
चैत्र शु.६	"	मृगशिर	"	धवलदत्तकूट
वैशाख शु.६	"	पुनर्वसु	"	आनन्दकूट
चैत्र शु. ११	"	मघा	"	अविचलकूट
फाल्गुन कृ.४	"	चित्रा	"	मोहनकूट
फाल्गुन कृ.७	"	अनुराधा	"	प्रभास कूट
फाल्गुन कृ.७	"	ज्येष्ठा	"	ललित कूट
भाद्रपदशु. ८	"	मूला	"	सुप्रभकूट
आश्विन शु.८	"	पूर्वाषाढ़	"	विद्युत्प्रभकूट (विद्युद्वरकूट)
श्रावण शु. ३०	"	धनिष्ठा	"	संकुल कूट (संबलकूट)
भाद्रपद शु. १४	अपराह	अश्विनी	मंदारगिरी (चम्पापुरी)	चम्पासालवन (मेनाहरवन)
आषाढ़ कृ.८	"	उत्तराषाढ़	सम्मेदशिखरजी	सुवीरकूट (सुवीरकुलकूट)
चैत्र कृ.१५	"	रेवती	"	स्वयंप्रभकूट (स्वयंभू)
ज्येष्ठ शु. ४	प्रभात	पुष्य	"	सुदत्तवरकूट (दत्तवर)
ज्येष्ठ कृ.१४	अपराह	भरणी	"	कुन्दप्रभ (प्रभास-शांतिप्रभ)
वैशाख शु. १	"	कृत्तिका	"	ज्ञानधरकूट
चैत्र कृ. १५	प्रभात	रेवती	"	नाटककूट
फाल्गुन शु.५	अपराह	भरणी	"	सम्बलकूट
फाल्गुन कृ.१२	"	श्रवण	"	निर्जरकूट
वैशाख कृ.१४	प्रभात	अश्विनी	"	मित्रधरकूट
आषाढ़ शु. ७	प्रदोष	चित्रा	गिरनार (ऊर्जयन्तगिर)	-
श्रावण शु. ७	"	विशाखा	सम्मेदशिखरजी	सुवर्णभद्रकूट
कार्तिक कृ.१५	प्रभात	स्वाति	पावापुरी	पद्मसरोवर

तीर्थंकरों के साथ-साथ कितने लोक कौन-कौन सी गति को प्राप्त किये हैं ?

क्रमांक	कौन-कौन से आसन से मोक्ष गये	सौधर्म स्वर्ग से लेकर ऊर्ध्व ग्रै० तक कितने गये ?	अनुत्तर विमान में कितने गये उनकी संख्या	कौन- कौन तीर्थंकरों के कितने कितने शिष्य (यति गण) कौन-कौन से समय में मोक्ष गये हैं इसका खुलासा	
				तीर्थंकरों का और मोक्ष का समय	संख्या
	८२	८३	८४	८५	८६
१	पद्मासन	३१००	२००००	श्री ऋषभनाथ भगवान से	६०१००
२	कायोत्सर्गासन	२९००	२००००	लेकर श्री शांतिनाथ तीर्थंकर	७०१००
३	"	१९००	२००००	तक के सब तीर्थंकरों के शिष्य	१७०१००
४	"	७९००	१२००	(यतिगण)तीर्थंकरों को केवल	२८०१००
५	"	६४००	१२०००	ज्ञान होने के पहले ही कौन	३०१६००
६	"	४०००	१२०००	कौन तीर्थंकरों के कितने-कितने	३१४०००
७	"	२४००	१२०००	शिष्यगण मोक्ष गये हैं उनकी	२८५६००
८	"	४०००	१२०००	संख्या को आगे कोष्टक	२३४०००
९	"	९४००	११०००	८६में देखिये।	१७९६००
१०	"	८४००	११०००		८०६००
११	"	७४००	११०००		६५६००
१२	पद्मासन	६४००	११०००		५४६००
१३	कायोत्सर्गासंन	५७००	११०००		५२३००
१७	कायोत्सर्गासन	५०००	१००००		५१०००
१५	"	४३००	१००००		४९७००
१६	"	३६००	१००००	केवलज्ञान के बाद एक महीना	४८४००
१७	"	३२००	१००००	तक कितने मोक्ष गये ?	४६८००
१८	"	२८००	१००००	"दो" "	३७२००
१९	"	२४००	८८००	"तीन" "	२८८००
२०	"	२०००	८८००	" छह" "	१९२००
२१	"	१६००	८८००	"एक वर्ष तक" "	९६००
२२	पद्मासन	१२००	८८००	"दो" "	८०००
२३	कायोत्सर्गासन	१०००	८०००	"तीन" "	६२००
२४	"	८००	८०००	" छह" "	४४००
		१०५८००	२७७८००		२४६४४००

तीर्थंकरों के साथ जो सिद्ध भये उनकी संख्या	प्रत्येक तीर्थकाल में अनुबन्ध केवली कितने-कितने हुए? संख्या	दूसरे मत से संख्या	इस हुँडावसर्पिणी काल दोष से दुखमासुखमा नामक चौथे काल में जो जिन धर्म का उच्छेद हुआ था वह कहा तक रहा था ? उसका काल प्रमाण
८७	८८		८९
१००००	८४	१००	श्री पुष्पदन्त (सुविधिनाथ) तीर्थंकर के समय से लेकर श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के समय तक सात तीर्थ प्रवर्तन काल में उच्छेद काल एक पल्य तक बढ़ता हुआ और घटता हुआ धर्म तीर्थ का विच्छेद रहा था। सो ही त्रिलोक सार में लिखा है- पल्लत्त रियादि चय पल्लंत चउत्थूण पाद परकालं। णहि सद्धम्मो सुविधीदु सतिअन्ते समंतरा ॥८१४॥ सुविधिनाथ के तीर्थकाल में पावपल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। शीतलनाथ के तीर्थकाल में आधा पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। श्रेयांसनाथ के तीर्थकाल में पौन पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। वासूपूज्य के तीर्थकाल में १ एक पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। विमलनाथ के तीर्थकाल में पौने पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। अनन्तनाथ के तीर्थकाल में आधा पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। धर्मनाथ के तीर्थकाल में पाव पल्य का धर्म का विच्छेद हुआ था। इस प्रकार विच्छेद काल क्रम से पाव पल्य से लेकर एक पल्य तक बढ़ता गया और फिर घटता हुआ पाव पल्य तक रहा। जिस समय धर्म का विच्छेद होता है उस समय मुनि, अर्जिका, श्रावक, श्राविका कोई भी नहीं रहते हैं। दीक्षा के सम्मुख होने वालों का अभाव होता रहता है। इसलिये धर्म रूपी सूर्य अस्तंगत रहता है।
१०००	८४	१००	
१०००	८४	१००	
१०००	८४	१००	
१०००	८४	१००	
३२४	८४	१००	
५००	८४	१००	
१००	८४	९०	
१०००	८४	९०	
१०००	८४	९०	
१०००	७२	९०	
६०१	४४	८४	
६००	४०	४०	
७००	३६	३६	
८०१	३२	३२	
९००	२८	२८	
१०००	२४	२४	
१०००	२०	२०	
५००	१६	१६	
१०००	१२	१२	
१०००	८	८	
५३६	४	४	
३६	३	३	
०	३	३	
	११८२	१३७०	

क्रमांक	तीर्थंकरों के परस्पर जन्म काल का अन्तराल काल प्रमाण-
१	ऋषभनाथ का जन्म सुषमा दुषमा नामक तीसरे काल के अंत में जब ८४ लाख पूर्व + ३ वर्ष ८॥ मास बाकी रहें तब हुआ।
२	अजितनाथ का जन्म ऋषभदेव का जन्म होने के बाद ५० लाख करोड़ सागरोपम + १२ लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
३	संभवनाथ का जन्म अजितनाथ का जन्म होने के बाद ३० लाख कोड़ाकोड़ी सागरोपम + १२ लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
४	अभिनन्दन का जन्म संभवनाथ का जन्म होने के बाद १० लाख करोड़ सागरोपम + १२ लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
५	सुमतिनाथ का जन्म अभिनन्दन का जन्म होने के बाद ९ लाख करोड़ सागरोपम + १० लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
६	पद्मप्रभनाथ का जन्म सुमतिनाथ का जन्म होने के बाद ९० हजार करोड़ सागरोपम + १० लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
७	सुपार्श्वनाथ का जन्म पद्मप्रभनाथ का जन्म होने के बाद ९ हजार करोड़ सागरोपम + १० लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
८	चन्द्रप्रभ का जन्म सुपार्श्वनाथ का जन्म होने के बाद ९०० करोड़ सागरोपम + १० लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
९	पुष्पदन्त का जन्म चन्द्रप्रभ का जन्म होने के बाद ९० करोड़ सागरोपम + ८ लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
१०	शीतलनाथ का जन्म पुष्पदन्त का जन्म होने के बाद ९ करोड़ सागरोपम + १ लाख पूर्व प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
११	श्रेयांसनाथ का जन्म शीतलनाथ का जन्म होने के बाद १ करोड़ सागरोपम + १ लाख पूर्व प्रमाण काल में से १०० सागर + १५०२६००० वर्ष घटाने पर जो बाकी रहा उतना काल प्रमाण बीज जाने पर हुआ।
१२	वासुपूज्य का जन्म श्रेयांसनाथ का जन्म होने के बाद ५४ सागरोपम + १२ लाख वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
१३	विमलनाथ का जन्म वासुपूज्य का जन्म होने के बाद ३० सागरोपम + १२ लाख वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।
१४	अनन्तनाथ का जन्म विमलनाथ का जन्म होने के बाद ९ सागरोपम + ३० लाख वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।

१५ धर्मनाथ का जन्म अनन्तनाथ का जन्म होने के बाद ४ सागरोपम + २० लाख वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।

१६ शान्तिनाथ का जन्म धर्मनाथ का जन्म होने के बाद ३ सागरोपम + ९ लाख वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।

१७ कुन्थुनाथ का जन्म शान्तिनाथ का जन्म होने के बाद आधा पल्य + ५ हजार वर्ष प्रमाण काल बीत जाने पर हुआ।

१८ अरहनाथ का जन्म कुन्थुनाथ का जन्म होने के बाद पाव पल्य में से ९९९९९८९००० वर्ष घटाने पर जो बाकी रहा उतना काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

१९ मल्लिनाथ का जन्म अरहनाथ का जन्म होने के बाद १००० करोड़ + २९००० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

२० मुनिसुव्रत का जन्म मल्लिनाथ का जन्म होने के बाद ५४२५००० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

२१ नमिनाथ का जन्म मुनिसुव्रत का जन्म होने के बाद ६२०००० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

२२ नेमिनाथ का जन्म नमिनाथ का जन्म होने के बाद ५०९००० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

२३ पार्श्वनाथ का जन्म नेमिनाथ का जन्म होने के बाद ८४६५० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ।

२४ महावीर का जन्म पार्श्वनाथ का जन्म होने के बाद २७८ वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर हुआ। अर्थात् दुषमा-सुषमा नामक चौथेकाल के अन्त समय में जब ७५ वर्ष ८ मास १५ दिन बाकी रहे तब महावीर स्वामी का जन्म हुआ।

क्रमांक	तीर्थंकरों के परस्पर मोक्ष काल का अंतराल काल प्रमाण-
१	ऋषभनाथ जिनदेव सुषमादुषमा नामक तीसरे काल के अन्त समय में जब ३ वर्ष ८ मास १५ दिन बाकी रहा तब मोक्ष गये।
२	अजितनाथ जिनदेव ऋषभनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ५० लाख करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
३	संभवनाथ जिनदेव अजितनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ३० लाख करोड सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गयें।
४	अभिनन्दन जिनदेव संभवनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद १० लाख करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
५	सुमतिनाथ जिनदेव अभिनन्दन तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९ लाख करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
६	पद्मप्रभनाथ जिनदेव सुमतिनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९० हजार करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
७	सुपार्श्वनाथ जिनदेव पद्मप्रभनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९ हजार करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
८	चन्द्रप्रभ जिनदेव सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९०० करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
९	पुष्पदन्त जिनदेव चन्द्रप्रभ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९० करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
१०	शीतलनाथ जिनदेव पुष्पदन्त तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९ करोड़ सागर काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
११	श्रेयांसनाथ जिनदेव शीतलनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ३३७३९०० सागरोपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
१२	वासुपूज्य जिनदेव श्रेयांसनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ५४ लाख सागरोपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
१३	विमलनाथ जिनदेव वासुपूज्य तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ३० लाख सागरोपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
१४	अनन्तनाथ जिनदेव विमलनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ९ लाख सागरोपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।
१५	धर्मनाथ जिनदेव अनन्तनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ४ लाख सागरोपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

१६ शान्तिनाथ जिनदेव धर्मनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ३ तीन लाख सागरोपम में से पौन पल्य घटाने पर जो बाकी रहेगा उतना काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

१७ कुन्थुनाथ जिनदेव शान्तिनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद आधा पल्योपम काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

१८ अरहनाथ जिनदेव कुन्थुनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद पाव पल्य में से एक हजार करोड़ वर्ष घटाने पर जो बाकी रहा उतना काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

१९ मल्लिनाथ जिनदेव अरहनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद एक हजार करोड़ वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

२० मुनिसुव्रत जिनदेव मल्लिनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ५४ लाख वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

२१ नमिनाथ जिनदेव मुनिसुव्रत तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ६ लाख वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

२२ नेमिनाथ जिनदेव नमिनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ५ लाख वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

२३ पार्श्वनाथ जिनदेव नेमिनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद ८३७५० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

२४ महावीर जिनदेव पार्श्वनाथ तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद २५० वर्ष काल प्रमाण बीत जाने पर मोक्ष गये।

अर्थात्-दुषमासुषमा नामक चौथे काल के अन्त समय में जब ३ वर्ष ८ मास १५ दिन बाकी रहे तब महावीर तीर्थंकर भगवान मोक्ष गये।

क्रमांक	तीर्थंकरों का तीर्थ प्रवर्तन काल (मोक्षमार्ग प्रवर्त्तन काल) प्रमाण-
१	ऋषभनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ५० लाख करोड़ सागरोपम + १ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
२	अजितनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ३० लाख करोड़ सागरोपम + ३ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
३	संभवनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल १० लाख करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
४	अभिनन्दननाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९ लाख करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
५	सुमतिनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९० हजार करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
६	पद्मप्रभ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९ हजार करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
७	सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९०० करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
८	चन्द्रप्रभ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९० करोड़ सागरोपम + ४ पूर्वाङ्ग प्रमाण काल तक रहा।
९	पुष्पदन्त तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल २८ पूर्वाङ्ग + पल्यका चौथा भाग से हीन (कम) और ९ करोड़ सागरोपम से अधिक अर्थात् ८९९९९९९ सागर और ९९९९९९९९९९९९९९ ¾ पल्य में से २८ पूर्वाङ्ग + एक लाख पूर्व घटाने पर जो बाकी रहेगा उतना काल प्रमाण समझना चाहिये।
१०	शीतलनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल आधा पल्योपम और १०० सागर कम एक करोड़ सागरोपम प्रमाण काल से अतिरिक्त समझना चाहिये। अर्थात् ९९९९८९९ सागर और ९९९९९९९९९९९९९९ ¾ पल्य इससे अतिरिक्त काल का प्रमाण ६६२६००० वर्ष कम २५००० पूर्व है ऐसा समझना चाहिये।
११	श्रेयांसनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ५४ सागरोपम + २१ लाख वर्षों में से पल्य कम इतना काल प्रमाण समझना चाहिये।
१२	वासुपूज्य तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ३० सागरोपम + ५४ लाख वर्षों में से एक पल्य कम इतना काल प्रमाण समझना चाहिये।

१३ विमलनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ९ सागरोपम + १५ लाख वर्षों में से पल्य कम इतना काल प्रमाण समझना चाहिये।

१४ अनन्तनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ४ सागरोपम + ७५०००० वर्षों में से आधा पल्य कम इतना काल प्रमाण समझना चाहिये।

१५ धर्मनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ३ सागरोपम + २५०००० वर्षों में से ¼ पाव पल्य कम इतना काल प्रमाण समझना चाहिये।

१६ शान्तिनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल आधापल्य + १२५० वर्ष प्रमाण काल समझना चाहिये।

१७ कुन्थुनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल पाव पल्य में से ९९९९९९७२५० वर्ष घटाने पर जो बाकी रहेगा उतना काल समझना।

१८ अरहनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल एक हजार करोड़ वर्षों में से ३३९०० वर्ष कम अर्थात् ९९९९९६६१००, वर्ष काल समझना।

१९ मल्लिनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ५४४७४०० वर्ष काल प्रमाग समझना चाहिये।

२० मुनिसुव्रत तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ६०५००० वर्ष काल प्रमाण समझना चाहिये।

२१ नमिनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ५०१८०० वर्ष काल प्रमाण समझना चाहिये।

२२ नेमिनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल ८४३२० वर्ष काल प्रमाण समझना चाहिये।

२३ पार्श्वनाथ तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल २७८ वर्ष काल प्रमाण समझना चाहिये।

२४ महावीर तीर्थंकर का तीर्थ प्रवर्तन काल २१०४२ वर्ष काल प्रमाण समझना अर्थात् पंचम काल के अंत समय में जब ३ वर्ष ८ मास और १५ दिन बाकी रहेगा, तब तक महावीर भगवान का तीर्थ प्रवर्तन काल रहेगा।

६३ शलाका पुरुष और नारद, रुद्र, कामदेव सम्बन्धी युगपत् अस्तित्व काल सूचक की रचना-

कोठा	२४ तीर्थंकर	१२ चक्रवर्ती	९ बलभद्र	९ नारायण	९प्रतिनारायण	९ नारद	११ रुद्र	२४ कामदेव
१	१ ऋषभनाथ	१ भरत	*	*	*	*	१ भीम	१ बाहुबलि
२	२ अजितनाथ	२ सगर	*	*	*	*	२ बलि	२ प्रजापति
३	३ संभवनाथ	*	*	*	*	*	*	३ श्रीधर
४	४ अभिनन्द ।	*	*	*	*	*	*	४ दर्शनभद्र
५	५ सुमतिनाथ	*	*	*	*	*	*	५ प्रसेनचन्द्र
६	६ पद्मप्रभनाथ	*	*	*	*	*	*	६ चन्द्रवर्ण
७	७ सुपार्श्वनाथ	*	*	*	*	*	*	७ अग्निमुक्त
८	८ चन्द्रप्रभ	*	*	*	*	*	*	८ सनत्कुमार
९	९ पुष्पदन्त	*	*	*	*	*	३ शंभु	९ वत्सराज
१०	१० शीतलनाथ	*	*	*	*	*	४विश्वानल	१० कनकप्रभ
११	११ श्रेयांसनाथ	*	१ विजय	१ त्रिपिष्ट	१अश्वग्रीव	१ भीम	५सुप्रतिष्ठ	११ मेघप्रभ
१२	१२ वासुपूज्य	*	२ अचल	२ द्विपिष्ट	२ तारक	२ महाभीम	६ अचल	*
१३	१३ विमलनाथ	*	३ सुधर्म	३ स्वयंभू	३ मेरुक	३ रौद्र(इन्द्र)	७पुंडरीक	*
१४	१४ अनन्तनाथ	*	४ सुप्रभ	४ पुरुषोत्तम	४ निशुंभ	४महारुद्र	८अजितंधर	*
१५	१५ धर्मनाथ	*	५ सुदर्शन	५ पुरुषसिंह	५ मधुकैटभ	५ काल	९जितनाभि	*
१६	X	३ मघवा	*	*	*	*	*	*
१७	X	४ सनत्कुमार	*	*	*	*	*	*
१८	१६ शान्तिनाथ	५ शान्तिनाथ	*	*	*	*	१० पीठ	१२ शांतिनाथ
१९	१७ कुन्थुनाथ	६ कुन्थुनाथ	*	*	*	*	*	१३ कुन्थनाथ
२०	१८ अरहनाथ	७ अरहनाथ	*	*	*	*	*	१४ अरहनाथ
२१	X	८ सुभौम	*	*	*	*	*	*
२२	X	*	६ नन्दी	६ पुंडरीक	६ प्रल्हाद	६ महाकाल	*	१५ विजयराज
२३	१९ मल्लिनाथ	*	*	*	*	*	*	१६ श्रीचन्द्र
२४	X	*	७ नन्दीमित्र	७ दत्त	७ बलि	७दुर्मुख	*	१७ नलराज
२५	X	९ महापद्म	*	*	*	*	*	*
२६	२० मुनिसुव्रत	*	*	*	*	*	*	*
२७	X	१० हरिषेण	*	*	*	*	*	*
२८	X	*	८ रामचन्द्र	८ लक्ष्मण	८ रावण	८ नरमुख	*	१८ हनुमंत

२९	२१ नमिनाथ	*	*	*	*	*	*	१९ बलिराज
३०	X	११ जयसेन	*	*	*	*	*	*
३१	२२ नेमिनाथ	*	बलराम	९ कृष्णा	९ जरासंघ	९ अधोमुख	*	२० वसुदेव
३२	X	१२ ब्रह्मदत्त	*	*	*	*	*	२१ प्रद्युम्न
३३	२३ पार्श्वनाथ	*	*	*		*	११ महादेव	२२ नागकुमार
३४	२४ महावीर	*	*	*	*	*	*	२३ जीवंधर
३५	X	*	*	*	*	*	*	२४ जम्बूस्वामी

सूचना- ऊपर की सारिणी में जो तीर्थंकरों के नामों के आगे चक्रवर्ती आदिकों के नाम लिखे हैं वे तीर्थंकरों के समय में हो गये हैं- ऐसा समझना चाहिए। और तीर्थंकरों के नाम कोष्ठक में जब X इस प्रकार का चिह्न रहे और उसके आगे जिन चक्रवर्ती आदिकों के नाम लिखे हो तो वे सब पहले और बाद के होने वाले तीर्थंकरों के अन्तराल काल में ही हुये हैं- ऐसा समझना चाहिये। तथा जिस कोष्ठक में जहाँ-जहाँ * इस प्रकार का चिह्न हो वहाँ-वहाँ उनका अभाव समझना चाहिये।

भरतचक्रवर्ती के १६ स्वप्न दर्शन और उन स्वप्नों का फलस्वरूप

१. तेईस सिंहों को देखा।
तेईस तीर्थकरों के समय में खोटे मुनि न रहेंगे।

२. एक सिंह के पीछे मृग समूह।
महावीर स्वामी के पश्चात् मुनि परीषह न सहेंगे भ्रष्ट होंगे।

३. घोड़े पर हाथी चढ़ रहा है।
साधु तप से डरेंगे और असमर्थ होंगे।

४. हंस को कौवे सता रहे हैं।
उच्च कुल वाले शुभाचरण से भ्रष्ट होकर खोटा आचरण करेंगे।

५. दो बकरे सूखे पत्ते खा रहे हैं।
क्षत्रियों का (राज वंश) नाश होगा
नीच कुल वाले राज्य करेंगे।

६. हाथी पर बन्दर बैठा है।
पंचम काल में भोले जीव मुनि धर्म
छोड़ेंगे पापी जीव धर्मात्माओं का
अपमान करेंगे।

७. भूत प्रेत नाच रहे हैं।
अज्ञानी जीव भूतादि कुदेवों की पूजा
जिनदेव के समान करेंगे।

८. तालाब मध्य में खाली है और
किनारों पर जल भरा हुआ है।
उत्तम तीर्थों में धर्म का अभाव होगा।
हीन स्थान में धर्म रहेगा।

९. रत्नराशि धूल में मिली हुई है।
पंचम काल में शुक्लध्यानी नहीं होंगे
धर्म ध्यानी कई एक रहेंगे।

१०. कुत्ता पूजन का द्रव्य खा रहा है।
पंचम काल में कुपात्र भी पात्र की
तरह आदर पावेंगे।

११. एक तरुण बैल को देखा।
पंचम काल के जीव तरुण अवस्था में
धर्म साधन करेंगे। परन्तु वृद्धावस्था में
अरुचि करेंगे।

१२. शाखा सहित चन्द्रमा को देखा।
पंचम काल में अवधि ज्ञान व मनः
पर्यय ज्ञान के धारी मुनि नहीं होंगे।

१३. युगल बैल दहाड़ रहे हैं।
पंचम काल में मुनि संघ सहित रहेंगे, एकाकी नहीं रहेंगे।

१४. सूर्य मेघों से घिरा हुआ है।
पंचम काल में केवलज्ञान नहीं होगा।

१५. पत्ती रहित सूखे वृक्ष को देखा।
पंचमकाल के स्त्री-पुरुष शीलव्रत धारण करके भी कुशील सेवन करेंगे।

१६. सूखे जीर्ण पत्ते।
पंचम काल में अन्न आदि औषधियाँ नीरस होंगी।

सम्राट चन्द्र गुप्त के १६ स्वप्न दर्शन और उन स्वप्नों का फल-स्वरूप

१. सूर्य मंडल अस्त होते हुये देखा।
पंचम काल में अंग पूर्व के धारी मुनि कोई नहीं रहेंगे।

२. कल्प वृक्ष की शाखा टूटी हुई देखी।
अभी से कोई क्षत्रिय राजा जिन दीक्षा नहीं धारण करेंगे।

३. सीमा उल्लघंन किये हुये समुद्र।
राजा लोग अन्यायी होंगे, उनको परधन हरण की इच्छा होगी।

४. बारह फणों का सर्प देखा।
बारह वर्षों तक अकाल (दुष्काल) पड़ेगा।

५. देव विमान वापिस लौटा जा रहा है।
पंचम काल में यहाँ देव नहीं आवेंगे। चारण मुनि और विद्याधर नीचे नहीं आवेंगे।

६. ऊँट पर राजकुमार बैठा है।
राजा लोग दया धर्म नहीं पालेंगे, हिंसा करेंगे।

८. महारथ को गोवत्स जुड़े हैं।
युवावस्था ही में कदाचित् कोई दीक्षा धारण करेंगे, वृद्धावस्था में दीक्षा नहीं पालेंगे।

७. दो काले हाथी लड़ रहे हैं।
समय पर पानी नहीं बरसेगा व निर्ग्रंथ मुनि सग्रंथ होंगे।

९. नग्न स्त्रियाँ नाच रही हैं।
दिगम्बर नग्न मुनि होवेंगे परंतु वे कपटी और पाखंडी होवेंगे। कुदोषों की विशेष पूजा होती रहेगी।

१०. सुवर्ण पात्र में कुत्ता खा रहा है।
उत्तम कुल वालों में से अब लक्ष्मी पाखंडी और मध्यम कुल वाले लोगों में चली जायेंगी।

११. जुगनू चमकते देखा।
जैन धर्म का विस्तार अब बहुत थोड़ा रहेगा और अन्य धर्म का विस्तार ज्यादा होगा।

१२. सूखा हुआ सरोवर में दक्षिण दिशि थोड़ा-सा जल दिखा।
जिन-जिन स्थानों में पंच कल्याणक हुये हैं उन-उन स्थानों में धर्म की हानि होगी। अब से जिनधर्म रहे तो उसी दक्षिण दिशा में रहेगा।

9411037554 –
9358625799 –

१३. रज में कमल खिला हुआ देखा।
ब्राह्मण और क्षत्रिय ये अन्य धर्म से चलेंगे। वैश्य लोग जैन धर्म पालेंगे व धनवान् होंगे।

१४. छिद्र सहित चन्द्रमा देखा।
जिन शासन में अनेक भेद-प्रभेद होवेंगे।

१५. हाथी पर बन्दर बैठा हुआ देखा।
क्षत्रिय लोग सेवक होंगे, नीच लोग राज्य करेंगे।

१६. रत्न राशि रज में देखी।
मुनियों में अनेक फूट होगी।
आपस में स्नेह भाव नहीं रहेगा।